04 - मिलावट यानि धीमा जहर

05 - अबकी बार खत्म हुआ मोदी का एकाधिकार

A Daily News Magazine

इंदौर

सोमवार, 10 जून, 2024

06- नगर पालिका ने कलश यात्रा निकालकर दिया जल संरक्षण का संदेश

07- विलक्षण जनादेश : कहीं खुशी कहीं गम!

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 233, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

तीर कमान बारूद ओ बंदूक ने
जब से साधी है चके पर सवारी
कल पुर्जों में कस गया आदमी. मशीन
आदमी से आदमी का रकबा छीन लेती है.
सान चढ़ाती है –
आदमी को औजार बना देती है
आदमी को काटता रहता है आदमी
अपने भोथरा होने तक .
एक एक आदमी , एक एक पेड़ का कटना
समूचा जंगल आदमी से कट जाता है .....
मशीनें नहीं थमती –
बंदूकों में बारूद नहीं सिराता.
आदमी सिरा जाता है.

– नवल शर्मा

प्रसंगवश

चंद्रशेखर आजाद की जीत नए दलित नेता के उभार का संकेत है?

कृष्ण मुरारी

लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजों ने समाजवादी पार्टी (सपा) जैसी राजनीतिक पार्टियों में नई जान फूंक दी है, जबकि बहुजन समाज पार्टी (बसपा) जैसी अन्य पार्टियों को मुश्किलों में डाल दिया है। उत्तर प्रदेश ने इस चुनाव में कई चौंकाने वाले नतीजे दिए हैं, लेकिन चंद्रशेखर आज़ाद के उभरने को सिर्फ एक इत्तेफाक कहना गलत होगा। भीम आर्मी के प्रमुख और आज़ाद समाज पार्टी के सह-संस्थापक की नगीना लोकसभा क्षेत्र से जीत, जो कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वाराणसी में जीत के लगभग बराबर अंतर से है, दलित मतदाताओं की पसंद में बदलाव का संकेत देती है कि उनका भावी नेता कौन होगा। दशकों तक मायावती उस स्थान पर काबिज़ रहीं, लेकिन विधानसभा और लोकसभा दोनों चुनावों में उनकी पार्टी का वोट शेयर कम होता गया।

उनका कुर्सी पर बैठकर काम करने का तरीका चंद्रशेखर से बिल्कुल अलग है, जिन्हें सड़क पर लड़ने वाला माना जाता है, यही वह गुण है जिसने उन्हें युवाओं के बीच लोकप्रिय बनाया है। हालांकि, आज़ाद ने अपने भाषणों या मीडिया इंटरव्यू के दौरान कभी भी मायावती पर निशाना नहीं साधा है, बल्कि डॉ. बीआर आंबेडकर, कांशीराम, संविधान और दलित समुदाय के लोगों के अधिकारों और सम्मान पर ध्यान केंद्रित किया। गौरतलब है कि चंद्रशेखर को मायावती के लिए गंभीर चुनौती नहीं समझा गया।

आज़ाद ने नगीना लोकसभा सीट पर 1.5 लाख से ज़्यादा वोटों से जीत दर्ज की। उनका वोट शेयर 51.18 प्रतिशत रहा, जबकि बीजेपी के ओम कुमार को 36 प्रतिशत वोट मिले। बसपा के उम्मीदवार सुरेंद्र पाल सिंह सिर्फ 1.33 प्रतिशत वोट पाकर चौथे स्थान पर रहे और उनकी ज़मानत भी जब्त हो गई। लेकिन आज़ाद ने सिर्फ दलित वोटरों पर मायावती के गढ़ को ही नहीं तोड़ा बल्कि समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव का पीडीए- पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक- फॉर्मूला, जो यूपी की लगभग आधी लोकसभा सीटों पर सफल रहा, को भी नगीना में विफल साबित किया। आज़ाद ने दलित और मुस्लिम वोटरों को लामबंद किया, जिसके कारण समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार मनोज कुमार को सिर्फ 10.2 प्रतिशत वोट ही मिले। नगीना निर्वाचन क्षेत्र में 20 प्रतिशत दलित हैं, जिनमें बड़ी संख्या में जाटव शामिल हैं, जिन्हें मायावती का मुख्य वोट बैंक माना जाता है। निर्वाचन क्षेत्र की मुस्लिम आबादी लगभग 40 प्रतिशत है।

आज़ाद इंडिया ब्लॉक का हिस्सा नहीं थे, अखिलेश यादव के साथ गठबंधन की बातचीत विफल हो गई थी। इस चुनाव में वे अपनी पार्टी के इकलौते उम्मीदवार भी थे। इसके अलावा, आज़ाद को कई बार जेल भी जाना पड़ा, जिसमें हालिया वाकिया सीएए विरोधी प्रदर्शनों में भाग लेने के कारण भी शामिल है। इन सबके बीच, उनकी जीत मायावती के बाद समाज के हाशिए पर पड़े तबके के बीच एक नए नेता के उभरने का संकेत है।

पहले आज़ाद को उनके सरनेम 'रावण' से जाना जाता था, लेकिन 2019 के चुनावों से पहले उन्होंने इसे यह कहते हुए छोड़ दिया कि वे नहीं चाहते कि चुनाव राम और रावण समर्थकों के बीच ध्रुवीकृत हो। आज़ाद ने 2014 में भीम आर्मी की स्थापना की और उनका संगठन पश्चिमी यूपी में हाशिए पर पड़े बच्चों के लिए कई स्कूल चलाता है। 2016 में दलितों ने उनके गांव घड़कौली के प्रवेश द्वार पर एक बोर्ड लगाया, जिसमें लिखा था: 'द ग्रेट चमार, डॉ भीमराव आंबेडकर गांव।'

नगीना में आज़ाद की जीत इसलिए भी खास है क्योंकि 2009 तक यह बिजनौर लोकसभा सीट का हिस्सा थी, जहां से मायावती ने चुनाव जीता और 1989 में लोकसभा में पहुंचीं। दिलचस्प बात यह है कि परिसीमन के बाद जब 2009 में नगीना को बिजनौर से अलग किया गया तो हर चुनाव में लोगों ने अलग-अलग पार्टियों को चुना। लेकिन मायावती ने खुद को आम लोगों से दूर करके दलित समुदाय को एक नए चेहरे की ओर मुड़ने का मौका दिया। आज़ाद ने न सिर्फ इसका फायदा उठाया बल्कि कई सालों तक ज़मीनी स्तर पर मेहनत भी की। उन्होंने ज़मीनी स्तर पर दलितों के लिए लड़ाई लड़ी और पिछले एक साल से नगीना में ही हैं। अब वे मायावती के लिए नए चुनौती हैं।

सहारनपुर निवासी-37 वर्षीय आज़ाद ने नगीना को न सिर्फ अपनी कर्मभूमि बनाया बल्कि दलितों के बीच बेहद सम्मानित मायावती के राजनीतिक गुरु कांशीराम को अपनी पार्टी 'आज़ाद समाज पार्टी' कांशीराम के नाम से जोड़कर एक नई तरह की प्रतीकात्मक राजनीति भी की। वे 2017 में तब चर्चा में आए जब सहारनपुर में कथित तौर पर जाति आधारित हिंसा भड़काने के लिए उन पर रासुका के तहत आरोप लगाए गए, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें एक साल की जेल हुई। अपनी रिहाई के बाद वे दलितों के खिलाफ हिंसा के खिलाफ मुखर रहे और कई प्रदर्शनों में भाग लिया, जिसमें सीएए विरोधी प्रदर्शन और दिल्ली में रविदास मंदिर के विध्वंस के खिलाफ विरोध प्रदर्शन शामिल थे। पिछले साल जून में यूपी के देवबंद में भी उन पर गोली चलाई गई थी। इस साल, केंद्र ने उन्हें 'वाई प्लस' सुरक्षा प्रदान की।

इन आयोजनों के ज़रिए उनकी लोकप्रियता और उनके चाहने वालों की संख्या में इज़ाफा हुआ, खासतौर पर युवाओं के बीच, जिन्होंने उनके राजनीतिक उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। दलितों में मायावती के खिलाफ गुस्सा था क्योंकि वे उनके मुद्दों को उस तरह नहीं उठा रही थीं जिस तरह से आज़ाद उठा रहे थे।

यह चुनाव आज़ाद और उनकी पार्टी के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि 2022 के विधानसभा चुनाव में वे गोरखपुर से योगी आदित्यनाथ के खिलाफ हार गए थे, उन्हें सिर्फ 4,501 वोट मिले थे और उनकी ज़मानत भी जब्त हो गई थी, लेकिन इस बार आज़ाद ने ज़मीन पर जो समीकरण बनाए हैं, वे उनकी राजनीतिक सूझबूझ को भी दर्शाते हैं।आज़ाद ने दलितों और मुसलमानों को मिलाकर एक ऐसा समीकरण बनाया, जिसका जवाब न तो भाजपा के पास था और न ही सपा के पास। हालांकि, समाजवादी पार्टी को यूपी में मुसलमानों का एकमत समर्थन हासिल था, लेकिन नगीना में मुसलमानों ने आज़ाद को पसंद किया।

आज़ाद मुखर राजनीति करते हैं और अपने तेवर से जनता के बीच अपनी प्रभावी छाप छोड़ते हैं। हालांकि, उनका प्रभाव पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ खास इलाकों तक ही सीमित रहा है, जिससे उनका आधार नहीं बढ़ पाया। मायावती ने उनकी ज्यादा परवाह नहीं की। इस चुनाव नतीजे से मायावती के खेमे में बेचैनी ज़रूर बढ़ेगी। उत्तर प्रदेश की दलित राजनीति में एक खालीपन है। आज़ाद की जीत को उस खालीपन को भरने की दिशा में एक कदम के तौर पर देखा जा सकता है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

मोदी ने ली 'तीसरी शपथ'

मोदी-मोदी के नारों के बीच फिर बने प्रधानमंत्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। नरेंद्र मोदी ने रविवार शाम को लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। वे नेहरू के बाद ऐसा करने वाले दूसरे पीएम बन गए हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें यहां राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इसके साथ ही मोदी ने लगातार तीन बार प्रधानमंत्री बनने के देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली।प्रधानमंत्री मोदी के साथ 72 मंत्रियों ने शपथ ली। इनमें से 30 कैबिनेट मंत्री, पांच स्वतंत्र प्रभार और 36 राज्य मंत्री शामिल हैं।

नई दिल्ली (एजेंसी)। नरेंद्र मोदी ने रविवार शाम को लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। वे नेहरू के बाद ऐसा करने वाले दूसरे पीएम बन गए हैं। मोदी ने ईश्वर के नाम की शपथ ली। इसके बाद राजनाथ, शाह, गडकरी, नड्डा और शिवराज सिंह चौहान ने शपथ ली। पीएम मोदी नेहरू के बाद ऐसा करने वाले दूसरे पीएम बन गए हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें यहां राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इसके साथ ही मोदी ने लगातार तीन बार प्रधानमंत्री बनने के देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली। मोदी

- राजनाथ, अमित शाह, गडकरी व ज्योतिरादित्य समेत 30 कैबिनेट मिनिस्टर
- नड्डा-शिवराज को भी जगह,मेघवाल समेत 5 स्वतंत्र प्रभार के राज्यमंत्री

2014 में लोकसभा चुनाव में भाजपा की जीत के बाद पहली बार देश के प्रधानमंत्री बने थे। इसके बाद 17वीं लोकसभा के चुनाव में भारी बहुमत से जीत के बाद वह लगातार दूसरी बार प्रधानमंत्री बने। नेहरू 1947 से स्वतंत्रता के बाद से सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले भारतीय प्रधानमंत्री हैं। उनकी मृत्यु 27 मई 1964 को हुई थी और वह उस समय भी देश के प्रधानमंत्री थे। साल 1952 में हुए पहले आम चुनाव में जीत के बाद वह पहली बार प्रधानमंत्री निर्वाचित हुए थे। इसके बाद 1957 और 1962 के आम चुनावों में भी कांग्रेस ने जीत दर्ज की और नेहरू फिर देश के प्रधानमंत्री बने। साल 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा पूर्ण बहुमत हासिल नहीं कर पाई है।

मोदी-मोदी के नारों से गूंजा समारोह स्थल, झुककर किया नमस्ते

शपथ ग्रहण कार्यक्रम में नरेंद्र मोदी सफेद कुर्ता पायजामा और नीले रंग की जैकेट पहनकर राष्ट्रपति भवन पहुंचे। समारोह में पहुंचकर उन्होंने झुककर सभी सांसदों और मेहमानों को नमस्ते किया। प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ लेने के लिए जैसे ही नरेंद्र मोदी उठे, मोदी-मोदी के नारों से पूरा समारोह स्थल गूंज उठा। शपथ लेने के बाद पीएम मोदी ने हस्ताक्षर किए और राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को धन्यवाद दिया। इसके बाद पीएम मोदी अपनी सीट पर जाकर बैठ गए। उनके साथ-साथ एनडीए सरकार की नई कैबिनेट में शामिल होने वाले मंत्रियों को भी शपथ दिलाई गई। कैबिनेट में शामिल होने वाले नए मंत्रियों में मध्य प्रदेश के पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान, हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर और पंजाब से आने वाले रवनीत सिंह बिट्टू का नाम शामिल है। रवनीत सिंह बिट्टू को लोकसभा चुनाव में हारने के बावजूद मंत्री बनाया गया है।

मंत्री का नाम	रैंक
राजनाथ सिंह	कैबिनेट मंत्री
अमित शाह	कैबिनेट मंत्री
नितिन गडकरी	कैबिनेट मंत्री
जेपी नड्डा	कैबिनेट मंत्री
शिवराज सिंह चौहान	कैबिनेट मंत्री
निर्मला सीतारमण	कैबिनेट मंत्री
सुब्रह्मण्यम जयशंकर	कैबिनेट मंत्री
मनोहर लाल	कैबिनेट मंत्री
हरदनहल्ली देवगौड़ा कुमारस्वामी	कैबिनेट मंत्री
पीयूष गोयल	कैबिनेट मंत्री
धर्मेंद्र प्रधान	कैबिनेट मंत्री
जीतन राम मांझी	कैबिनेट मंत्री
राजीव रंजन सिंह (ललन सिंह)	कैबिनेट मंत्री
सर्बानंद सोनोवाल	कैबिनेट मंत्री
डॉ वीरेंद्र कुमार	कैबिनेट मंत्री
राममोहन नायडू	कैबिनेट मंत्री
प्रल्हाद जोशी	कैबिनेट मंत्री
जुएल ओरांव	कैबिनेट मंत्री
गिरिराज सिंह	कैबिनेट मंत्री
अश्वनी वैष्णव	कैबिनेट मंत्री
ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया	कैबिनेट मंत्री
भूपेंद्र यादव	कैबिनेट मंत्री
गजेन्द्र सिंह शेखावत	कैबिनेट मंत्री
अन्नपूर्णा देवी	कैबिनेट
किरेन रिजिजू	कैबिनेट मंत्री
हरदीप सिंह पुरी	कैबिनेट मंत्री
डॉ मनसुख मंडाविया	कैबिनेट मंत्री
जी किशन रेड्डी	कैबिनेट मंत्री
चिराग पासवान	कैबिनेट मंत्री
सीआर पाटील	कैबिनेट मंत्री
राव इंद्रजीत सिंह	राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार
जितेंद्र सिंह	राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार
अर्जुन राम मेघवाल	राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार
प्रतापराव जाधव	राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार
जयंत चौधरी	राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार
जितिन प्रसाद	राज्य मंत्री
श्रीपद यशो नाइक	राज्य मंत्री
पंकज चौधरी	राज्य मंत्री
कृष्णपाल गुर्जर	राज्य मंत्री
रामदास आठवले	राज्य मंत्री
रामनाथ ठाकुर	राज्य मंत्री
नित्यानंद राय	राज्य मंत्री
अनुप्रिया पटेल	राज्य मंत्री
वी सोमन्ना	राज्य मंत्री
चंद्रशेखर पेम्मासानी	राज्य मंत्री
एसपी सिंह बघेल	राज्य मंत्री
शोभा करांदलाजे	राज्य मंत्री
कीर्तिवर्धन सिंह	राज्य मंत्री
बनवारी लाल वर्मा	राज्य मंत्री
शांतनु ठाकुर	राज्य मंत्री
सुरेश गोपी	राज्य मंत्री
एल मुरुगन	राज्य मंत्री
अजय टम्टा	राज्य मंत्री
बंडी संजय कुमार	राज्य मंत्री
कमलेश पासवान	राज्य मंत्री
भागीरथ चौधरी	राज्य मंत्री
सतीश चंद्र दुबे	राज्य मंत्री
संजय सेठ	राज्य मंत्री
रावनीत सिंह बिट्टू	राज्य मंत्री
दुर्गा दास उइके	राज्य मंत्री
रक्षा निखिल खडसे	राज्य मंत्री
सुकांता मजूमदार	राज्य मंत्री
सावित्री ठाकुर	राज्य मंत्री
तोखन साहू	राज्य मंत्री
डॉ राजभूषण निषाद	राज्य मंत्री
भूपतिराजू श्रीनिवास वर्मा	राज्य मंत्री
हर्ष मल्होत्रा	राज्य मंत्री
निमुबेन जयंतीभाई बांभानिया	राज्य मंत्री
मुरलीधर मोहोल	राज्य मंत्री
जॉर्ज कुरियन	राज्य मंत्री

श्रीनगर में श्रद्धालुओं को ले जा रही बस पर हमला

- 10 की मौत; दिल्ली में पीएम मोदी के शपथ ग्रहण के दौरान हुआ टेररिस्ट अटैक

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के रियासी में आतंकियों ने श्रद्धालुओं को ले जा रही बस पर हमला किया है। इसमें 10 लोगों के मारे जाने की खबर है, जबकि कई लोग घायल हुए हैं। नई दिल्ली में पीएम मोदी और नई कैबिनेट के शपथ ग्रहण समारोह के दौरान ये टेररिस्ट अटैक हुआ है। यह हमला रियासी जिले के कंदा इलाके में हुआ। आतंकियों ने बस पर ओपन फायर किया, जिसमें ड्राइवर घायल हुआ और उसका बस से कंट्रोल खो गया। इसके चलते बस खाई में गिर गई। 10 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि कुछ लोग गोली लगने से घायल हुए हैं।

नेमावर के श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर का होगा जीर्णोद्धार: यादव

मुख्यमंत्री ने जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत नेमावर में नर्मदा घाट पर की साफ-सफाई

अनोखा तीर, खातेगांव/ नेमावर। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव देवास जिले के नेमावर में जल गंगा संवर्द्धन अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम में सहभागिता करते हुए नर्मदा नदी पर पूजा-अर्चना करने के पश्चात घाट पर साफ-सफाई की। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में 5 से 16 जून गंगा दशहरा तक जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के माध्यम से नदी, नालों और ऐतिहासिक एवं पारंपरिक जल संरचनाओं, तालाब, झील, कुंआ, बावड़ी आदि के संरक्षण, पुनर्जीवन के लिए कार्य किया जा रहा है तथा उनकी साफ-सफाई गहरीकरण का कार्य भी किया जा रहा है। विधायक आशीष शर्मा ने कहा कि मां नर्मदा नदी में स्नान से कई जन्मों के पापों से मुक्ति मिलती है। उन्होंने कहा कि नर्मदा नदी में लोगों द्वारा गदंगी की जाती है, जिससे नर्मदा दूषित हो जाती है। इसे शुद्ध बनाने के लिए हमें निरंतर प्रयास करना होंगे और नर्मदा नदी को साफ-स्वच्छ एवं निर्मल बनाना है।

इस दौरान विधायक आशीष गोविंद शर्मा, महंत राम स्वरूप शास्त्री महाराज, महंत विठ्ठलदास महाराज, महंत भगवत दास महाराज, नगर परिषद अध्यक्ष गोपाल अग्रवाल, सारिका नरेंद्र चौधरी, कलेक्टर ऋषव गुप्ता, पुलिस

अधीक्षक संपत उपाध्याय, सीईओ जिला पंचायत हिमांशु प्रजापति, अपर कलेक्टर प्रवीण फुलपगारे, एसडीएम खातेगांव सुश्री प्रिया चंद्रावत, एसडीएम कन्नौद प्रवीण कुमार सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण व बड़ी संख्या क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देवास जिले में लगभग 5 करोड़ 65 लाख रुपए की राशि से लगभग 3078 जल संरचनाओं के जीर्णोद्धार के कार्य किए जा रहे हैं। जिनमें नगरीय क्षेत्र में लगभग 1 करोड़ 78 लाख की राशि से 650 संचनाओं पर कार्य किया जा रहा है। इसके लिए साथ ही लगभग 1 करोड़ 68 रुपए की राशि से लगभग 2400 से अधिक जल संरचनाओं का गहरीकरण व साफ-सफाई की जा रही है। उन्होंने कहा कि जिले में 196 पुराने तालाब, 105 स्टॉप डेम 172 कुएं-बावड़ियां व अन्य जल स्त्रोतों पर कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि देवास जिले में रूफ हॉर्वेस्टिंग सिस्टम के माध्यम से लगभग 250 स्थानों पर बारिश के पानी के संग्रहण के लिए कार्य किया जा रहे हैं। नर्मदा नदी के साथ ही क्षिप्रा, कालीसिंध सहित अन्य नदियों को शुद्ध बनाने का कार्य इस अभियान के माध्यम से किया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नेमावर का यह नर्मदा नदी का घाट बहुत पवित्र है। हमारी सरकार द्वारा जल संरक्षण के लिए जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हमारे यहां पर सभी तीज त्योहार मनाने का महत्व हैं। जो कि हम ऋतुओं के हिसाब से मनाते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नेमावर स्थित श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर में पूजा-अर्चना की तथा प्रदेश की सुख-समृद्धि की कामना की।

विधायक आशीष शर्मा द्वारा मुख्यमंत्री डॉ. यादव से मांग की कि ग्राम तुरनाल में हंडिया बैराज डेम बनने से पांच लड्डू (जहां भगवान परशुराम) ने अपने माता-पिता के पिंडदान किया था जो कि डूब क्षेत्र अंतर्गत आता है, उसे संरक्षित किया जाए। इस पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पांच लड्डू स्थान को विकसित कर अद्भुत बनाया जाएगा।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 44.5 °c | न्यूनतम 36°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ सोमवार, 10 जून 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

व्हाइट हाउस के सामने 30 हजार फिलिस्तीन समर्थकों का प्रदर्शन

- बाइडेन का खून से सना मुखौटा लेकर बोले-गाजा में मरे बच्चों की चीख इन्हें डराएगी

वाशिंगटन (एजेंसी)। गाजा में इजराइल के हमलों के बीच शनिवार को अमेरिका में राष्ट्रपति के आधिकारिक निवास व्हाइट हाउस के बाहर 30 हजार फिलिस्तीन समर्थकों ने प्रदर्शन किया। लोग सिर पर हमास का पट्टा बांधकर फिलिस्तीन का झंडा लहराते नजर आए। इस दौरान प्रदर्शन कर रहे एक शख्स के हाथ में राष्ट्रपति

बाइडेन का मुखौटा भी था, जो खून से सना हुआ था। प्रदर्शन कर रहे लोगों ने अमेरिका के झंडे में आग भी लगाई। लोगों के हाथ में कई बैनर और पोस्टर भी थे। इसमें बाइडेन पर इतिहास के गलत पक्ष में होने का आरोप लगाया गया। प्रदर्शनकारियों ने आजाद फिलिस्तीन के नारे लगाए। उन्होंने कहा कि गाजा पर बमबारी में जितने बच्चों की जान गई है, उनकी चीख आपको हमेशा डराती रहेगी। प्रदर्शनकारियों ने नेशनल पार्क के सर्विस रेंजर्स पर सामान भी फेंके। इसके अलावा वहां लगे स्टैच्यू को भी खंडित किया।

भोपाल में महाराणा प्रताप जयंती समारोह में हादसा

- प्रतिमा पर माल्यार्पण के दौरान हाईड्रोलिक लिफ्ट गिरी ; कांग्रेस पार्षद सहित दो घायल

भोपाल (नप्र)। भोपाल में महाराणा प्रताप की जयंती उत्सव के दौरान नगर निगम की हाईड्रोलिक लिफ्ट गिर गई। हादसे में वार्ड 66 से कांग्रेस पार्षद जितेंद्र सिंह राजपूत और उनके मामा घायल हुए हैं। घटना दोपहर 1.20 बजे की है। रविवार को क्षत्रिय समाज के लोग महाराणा प्रताप की प्रतिमा के माल्यार्पण के लिए एमपी नगर चौराहे पर जुटे थे। नेता और समाज के लोग नगर निगम की हाईड्रोलिक लिफ्ट के जरिए महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर रहे थे। पार्षद जितेंद्र सिंह राजपूत अपने मामा ऋषि सिंह राजपूत हाईड्रोलिक लिफ्ट में सवार होकर 20 फीट ऊपर प्रतिमा तक पहुंचे। इसी दौरान हाईड्रोलिक लिफ्ट की बेल्डिंग टूट गई और वह नीचे गिर गई। पार्षद जितेंद्र सिंह के पैर में फ्रैक्चर हुआ है। उनके मामा को चोट लगी है। पार्षद जितेंद्र को इंद्रपुरी स्थित अनंत श्री हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है।

जिम्मेदार अफसरों को तुरंत सस्पेंड किया जाए

हादसे में घायल पार्षद जितेंद्र सिंह राजपूत ने बताया कि राजपूत समाज प्रगति मंडल के द्वारा महाराणा प्रताप जी की प्रतिमा का माल्यार्पण करने गए थे। हाईड्रोलिक लिफ्ट का बैल्डिंग टूटने से हम गिर गए। लिफ्ट में मौजूद लोगों को चोटें आई हैं। निश्चित रूप से इसमें नगर निगम भोपाल की बहुत बड़ी लापरवाही है। इस मामले की जांच की जाना चाहिए। नगर निगम की जो मशीन हैं, हाईड्रोलिक लिफ्ट हैं, जेसीबी मशीन हैं, जो भी इक्वीपमेंट हैं। सभी की जांच की जाना चाहिए। फिटनेस सर्टीफिकेट की जांच की जाना चाहिए।

संघर्षों में तप कर निखरे शिवराज, हर बार पाया नया मुकाम

चार बार सीएम रहने के बाद अब केंद्र में मंत्री बने शिवराज सिंह चौहान, छठे नंबर पर ली शपथ

भोपाल । मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह को नरेंद्र मोदी के केंद्रीय मंत्रिमंडल में मंत्री बनाया गया है। उन्होंने छठे नंबर पर शपथ ली है। इससे मध्य प्रदेश की ताकत और ज्यादा बढ़ेगी। विदिशा से छठवीं बार सांसद चुने गए शिवराज सिंह चौहान प्रदेश में भाजपा के सबसे कद्दावर नेता हैं। वह मध्य प्रदेश के पहले ऐसे मुख्यमंत्री हैं, जिन्होंने सर्वाधिक समय तक मुख्यमंत्री पद का कार्यभार संभाला है। उनका कार्यकाल करीब 16.5 वर्ष का रहा। इससे पहले भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष व भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रहे हैं।

शिवराज सिंह चौहान को मध्य प्रदेश में 'मामा' नाम से भी पुकारा जाता है। उनका पेशा राजनीति और कृषि रहा है। सीहोर जिले के बुधनी में 5 मार्च 1959 को जन्मे शिवराज अब 64 के हो चुके हैं। लेकिन ऊर्जा से अब भी किसी युवा को मात देने की क्षमता रखते हैं। उन्होंने बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल से शिक्षा हासिल की है। एमए (दर्शनशास्त्र) कर चुके हैं। पिता प्रेम सिंह चौहान हैं, तो माता का नाम सुंदर बाई चौहान है। साधना सिंह से उनका विवाह हुआ है। उनके दो पुत्र कार्तिकेय चौहान, कुणाल चौहान हैं।

राजनीति से पहले आरएसएस में थे सक्रिय

गौरतलब है कि राजनीति में कदम रखने पहले शिवराज सिंह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) में कार्यकर्ता के रूप में कार्य किया था। शिवराज सिंह चौहान छह बार उस सीट से सांसद हैं, जहां से कभी पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी सांसद थे। प्रदेश में मुख्यमंत्री पद का दायित्व संभालने से पहले शिवराज पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शिवराज सिंह चौहान को जमीन से जुड़ा हुआ नेता माना जाता है। शिवराज का राजनीतिक अनुभव भी सबसे जुदा रहा है। शिवराज सिंह चौहान ने 1972 में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

को ज्वाइन कर लिया था और 1975 में मॉडल हायर सेकेंडरी स्कूल छात्र संघ के अध्यक्ष चुने गए थे। शिवराज ने आपातकाल में भी हिस्सा लिया और उन्हें आंतरिक सुरक्षा अधिनियम के तहत जेल में बंद कर दिया गया था। आपातकाल के बाद उनकी क्षमता को देखते हुए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने उन्हें भोपाल में संगठन सचिव की जिम्मेदारी सौंप दी।

अब छठी बार सांसद

1978 से 1980 तक शिवराज सिंह चौहान अभाविप में मध्यप्रदेश के संयुक्त सचिव रहे। 1980 से 1982 तक शिवराज सिंह चौहान मध्यप्रदेश एबीवीपी के महासचिव चुने गए और उसके बाद 1982 से 1983 तक राष्ट्रीय मंत्री रहे। शिवराज सिंह चौहान को भारतीय जनता युवा मोर्चा में भेजा गया और उन्हें मध्यप्रदेश का संयुक्त सचिव बनाया गया। 1990 में उन्हें बुधनी विधानसभा सीट से विधानसभा का प्रत्याशी बनाया गया और उन्होंने जीत दर्ज की। 1991 के बाद उपचुनाव में शिवराज सिंह चौहान को उम्मीदवार बनाया और शिवराज सिंह चौहान सांसद बन गए। शिवराज सिंह चौहान 1991, 1996, 1998, 1999 और 2004 में विदिशा लोकसभा सीट से सांसद चुने जा चुके हैं। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में शिवराज सिंह चौहान ने पहली बार 29 नवंबर 2005 को शपथ ली और 2008 तक वह मुख्यमंत्री रहे। दूसरी बार 12 दिसंबर 2008 को मुख्यमंत्री बने। तीसरी बार उन्होंने 14 दिसंबर 2013 को मुख्यमंत्री पद की शपथ ली, वहीं चौथी बार उन्होंने 2020 में मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। अब 2024 में रणनीति के तहत उन्हें फिर सांसद के लिए मैदान में उतारा गया और आठ लाख से ज्यादा वोटों से शिवराज ने जीत दर्ज की।

पार्लियामेंट्री बोर्ड के सदस्य भी रह चुके हैं

शिवराज सिंह चौहान की गिनती भाजपा के बड़े ओबीसी नेताओं में होती है। शिवराज भाजपा की पार्लियामेंट्री बोर्ड के सदस्य भी रह चुके हैं और 2019 में भारतीय जनता पार्टी सदस्यता अभियान के प्रमुख भी रह चुके हैं। उनके सदस्यता अभियान के प्रमुख रहते हुए भाजपा के सदस्यों की संख्या 18 करोड़ से अधिक हो गई थी। 2018 में जब भाजपा की मध्यप्रदेश में हार हुई तो उसके बाद शिवराज को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद की भी जिम्मेदारी दी गई थी।

बड़ी जीत दर्ज करने वाले नेताओं में शिवराज

2024 के चुनावों में पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने विदिशा संसदीय सीट से 8.21 लाख मतों से जीत हासिल की है। देश में सर्वाधिक वोट से जीतने वाले नेताओं में शिवराज सिंह चौहान शामिल हुए हैं। शिवराज सिंह चौहान की प्रदेश और देश में मामा के रूप में पहचान है। शिवराज सिंह चौहान की लाड़ली लक्ष्मी योजना, मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन जैसी योजनाओं को दूसरे राज्यों ने अपनाया है। अब मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना को भी पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा को बहुत लाभ मिला है। शिवराज सिंह चौहान ओबीसी वर्ग से आते हैं।

बैतूल से दूसरी बार के सांसद बने दुर्गादास उइके केंद्र में राज्य मंत्री

आदिवासी कोटे से मिला मौका

बैतूल। बैतूल से दूसरी बार सांसद बने दुर्गादास उइके के पिता स्व. सूरत लाल उईके शिक्षक थे। 29 अक्टूबर, 1963 को उनका जन्म मीरापुर पोस्ट-रायआमला, तहसील-मुलताई, जिला-बैतूल (विधानसभा क्षेत्र-मुलताई) में हुआ था। उनका बचपन ग्राम-बासनेरखुर्द, पोस्ट-विजयग्राम, तहसील-भैंसदेही में बीता, जबकि प्रारंभिक शिक्षा चोहटा पोपटी, पोस्ट-कुनखेडी, में हुई। उन्होंने एमए समाजशास्त्र, शासकीय जयवंती हक्सर महाविद्यालय बैतूल से किया, जबकि बीएड शासकीय महाविद्यालय-खंडवा से किया। दुर्गादास डीडी उईके को हिन्दी, मराठी, गोंडी एवं कोरकू भाषा का ज्ञान है। पिछले संसदीय कार्यकाल में उन्हें रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (स्थायी समिति) सदस्य गृह मंत्रालय,संसदीय राजभाषा समिति सदस्य जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार (सलाहकार समिति) सदस्य थे। उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, (सलाहकार समिति) सदस्य रहे । भारतीय डाक सेवा, (सलाहकार समिति) सदस्य बनाया गया था। उन्हें जनजाति मोर्चा, भारतीय जनता पार्टी में (शोध एवं नीति विषय) मध्यप्रदेश प्रभारी भी रहे । विद्यार्थी जीवन से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद एवं विश्व हिन्दू परिषद से जुड़े रहे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय वर्ष तक प्रशिक्षण प्राप्त किया है। जिला गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ में जिला समन्वयक (संयोजक) के रूप में काम किया। सरकारी शिक्षक के पद से त्यागपत्र देकर वर्ष 2019 में पहली बार भाजपा की टिकट पर बैतूल संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ने वाले दुर्गादास उईके ने तीन लाख 63 हजार से अधिक मतों से जीत हासिल की थी। बेहतर कार्य प्रणाली के कारण भाजपा ने वर्ष 2024 के चुनाव में दूसरी बार उन्हें मैदान में उतारा था। यह चुनाव भी वे 3 लाख 79 हजार 800 मतों से जीतने में सफल रहे हैं।

नीट विवाद: 1563 स्टूडेंट्स के अंकों की फिर से होगी जांच

- ग्रेस मार्क विवाद में बड़ा फैसला,जांच के लिए पैनल गठित
- एनटीए बोला-एक हफ्ते में आएगी रिपोर्ट, छात्रों का प्रदर्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने नीट-यूजी में ग्रेस अंक विवाद को फिर से जांचने के लिए 4 सदस्यीय कमेटी का गठन किया है। यह जानकारी शनिवार को नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने दी। एनटीए के डायरेक्टर जनरल सुबोध कुमार सिंह ने बताया कि कमेटी से एक हफ्ते में रिपोर्ट देने को कहा गया है। इसके बाद यह तय होगा कि आगे क्या करना है। नीट-यूजी 2024 के रिजल्ट पर सवाल उठ रहे हैं। एनटीए ने 1563 स्टूडेंट्स को ग्रेस मार्क दिए हैं। आरोप है कि इससे 67 छात्रों की ऑल इंडिया रैंक 1 आई। नीट-यूजी 2024 में 24 लाख बच्चे बैठे थे। रिजल्ट 4 जून को आया था। डायरेक्टर जनरल सिंह ने बताया कि हमारी कमेटी 1563 कैंडीडेट्स और 6 सेंटर्स की जांच करेगी, जहां ग्रेस मार्क्स मिले हैं। हमारे पास सेंटर्स की मॉनिटरिंग के लिए सीसीटीवी हैं। सेंटर्स की रिपोर्ट्स भी हैं।

ये सेंटर्स मेघालय, बहादुरगढ़ (हरियाणा), दंतेवाड़ा, बालोद (छत्तीसगढ़), सूरत (गुजरात) और चंडीगढ़ के हैं। इस बीच रिजल्ट में गड़बड़ियों के विरोध में दिल्ली और कलकत्ता हाईकोर्ट में याचिका दायर की गई हैं। एग्जाम में टॉपर्स की बढ़ी हुई संख्या, मार्किंग स्कीम से अलग ग्रेस मार्क्स देना, आंसर की में बदलाव और एग्जाम से पहले ही पेपर लीक जैसे आरोप लगाए गए हैं। सिंह ने कहा, स्टूडेंट्स को ग्रेस अंक देने से नतीजों या क्वालिफाइंग क्राइटेरिया पर कोई फर्कनहीं पड़ा है। उन्होंने बताया कि यह मसला सिर्फ1563 स्टूडेंट्स का है। पेपर 23 लाख से ज्यादा बच्चों ने दिया था। 4750 सेंटर की बजाय सिर्फ6 सेंटर का मामला है। कमेटी 1563 स्टूडेंट्स को दिए गए ग्रेस मार्क्स और टाइम लॉस की जांच करेगी। जरूरत पड़ी तो रिजल्ट संशोधित किया जाएगा।

मोदी के शपथ ग्रहण में आए 7 देशों के लीडर्स

आडवाणी से मिलीं बांग्लादेश की पीएम शेख हसीना

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रविवार को तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री बन गए हैं। शाम 7.15 बजे राष्ट्रपति भवन में नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ले ली है। इस समारोह में शामिल होने के लिए भारत के 7 देशों के लीडर्स को न्योता दिया गया है। शपथ ग्रहण के लिए मेहमानों के आने का सिलसिला शुरू हो चुका है। रविवार सुबह मालदीव के राष्ट्रपति

- पहली बार भारत पहुंचे मालदीव के राष्ट्रपति मुइज्जू

मोहम्मद मुइज्जू पहली बार भारत पहुंचे। उनके ठीक बाद मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविंद जुगनॉथ भी दिल्ली आए। दोपहर करीब 12 बजे भूटान के पीएम दाशो शेरिंग तोबगे और फिर श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे दिल्ली के इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पहुंचे। वहीं नेपाल के पीएम प्रचंड भी भारत आ चुके हैं। दूसरी तरफ, बांग्लादेश की पीएम शेख हसीना और सेशेल्स के उपराष्ट्रपति अहमद अफीफ एक दिन पहले शनिवार 8 जून दोपहर में ही भारत आ गए थे। भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी और सागर विजन के तहत इन देशों को समारोह में बुलाया गया है। विदेशी मेहमानों के ठहरने की व्यवस्था दिल्ली के सबसे बड़े होटलों में की गई है। इनमें मौर्या, ताज होटल, ओबेरॉय, क्लैरिजेस और लीला

होटल शामिल हैं। इनकी सुरक्षा के लिए पैरामिलिट्री और दिल्ली आर्म्ड पुलिस के 2500 जवानों को तैनात किया गया है। इसके अलावा इलाके में स्नाइपर और पुलिसबल भी मौजूद है। विदेशी लीडर्स के एयरपोर्ट से होटल और वेन्यू तक के रास्ते की ड्रोन्स के जरिए निगरानी की जा रही थी।

शपथ ग्रहण से पहले संभावित कैबिनेट से मिले पीएम मोदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। नरेंद्र मोदी ने रविवार को तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ले ली हैं। दोपहर में उन्होंने अपने आवास 7 लोक कल्याण मार्ग पर सभी नेताओं के लिए हाई-टी का आयोजन किया। इस बैठक में मोदी

- 100 दिन के रोडमैप पर की चर्चा, पेंडिंग योजनाओं को पूरा करने का दिया निर्देश

ने सरकार के शुरुआती 100 दिन के रोडमैप पर चर्चा की। मोदी ने कहा कि इस रोडमैप को लागू करना है और पेंडिंग योजनाओं को भी पूरा करना है। इस बैठक में भाजपा नेता अमित शाह, राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी, पीयूष गोयल, गजेंद्र सिंह शेखावत, गिरिराज सिंह, धर्मेंद्र प्रधान, मनसुख मंडाविया,किरेन रिजिजू, ज्योतिरादित्य

सिंधिया, एलजेपी (राम विलास) के अध्यक्ष चिराग पासवान, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया के राज्यसभा सांसद रामदास अठावले, जनता दल (यू) के रामनाथ ठाकुर समेत करीब 60 नेता शामिल हुए थे। बैठक खत्म होने के बाद हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री और करनाल से सांसद मनोहर लाल खट्टर ने कहा कि यह नरेंद्र मोदी की परंपरा है कि वे चाय पर चर्चा के लिए अपने आवास पर लोगों को बुलाते हैं।

मणिपुर में बवाल, जिरीबाम में 2 पुलिस चौकियां, 70 घर जलाए

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर के जिरीबाम जिले में शनिवार 8 जून को संदिग्ध उग्रवादियों ने दो पुलिस चौकियों, एक फॉरेस्ट ऑफिस और 70 घरों में आग लगा दी। पुलिस का कहना है कि हमलावर 3-4 नावों पर सवार हो बराक नदी के रास्ते घुसे थे। इससे पहले गुरुवार 6 जून को भी कुछ मैतेई गांवों और पुलिस चौकियों पर हमले हुए थे। सूत्रों के अनुसार, चिन-कुकी आतंकवादियों को खत्म करने के लिए बांग्लादेश की सरकार के निर्देश के बाद 200 से अधिक आतंकी बांग्लादेश में भारतीय सीमा में भाग गए हैं। वे मिजोरम के रास्ते मणिपुर में प्रवेश करने की ताक में हैं। इधर, आग लगाने की घटना जीरी मुख और छोटो बेकरा की पुलिस चौकियों और गोआखाल वन बीट ऑफिस में हुई। इस घटना के कुछ घंटों बाद एसपी का तबादला कर दिया गया है। आदेश के अनुसार जिरीबाम एसपी ए घनश्याम शर्मा को मणिपुर पुलिस ट्रेनिंग कॉलेज के एडीशनल डायरेक्टर पद पर ट्रांसफर कर दिया है। उधर, इनर मणिपुर लोकसभा सीट से नवनिर्वाचित कांग्रेस सांसद अंगोमचा बिमोल अकोईजाम ने राज्य सरकार से जिरीबाम के लोगों के जीवन और संपत्ति की रक्षा करने का आग्रह किया। मणिपुर में मई 2023 से जातीय हिंसा जारी है। यहां मैतेई और पहाड़ी इलाकों में रहने वाले कुकी के बीच जातीय संघर्ष में 200 से अधिक लोगों की मौत हो गई है और हजारों लोग बेघर हो गए हैं। मैतेई, मुस्लिम, नागा, कुकी और गैर-मणिपुरी समेत विविध जातीय संरचना वाला जिरिबाम अब तक जातीय संघर्ष से अछूता रहा था। यहां गुरुवार 6 जून की शाम संदिग्ध उग्रवादियों ने 59 साल के एक व्यक्ति की हत्या कर दी। सोइबाम सरतकुमार सिंह नाम का यह व्यक्ति 6 जून को अपने खेत में गया था, जिसके बाद वह लापता हो गया।

- एसपी का तबादला, 200 उग्रवादी मणिपुर में घुसपैठ की फिराक में

जेईई एडवांस्ड 2024

इंदौर के वेद लाहोटी ऑल इंडिया टॉपर

इंदौर (नप्र)। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, मद्रास (आईआईटी मद्रास) ने जेईई एडवांस्ड 2024 का रिजल्ट जारी कर दिया है। इंदौर के वेद लाहोटी ने ऑल इंडिया टॉप किया है। उन्हें कुल 360 में से 355 मार्क्स मिले हैं। एमपी जोन में मान्य जैन ने टॉप किया है। उनकी ऑल इंडिया रैंक 75 आई है। रिजल्ट आधिकारिक वेबसाइट पर जारी किया गया है। उम्मीदवार आधिकारिक वेबसाइट पर अपना रिजल्ट चेक व डाउनलोड कर सकते हैं। रिजल्ट चेक करने के लिए उम्मीदवारों को अपने लॉगिन क्रेडेंशियल्स जिसमें एनरोलमेंट नंबर और डेट ऑफ बर्थ डालना होगा।

दर्शन करने अयोध्या गए तो घर में घुसे चोर

- पुलिस बोली, रैकी कर घर में घुसे, चांदी के आभूषण चोरी

इंदौर (नप्र)। इंदौर के अन्नपूर्णा इलाके में एक वकील के यहां चोरी हो गई। वह परिवार के साथ अयोध्या गए थे। पुलिस ने इस मामले में केस दर्ज कर जांच शुरू की है। पुलिस के मुताबिक सुदामा नगर निवासी एडवोकेट विकास ने बताया कि वह 1 जून को अपने घर पर ताला लगाकर दर्शन के लिये रामलाल के यहां आयोध्या गए थे। शनिवार की सुबह वापस आए तो उनहें ताले टूटे हुए मिले। घर का काम करने वाली सुमन से पूछा तो उसने बताया कि गुरुवार को वह घर के पास काम करने आई थी तब ताले लगे थे। पुलिस के मुताबिक रैकी कर बदमाशों ने चोरी की है। वकील के मुताबिक चोरों ने घर से चांदी की पायल पांच जोड़, चांदी की गणेशजी की मूर्ति, चांदी के 10 सिक्के, चांदी की बिछिया, अन्य आभूषण और 5 हजार रुपए चुराए। पुलिस अब सीसीटीवी से आरोपियों की तलाश कर रही है।

ड्राइवर खाना खाने गया, परचून से लदा ट्रक ले गए चोर

जूनी इंदौर के लोहामंडी में परचून से भरा ट्रक चोरी हो गया। दिन में ड्राइवर खाना खाने गया था। करीब आधे घंटे में वापस आया ट्रक नहीं मिला। ट्रांसपोर्ट मालिक ने इस मामले में केस दर्ज कराया है। पुलिस के मुताबिक करणजोत सिंह बैस निवासी शिवधाम कॉलोनी लिंबोदी ने बताया कि उनका लोहामंडी में प्रवीण लॉजिस्टिक प्राइवेट लिमिटेड के नाम से फर्म है। उनके मैनेजर राजेन्द्र ने उन्हें ट्रक चोरी की जानकारी दी थी। उन्होंने बताया कि ड्राइवर योगेश कुमार ठाकरे ने बताया कि मंडी गेट पर उसने ट्रक खड़ा किया। दोपहर में 2 बजे खाना खाने गए थे। करीब आधे घंटे बाद आए तो ट्रक जगह पर नहीं था। पुलिस आसपास के फुटेज के आधार पर जांच ट्रक की तलाश कर रही है। उसमें करीब 30 से 40 लाख का माल बताया जा रहा है।

इंदौर में तापमान में आई गिरावट

सुबह छाए बादल; आज तेज हवाओं और गरज-चमक के साथ हल्की बारिश के आसार

इंदौर (नप्र)। इंदौर में पिछले 24 घंटों में दिन के तापमान में तेजी से गिरावट आई है। इससे मौसम में ठण्डापन है लेकिन फिर उमस महसूस हो रही है। रविवार सुबह बादल छाए और मौसम ठण्डा ही है। मौसम वैज्ञानिकों ने आज दोपहर बाद तेज हवाओं और गरज-चमक के साथ हल्की बारिश के आसार जताए हैं। दिन का तापमान 40.5 (+1) डिग्री और रात का तापमान 22.6 (-3) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया था। शनिवार को दिन में बादल छाए और मौसम काफी ठण्डा रहा। इस दौरान पारा 8 डिग्री लुढ़ककर 32.8 डिग्री सेल्सियस पर आ गया। शनिवार रात को तापमान में 3 डिग्री का इजाफा हुआ। इस दौरान तापमान 25.2 (0) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। इस दौरान रात को फिर गर्मी महसूस हुई। मौसम वैज्ञानिक अरुण शर्मा के मुताबिक साइक्लोनिक सर्कुलेशन और वेस्टर्न डिस्टर्बेंस के कारण शनिवार को पूर्वी हिस्सों में बादल छाए और कई क्षेत्रों में बारिश भी हुई। रविवार को इंदौर और आसपास के क्षेत्रों में बादल छाने के साथ हल्की बारिश भी हुई।

इंदौर की बेटी बनी मिस एमपी

बोली-बचपन से की मॉडलिंग, मां का सपना पूरा करने के लिए मिस इंडिया बनना चाहती हैं

इंदौर (नप्र)। इंदौर की बेटी 22 वर्षीय खुशी जायसवाल मिस एमपी बनी है। अब वो मिस इंडिया कॉम्पिटिशन में हिस्सा लेंगी। मॉडलिंग करने वाली खुशी ने बताया कि मिस एमपी बनने का रास्ता कितना चैलेंजिंग रहा। कैसे मॉडलिंग की फील्ड को चुना। घर वालों की क्या इच्छा थी। जानिए सबकुछ उन्हीं की जुबानी।

हाइट कम होने से इंदौर से रिजेक्ट हुई 20 लड़कियां

26 मई को भोपाल में बियांड इन्फिनिटी टैलेंट अकादमी द्वारा इंफिनिटी-2024 में मिस एंड मिस्टर एमपी पेजेंट का आयोजन किया गया। इसमें प्रदेश के 20 से ज्यादा प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इसके ऑडिशन फरवरी 2024 में हुए थे, जिसमें पहले 60 फिर 40 और आखिर में 20 लड़कियां सिलेक्ट हुई। इंदौर से ही कई लड़कियों को रिजेक्ट कर दिया गया। इसके पीछे वजह उनकी कम हाइट होना था। नियम के तहत कम से कम 5 फिट 7 इंच हाइट होना जरूरी है। खुशी ने कहा, मेरी 5 फिट 8 इंच है। रैम्प वॉक, क्त एंड राउंड, इंट्रोडक्शन और जनरल नॉलेज के अलग-अलग राउंड हुए थे। अब मुंबई में होने वाली मिस इंडिया कॉम्पिटिशन में हिस्सा लेना है। यहां विनर रही तो मिस वर्ल्ड के लिए इंडिया को रिप्रजेंट करूंगी।

पूछा गया था-सुपर पावर मिले तो क्या

करोगी: मिस एमपी के लिए क्यू एंड ए राउंड में मुझ से पूछा था कि अगर सुपर पावर मिलते हैं तो क्या करोगी। मैंने क्राइम रोकने खासकर महिलाओं के साथ होने वाली ज्यादती और करप्शन को खत्म करने की बात कही। 6 साल की उम्र से मॉडलिंग कर रही खुशी अब मिस इंडिया पेजेंट में हिस्सा लेंगी।

मां बनना चाहती थी मिस इंडिया

मां भारती जायसवाल बिजनेस वुमेन है। पिता अजय जायसवाल भी बिजनेस करते हैं। एक छोटी बहन है जो क्लास 9 में पढ़ती है। मां की इच्छा मिस इंडिया बनने की थी लेकिन पारिवारिक माहौल के कारण मॉडलिंग करने की परमिशन नहीं मिली। मैं जब 6-7 साल की थी जब गणेश उत्सव में मैं पहली बार कॉम्पीटिशन में मॉडल बनी थी। बाद में मेरा भी इंटरेस्ट इस फील्ड की तरफ हुआ। मां का सपना था तो उन्होंने भी मुझे सपोर्ट किया। लॉरेंस इंटरनेशल से 12वीं करने के बाद प्रेस्टीज कॉलेज से बीबीए किया। इस दौरान मॉडलिंग, एंकरिंग जारी रही।

इंदौर में मॉडलिंग का कम स्कोप

इंदौर में मॉडलिंग नहीं है। स्कोप बहुत कम है। मैं इंदौर में मॉडलिंग लाना चाहती हूं। मुंबई में मॉडलिंग की दुनिया कई गुना फास्ट है। जो लड़कियां मॉडलिंग के क्षेत्र में आना चाहती है वो अपनी पर्सनैलिटी, हाइट और लुक्स पर ध्यान है। रैंप वॉक की प्रैक्टिस करें और डाइट का ध्यान रखे।

ट्रेन में मिले युवती के शव के टुकड़े

ट्रॉली बैग में धड़, दूसरे थैले में हाथ-कमर के नीचे का हिस्सा था

इंदौर (नप्र)। इंदौर रेलवे स्टेशन के यार्ड में युवती का शव मिला है। शव तीन हिस्सों में है। कमर के नीचे का हिस्सा और हाथ धड़ से कटे मिले हैं। पुलिस ने शव बरामद कर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। टीआई संजय शुक्ला के मुताबिक शनिवार रात 12 बजे ट्रेन की सफाई के दौरान सफाईकर्मी इंजन के पीछे दूसरे नंबर के कोच में पहुंचा। यहां सफाई करने के दौरान झाड़ू बर्थ के नीचे अटक गई। सफाईकर्मी को लगा कोई सामान भूल गया। उसने झांककर देखा तो नीचे बैग और एक थैला था। ट्रॉली बैग में लॉक नहीं था, उसे जब खोला तो उसमें युवती का धड़ था। उसके हाथ नहीं थे। सफाईकर्मी ने तत्काल जीआरपी को सूचना दी। पुलिस के आने पर थैला खोला तो उसमें कमर के नीचे का हिस्सा और कटे हुए हाथ रखे मिले थे। रविवार सुबह शव का एमवाय अस्पताल में पोस्टमॉर्टम किया गया है। जिस ट्रेन में शव मिला वह ट्रेन रात 8 बजे महू से चलती है। सुबह 8 बजे नागदा जाती है। इससे पहले यार्ड में आकर खड़ी होती है।

लव मैरिज के दो माह बाद...दहेज के लिए प्रताड़ित किया

- अनाथ बताकर अपशब्द कहे, मारपीट की, पति ने घर से निकाला, केस दर्ज

इंदौर (नप्र)। इंदौर के भंवरकुआ और राजेन्द्र नगर में पुलिस ने दो अलग-अलग दहेज के मामले में केस दर्ज किया है। भंवरकुआ में रहने वाली पीड़िता के मुताबिक लव मैरिज के दो माह बाद ही उसे प्रताड़ना मिलने लगी। अनाथ होने के नाम पर सास ने ताने मारे। सूरज से पति ने बेटी होने पर बेटी के साथ अपनी पत्नी को मायके इंदौर भेज दिया। काफी परेशान होने के बाद पीड़िता पुलिस की शरण में पहुंची है। भंवरकुआ पुलिस के मुताबिक मुस्कान अग्रवाल ने अपने पति निलेश दम्मानी निवासी बी हाईवे टावर नवलखा और सास उषा के खिलाफ दहेज प्रताड़ना का केस दर्ज कराया है। मुस्कान ने पुलिस को बताया कि 14 दिसंबर 2022 को उसने निलेश से प्रेम विवाह किया। इसके लिए परिवार से अनुमति ली गई थी। 2018 में एक दुर्घटना में माता-पिता की मौत हो चुकी थी तो शादी बुआ ने कराई। दहेज संबंधी पूरा सामान सास के कहे अनुसार दिया। लेकिन शादी के 2 माह बाद ही सास ने ताने मारे कि दहेज में कुछ नहीं लाई। जो दिया वह इतना खास नहीं था। इसके साथ ही अनाथ कहते हुए अपशब्द कहे। मारपीट भी की। पति ने सास के कहने पर घर से धक्के देकर बाहर कर दिया। इस मामले में शिकायत के बाद पुलिस ने केस दर्ज कर लिया।

बेटी होने पर घर से निकाल दिया, अब 4 लाख की मांग

राजेन्द्र नगर पुलिस से ज्योति श्रीमाली ने दहेज प्रताड़ना का केस दर्ज कराया है। ज्योति ने बताया कि रविप्रकाश माली निवासी सूरत गुजरात से उसकी शादी अगस्त 2020 में हुई। शादी के दो साल बाद एक बेटी हुई। बेटी होने के बाद पति का व्यवहार बदल गया। वह बेटी होने की बात पर तानाकशी करने लगे। इस दौरान उन्होंने हाथ भी उठा दिया। अगस्त 2023 में परेशान होकर इंदौर आ गई। पति ने कहा कि अगर मेरे साथ रहना है तो 4 लाख रूपए लेकर आओ। इसके बाद परिवार के लोगों ने समझाया। लेकिन पति नहीं माने। बाद में परेशान होकर थाने में शिकायत की।

एम्बुलेंस ने बाइक को टक्कर मारी

एक की मौत, एक गंभीर घायल, होटल से खाना खाकर घर लौट रहे थे बाइक सवार

शाजापुर (नप्र)। आगरा-मुंबई नेशनल हाईवे पर शाजापुर बाइपास पर शनिवार देर रात दो युवक बाइक से होकर होटल से खाना खाकर लौट रहे थे। इसी दौरान 108 एम्बुलेंस ने उनकी बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर से एक युवक की घटनास्थल पर ही मौत हो गई और दूसरे को गंभीर अवस्था में निजी अस्पताल में ले जाया गया। जहां से प्राथमिक उपचार के बाद इन्दौर रेफर किया गया। शाजापुर के गोहिल हॉस्पिटल के कर्मचारी जितेंद्र और भूपेंद्र सिंह राजपूत बाइक से रात में तीन बजे के लगभग होटल से खाना खाकर वापस लौट रहे थे। इसी बीच बरवाल जोड़ के पास 108 ने पीछे से टक्कर मार दी। जितेन्द्र की घटना स्थल पर ही मौत हो गई, वहीं भुपेंद्र को गंभीर अवस्था में निजी अस्पताल में ले जाया गया। जहां से उसे इंदौर रेफर कर दिया है। उसकी हालत भी गंभीर बताई जा रही है। कोतवाली पुलिस ने मामला दर्ज कर एम्बुलेंस जब्त कर ली है।

जल गंगा संवर्धन और वंदे जलम अभियान में मैराथन

बड़ी संख्या में पहुंचे प्रतिभागी; मेयर ने दिलाई जल संरक्षण की शपथ

इंदौर (नप्र)। रविवार को नेहरू स्टेडियम में मेयर पुष्यमित्र भार्गव द्वारा 'जल गंगा संवर्धन और वंदे जलम' अभियान के तहत 10, 5 और 3 किलोमीटर की 'जय महेश मैराथन' का शुभारंभ किया गया। मेयर ने उपस्थित सभी नागरिकों को जल संग्रहण की शपथ दिलाई गई। मेयर ने कहा, प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव आह्वान पर प्रदेश में 'जल गंगा संवर्धन अभियान' के तहत 5 जून से 15 जून तक विभिन्न आयोजन आयोजित किया जा रहे हैं। इसमे वर्षा जल संग्रहण के साथ ही प्राकृतिक जल स्त्रोतों के संरक्षण के लिए भी काम किया जा रहा है।उन्होंने कहा कि वर्तमान जल संकट को देखते हुए हमें वर्षा जल संग्रहण को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। जल का सही और प्रभावी उपयोग करना आज के समय की सबसे बड़ी प्राथमिकता है। उन्होंने वर्षा जल को संग्रहित करने के विभिन्न तरीकों के बारे में भी जानकारी दी। इसमें रेनवाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम, सतही जल संचयन, सड़क किनारे जल संग्रहण, पारंपरिक जल संग्रहण आदि के बारे में बताया गया।

विजयवर्गीय बोले;

पूर्व पीएम अटलजी ने चलाई सफल गठबंधन सरकार

- मोदी तीसरी पारी भी सफलतापूर्वक खेलेंगे, अभी संख्या कम लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ता

इंदौर (नप्र)। मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने गठबंधन सरकार को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने गठबंधन की सफल सरकार चलाने का श्रेय पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को दिया है। साथ ही कहा कि उन्होंने (नरेंद्र मोदी) ने कुल मिलाकर 2 पारी खेली। तीसरी पारी भी सफलतापूर्वक खेलेंगे। विजयवर्गीय ने यह बयान इंदौर के रेसीडेंसी में मीडिया को दिया। उन्होंने कहा कि वाजपेयी की सफल गठबंधन सरकार के बाद जनता ने जो मैंडेट दिया उसमें भारतीय जनता पार्टी बहुमत था। गठबंधन की सरकार तो थी पर उसमें भाजपा का स्पष्ट बहुमत था। अभी जो सरकार बनी है वह गठबंधन की सरकार है। पहले भी एनडीए की सरकार थी और अभी भी एनडीए की सरकार है लेकिन भाजपा की संख्या कम है। इससे फर्क नहीं पड़ता। उन्होंने मोदी को लेकर कहा कि जैसे दो पारी उन्होंने खेली, तीसरी बार भी खेलेंगे। देशहित में जो काम किए हैं अब वे ज्यादा तेजी से होंगे। हमें पूरा विश्वास है।

राहुल गांधी को कहा बच्चा, लोकसभा में हंसी का माहौल रहेगा; 3 दिन पहले कहा था मेहनती

मध्यप्रदेश सरकार में नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कांग्रेस सांसद राहुल गांधी को बच्चा कहा है। दरअसल, दिल्ली में कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी को लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष बनाए जाने का प्रस्ताव रखा गया है। मीडिया ने इसे लेकर कैलाश विजयवर्गीय से सवाल किया था। इस पर विजयवर्गीय ने कहा- बच्चा है.. लोगों को लोकसभा में बैठने का उत्साह रहेगा कि पता नहीं कब क्या बोलेंगे? कब हंसी का माहौल रहेगा। बता दें कि विजयवर्गीय शनिवार को इंदौर में रेसीडेंसी में एक मीटिंग के बाद मीडिया से चर्चा कर रहे थे।

हाल ही में राहुल गांधी की तारीफ कर चुके विजयवर्गीय

तीन दिन पहले कैलाश विजयवर्गीय का एक वीडियो सामने आया था। जिसमें वे राहुल गांधी की तारीफ करते नजर आए थे। वीडियो में उन्होंने कहा- जनता का जो जनादेश हो उसे स्वीकार करना चाहिए। राहुल जी ने भी कितनी मेहनत की है। पैदल चले बेचारे। गांव-गांव दौड़ लगाई।

इंदौर में 14 साल की छात्रा से रेप

एक सप्ताह पहले बनाया शिकार, फिर ब्लैकमेल करने लगा

इंदौर (नप्र)। इंदौर के बाणगंगा में एक नाबालिग छात्रा से रेप करने के मामला सामने आया है। आरोपी ने छात्रा को रास्ते में रोककर खाली पड़ी इमारत में रेप किया। इसके बाद संबंध बनाने के लिये लगातार ब्लैकमेल करने लगा। छात्रा ने यह बात पहले परिवार को बताई। पुलिस के मुताबिक मामला एक सप्ताह पहले का है, लेकिन छात्रा ने शनिवार को इस मामले में केस दर्ज कराया।

बाणगंगा पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक 14 साल की छात्रा अपने माता-पिता के साथ थाने पहुंची थी। उसकी शिकायत पर परिचित विशाल पर केस दर्ज किया गया है। छात्रा ने बताया कि वह बहनों में सबसे छोटी है।

कक्षा 8वीं की पढ़ाई कर रही है। उसने पुलिस को बताया कि दो माह पहले पिता के दोस्त का रिश्तेदार विशाल उनके घर पर आया। यहां उसका छात्रा से परिचय हो गया। 2 जून की दोपहर वह अपनी सहेली के साथ इलाके के गार्डन में गई। गार्डन से लौटते समय रास्ते में विशाल मिला। उसने छात्रा को पास बुलाया। छात्रा कुछ समझ पाती इससे पहले वह एक बंद दुकान में लेकर चला गया। यहां उसके साथ जबरदस्ती की। फिर धमकी देकर कहा कि किसी को यह बात बताई तो ठीक नहीं होगा। इसके बाद छात्रा ने डर के चलते किसी को कुछ नहीं कहा। लेकिन आरोपी फिर से अपने पास बुलाने के लिये परेशान करने लगा। छात्रा ने यह बात अपने पिता और मां को बता दी। इसके बाद पुलिस ने आरोपी पर केस दर्ज कर उसे हिरासत में ले लिया है।

रालामंडल में रेव पार्टी, नशे में मिली लड़कियां

नशा मिला पर मामूली कार्रवाई; फार्म हाउस पर पहुंचे एसीपी

इंदौर (नप्र)। इंदौर के रालामंडल इलाके में शनिवार देर रात एक रेव पार्टी चल रही थी। सूचना मिलते ही आजाद नगर एसीपी आशीष पटले अपनी टीम के साथ पहुंचे और दबिश दी। यहां सौ से ज्यादा लड़के-लड़कियां नशा कर रहे थे। मौके से नशे की सामग्री भी जब्त की गई है। जिसे लेकर अफसरों ने बड़ी मुहिम छेड़ रखी है। सूत्रों का दावा है कि देर रात राजनीतिक दबाव के कारण कुछ युवक-युवतियों को बिना कार्रवाई के छोड़ दिया। इस मामले में धर्मेन्द्र पुत्र जुगलकिशोर निवासी महालक्ष्मी नगर और हर्ष पुत्र हेमंत सुगंधी निवासी श्रीराम इनक्लेव निवासी नानाखेड़ा पर शराब एक्ट को लेकर कार्रवाई की गई।

कई को दबाव में छोड़ना पड़ा

जानकारी के मुताबिक एसपी आशीष पटेल के पास रात में ही कई राजनीतिक से जुड़े लोगों के कॉल आने लगे। इसके चलते

रात में युवक युवतियों को बिना कार्रवाई के छोड़ दिया गया। इतनी बड़ी संख्या में इकट्ठा होकर रेव पार्टी की जानकारी पुलिस को भी नहीं लगी।

संपादकीय

अल्पसंख्यक मुक्त एनडीए

अठारहवीं लोकसभा में भले सभी धर्मों के सांसद हों, लेकिन सत्तारूढ़ एनडीए इस बार लगभग अल्पसंख्यक मुक्त हो गई है। चुनाव में जीते हुए एनडीए के सांसदों में कोई भी मुस्लिम, ईसाई या सिख सांसद नहीं है। केवल एक बौद्ध और एक जैन सांसद जरूर है। यह स्वस्थ लोकतंत्र की दृष्टि से ठीक नहीं है। एनडीए के लोकसभा में कुल 293 सांसद हैं। इसके विपरीत विपक्षी इंडिया गठबंधन में भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए की तुलना में नई लोकसभा में इंडिया ब्लॉक के 235 सांसदों में 7.9 प्रतिशत मुस्लिम, 5 प्रतिशत सिख और 3.5 प्रतिशत ईसाई सांसद हैं। इस बार चुनाव में भाजपा ने एक मुस्लिम प्रत्याशी डॉ. अब्दुल्ल कुट्टी को केरल से उतारा था, लेकिन मुसलमानों ने उन्हें वोट नहीं दिए और वो तीसरे नंबर पर रहे। जदयू ने कुछ मुसलमानों को टिकट दिए थे, लेकिन वो हार गए। इसकी वजह मुसलमानों की टेक्टिकल वोटिंग थी। मुसलमानों ने हर उस पार्टी के प्रत्याशी को वोट दिया, जो भाजपा या फिर एनडीए गठबंधन के उम्मीदवार को हरा सकता था। मीडिया में छपे विश्लेषण के मुताबिक वर्तमान में एनडीए के 33.2 प्रतिशत सांसद उच्च जातियों से, 15.7 प्रतिशत मध्यवर्ती जातियों से और 26.2 प्रतिशत अन्य पिछड़ी जातियों से हैं, लेकिन इनमें से कोई भी मुस्लिम, ईसाई या सिख समुदाय से नहीं है। जबकि राजनीतिक वैज्ञानिक गिल्स वर्नियर्स के विश्लेषण के अनुसार इंडिया ब्लॉक के 235 सांसदों में से मुस्लिम 7.9 प्रतिशत, सिख 5 प्रतिशत और ईसाई 3.5 प्रतिशत हैं। निचले सदन में इंडिया ब्लॉक के सांसदों में उच्च जातियां, मध्यवर्ती जातियां और ओबीसी क्रमशः 12.4 प्रतिशत, 11.9 प्रतिशत और 30.7 प्रतिशत हैं। नई लोकसभा के लिए चुने गए 24 मुस्लिम सांसदों में से 21 इंडिया ब्लॉक से हैं। इनमें कांग्रेस के सात, तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के पांच, समाजवादी पार्टी (एसपी) के चार, इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग (आईयूएमएल) के तीन और जम्मू-कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के दो सांसद हैं। शेष तीन मुस्लिम सांसदों में ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के प्रमुख और हैदराबाद से पांच बार के सांसद असदुद्दीन ओवैसी और दो निर्दलीय शामिल हैं। बारामुला में अब्दुल रशीद शेख या 'इंजीनियर रशीद' और लद्दाख में मोहम्मद हनीफा। चुनाव में 11 प्रमुख दलों ने कुल 82 मुस्लिम उम्मीदवारों को मैदान में उतारा था, जिनमें से 16 ने जीत दर्ज की। 82 में से पांच एनडीए के घटक दलों द्वारा मैदान में उतारे गए, जिनमें से एक भाजपा का था। भाजपा का मुसलमानों के प्रति रवैया इसी बात से समझा जा सकता है कि जुलाई 2022 में मुख्तार अब्बास नकवी का कार्यकाल खत्म होने के बाद, नरेंद्र मोदी की मंत्रिपरिषद में मुस्लिम समुदाय से कोई भी व्यक्ति नहीं है। केरल के अलावा, भाजपा और उसके सहयोगियों को पूर्वोत्तर के ईसाई बहुल राज्यों, खासकर नागालैंड और मेघालय में भी झटका लगा। एनडीए के लिए, पूर्वोत्तर में एक मात्र अपवाद अरुणाचल प्रदेश था, जहां उसने न केवल राज्य की दो लोकसभा सीटें जीतीं, बल्कि एक साथ हुए विधानसभा चुनावों में सत्ता में भी वापसी की। मणिपुर में आदिवासी ईसाइयों की नाराजी के चलते राज्य में भाजपा को एक भी लोकसभा सीट पर जीत नहीं मिली। मोदी 2.0 में जॉन बारला जो 2019 में पश्चिम बंगाल की अलीपुरद्वार सीट से लोकसभा के लिए चुने गए थे, मोदी की मंत्रिपरिषद में एक मात्र ईसाई मंत्री थे। इस बार, भाजपा ने पंजाब में छह सिख उम्मीदवारों को मैदान में उतारा : पटियाला में परनीत कौर; बठिंडा में परमपाल कौर सिद्धू; लुधियाना में रवनीत सिंह बिट्टू; अमृतसर में तरनजीत सिंह संधू; फिरोजपुर में राणा गुरमीत सिंह सोढ़ी; और खडूर साहिब में मंजीत सिंह मन्ना। लेकिन इनमें से कोई भी नहीं जीत सका। हालांकि मोदी मंत्रिमंडल में सिख प्रतिनिधियों को शामिल करने की संभावना है।

नजरिया

रघु ठाकुर
लेखक समाजवादी विचारक हैं।

मिलावट यानि धीमा जहर

वैसे तो इस समय देश में लगभग इंसान के आसपास के सभी प्रकार की उपभोग की चीजों में और वातावरण में जहर फैला हुआ है। जल हो, वायु हो या कोई और यहां तक कि खान-पान के पदार्थों में सब्जियों, फलों आदि में भी एक प्रकार से जहर परोसा जा रहा है। इंसान का लालच इतना बढ़ गया है कि वह अपने लाभ के लिए मानवता की हत्या करने को तत्पर है। वह फलों या सब्जियों या खाद्यान्नों की पैदावार को बढ़ाने के लिए, उनकी साइज बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार की दवाओं, रासायनिक खादों और इंजेक्शंस का प्रयोग कर पैदावार की मात्रा बढ़ा रहा है। यह सब एक प्रकार का जहर परोसने जैसा ही है। फिर इसके बाद भी देश में खाद्यान्न सामग्रियों में होने वाली मिलावट एक बड़ी चिंता का विषय है, क्योंकि वह तो सीधे ही इंसान के शरीर में जाकर उसे विषाक्त और बीमार बनाती है। आज लगभग जितने भी खाद्य पदार्थ हैं उन सभी में आज मिलावट हो रही है। वह दूध हो या घी या कोई अन्य खाद्य पदार्थ। दूध में केवल पानी ही नहीं बल्कि दूध की मात्रा को बढ़ाने के लिए और उसे गाढ़ा बनाने के लिए कई प्रकार के पाउडर डाले जाते हैं जो शरीर के लिए अस्वास्थ्य कर होते हैं। घी में उबले आलू मिला दिए जाते हैं और उन्हें घी के नाम पर बेच दिया जाता है। मध्य प्रदेश के ग्वालियर चंबल संभाग व राजस्थान के कई इलाकों में 1980 से 90 के दशक में इस मिलावटी घी के व्यवसाय ने बड़ा जोर पकड़ा और सारे देश में मुरैना घी के नाम पर मिलावटी घी बिकने लगा।

खरीददार सोचता है कि यह जो पैकेट पर लिखा हुआ है यह सच है और इससे जो सामान मिल रहा है वह शुद्ध है। परंतु उसे नहीं पता रहता कि यह रैपर और पैकेट दोनों ही नकली है। इसीप्रकार खाद्यान्न के क्षेत्र में यहां तक कि दाल-चावल, गेहूं इत्यादि में भी मिलावटखोरी है। व्यापारी तबके के कई लोग इन खाद्यान्नों में मिट्टी मिला देते हैं और वजन बढ़ा देते हैं।

इन सब मिलावटों से कितने प्रकार की बीमारियां हो रही हैं, कितनी मौतें हो रही हैं इसका कोई अध्ययन अभी तक विधिवत नहीं हुआ है। यह कठिन कार्य भी है क्योंकि उपभोक्ता भी कैसे समझ पाएं कि इस मिलावट से क्या नुकसान हो रहा है। वह तो सोचता है कि हमने नामधारी दुकान से ब्रांडेड सामान लिया है और इसे खाने से कोई नुकसान नहीं हुआ है। वह अपनी बीमारी के लिए अलग प्रकार के कारण खोजता है। कोई डॉक्टर भी उसे नहीं बता पाता और वह बीमारी बढ़ती जाती है।

अब इसे नियंत्रित करना लगभग सभी संस्थाओं के लिए कठिन हो रहा है। जो धर्म बेहतर इंसान को गढ़ने का काम करता था, अपराध और लालच से इंसान को मुक्त करने का प्रयास करता था वह धार्मिक कार्य अब स्वतरू अपराध के पैसे से किया जा रहा है। यही मिलावटी लोग बड़ी-बड़ी कथाएं कराते हैं, भंडारे करता हैं, सैकड़ों हजारों लोगों को खाना खिलाते हैं और दानवीर और धर्मवीर की पदवी पा लेते हैं।

प्रचार तंत्र इन मिलावटियों से हर तीज त्यौहार पर विज्ञापन लेता है और उनके गुण गाता है। यहां तक कि झूठ जानकारी देने वाले विज्ञापन बड़े-बड़े अखबारों में छप जाते हैं। अभी हाल में सारी दुनिया ने सुना व देखा है कि देश में पतंजलि ने जो बाबा रामदेव और आचार्य बालकृष्ण की उत्पादन फैक्टरी है, ने अपने उत्पादों के बारे में झूठे विज्ञापन छपवाए। कोरोना के काल में झूठे विज्ञापन छपे जिनमें यह कहा गया कि बाबा रामदेव की इन दवाओं से कोरोना भी ठीक हो सकता है। और यहां तक कि कैंसर जैसे मरीजों का इलाज भी हो सकता है। यह विज्ञापन झूठे थे और जब उसकी जांच हुई तथा सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई में आई तब सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों ने बाबा रामदेव को कहा कि वह अपने झूठ के लिए सार्वजनिक क्षमा याचना करें। पहले तो बाबा रामदेव ने सेवा के नाम का नाटक रचा और सर्वोच्च न्यायालय को प्रभावित करने का प्रयास किया परंतु जब सर्वोच्च न्यायालय ने उनसे साफकह दिया कि आपको या तो माफी मांगना होगी या फिर दंड सहना होगा, तब जाकर बाबा रामदेव और आचार्य बालकृष्ण ने अखबारों में माफी के विज्ञापन दिए।

परंतु ये क्षमा याचना के विज्ञापन इतने महत्वहीन स्थान पर और छोटी लिखाई में लिखवाये गए थे कि वह पढ़ने में भी सुलभ नहीं थे। तब सुप्रीम कोर्ट ने फिर बाबा रामदेव व आचार्य बालकृष्ण से कहा कि जिस प्रकार आपने बड़े-बड़े विज्ञापन प्रचार में छपाये हैं ठीक वैसे ही विज्ञापन माफी मांगने के छपने चाहिए अन्यथा सजा काटने को तैयार रहें और तब लाचार होकर कुछ बड़े अखबारों में प्रमुखता से और स्पष्ट दिखने वाले विज्ञापन बाबा रामदेव को छपाने पड़े।

सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि जो सेलिब्रिटी अपने नाम का प्रयोग विज्ञापन करने के लिए सहमति देते हैं, अगर विज्ञापन झूठा साबित होगा तो वह भी सजा के पात्र होंगे। यह एक अच्छा निर्णय सुप्रीम कोर्ट ने किया। यह जो तथाकथित सेलिब्रिटी हैं यह सब पैसों में विज्ञापन की अनुमति देते हैं चाहे वह हीरो-हीरोइन हों, क्रिकेट के खिलाड़ी हों, बाबा या साधु हों या अन्य प्रकार के लोग हों।

पता नहीं भारत सरकार के नियंत्रकों के दिमाग में या कार्यसूची में यह विषय क्यों नहीं है? जबकि यूरोप, अमेरिका आदि में अब मिलावट को एक गंभीर अपराध माना गया है। एक तो उनके यहां आबादी कम है दूसरे तकनीक की जानकारी के माध्यम ज्यादा है। और उन्होंने एक सफल तंत्र विकसित कर लिया है जो मिलावटों को रोकने में सफल है और मिलावटियों को दंड देने में कारगर साबित हो रहा है। अगर भारत में इसका अध्ययन किया जाए तो शायद कुछ अपवाद स्वरूप ही घटनाएं मिलेगी जहां मिलावटियों को कोई दंड मिल पाया हो। मैं भारत सरकार को सलाह दूंगा कि-

1- खाद्य सामग्री के मिलावट और उसमें मिले हुए जहरीले सामान का इंसान के शरीर पर क्या असर होता है इसका चिकित्सीय और वैज्ञानिक अध्ययन कराया जाए। ताकि जो क्षति होती है उसका आंकलन हो सके और तदअनुसार क्षतिपूर्ति की भी गणितीय जानकारी हो सके।

2-मिलावट के लिए गैर जमानती अपराध बनाया जाए और न्यूनतम दस साल की सजा से लेकर मृत्युदंड जैसी सजा का प्रावधान किया जाए। अगर एक व्यक्ति की हत्या करने वाला मृत्युदंड का पात्र होता है तो हजारों, लाखों के जीवन को अपने मिलावटी सामान से क्षति पहुंचाने वाला और मारने वाला तो हजारों, लाखों हत्याओं का जिम्मेदार है इसलिए अधिकतम सजा मृत्युदंड होना चाहिए।

3- मिलावट के मामलों में फैसला न्यायपालिका को अधिकतम एक माह में करने के लिए कानून बने और जो तकनीकी या मशीन की जांच है उसी को प्रमाण मान कर फैसला दिया जाए। क्योंकि गवाहों के नाम पर सुनवाई को सालों साल लटकाया जाता है और फिर अपराधी छूट जाते हैं।

4-जितने भी उत्पादक वितरक यानी बेचने वाले लोग हैं इनका पंजीकरण अनिवार्य हो ताकि इनकी जांच नियमित हो सके। और उनकी भी जवाबदारी तय हो जो दुकानदार मिलावट के सामान बेचता है वह मिलावट से अज्ञानी नहीं होता बल्कि लाभ के लिए इसका हिस्सेदार बनता है। जब वह 1200 रुपए प्रति किलो का घी उत्पादक से थोक में 600 रुपए प्रति किलो के हिसाब से खरीदता है तब क्या वह नहीं जानता होगा कि इस सस्ता होने का कारण मिलावट है। जिस प्रकार एक उत्पादक एक एक क्विंटल घी से 12000 से 25000 रुपए अतिरिक्त कमाता है तो उसी प्रकार बेचने वाला भी 6000 से 12000 रुपए अतिरिक्त कमा लेता है।

जिन दुकानदारों के उत्पादक के पंजीयन हो उनकी उस समय की संपत्ति का भी ब्यौरा शपथ पत्र पर लिया जाए, ताकि बाद में एक तुलनात्मक अध्ययन हो सके। अगर मिलावट न भी पकड़ी जा सके तो उनकी संपत्ति बढ़ने के स्रोत क्या हैं और इसके आधार पर उनके खिलाफ कार्रवाई हो सके।

इसके अलावा एक और बड़ी समस्या है कि मिलावट को रोकने के लिए और मिलावट के मामलों में दंड देने के लिए जो सरकार का या न्यायिक तंत्र है। वह भारत जैसे भारी आबादी वाले डेढ़ अरब के देश में नाकाफी है। सरकार को मिलावट विरोधी कानून में यह भी प्रावधान करना चाहिए कि जो स्थानीय स्तर के सामाजिक कार्यकर्ता हैं, सेवानिवृत्त न्यायाधीश हैं, ऐसे लोगों की सेवाएं भी मामूली से शुल्क पर सरकार ले। उनके इलाकों में प्रचार हो ताकि लोग उन तक पहुंच सकें। उनकी भी संपत्तियों की जांच उनके मनोनयन के पहले हो ताकि वह भी जांच के रडार पर रह सकें और इसी प्रकार सेवानिवृत्त जजों के उपयोग से न्यायिक प्रक्रिया को विकेंद्रित कर दिया जाए ताकि शीघ्र और प्रभावकारी दंड मिल सके।

इसके लिए एविडेंस एक्ट में जो सुधार करना हो उसे कानूनी तौर पर किया जाए ताकि एविडेंस एक्ट का बहाना बनाकर अपराधी बरी ना हो सके। अगर सरकार यह अभियान शुरू नहीं करती तो भविष्य और चिंताजनक होने वाला है, क्योंकि मिलावट से उत्पन्न काला धन राजनीति में जाता है। राजनीति का संरक्षण पाता है और राजनीति में विचारहीनता व अपराध की मिलावट हो जाती है। इससे राजनीति प्रदूषित होती है, भ्रष्ट होती है और एक बड़ा तंत्र अपराधियों का उभरता है।

मैं धर्म गुरुओं से भी अपील करना चाहूंगा कि वह अपनी कथाओं, उपदेशों के आयोजन में शामिल होने के पहले दानदाताओं के चरित्र, आचरण, अर्थ उपार्जन की शुद्धता के बारे में जानकारी प्राप्त करें और तभी सहमति प्रदान करें वरना धर्म का धार्मिक सिद्धांत इंसान की मिलावट से हत्या का कारक बन जाएगा और कोई ऐसा धर्म मानवता के मतलब के लायक नहीं रह पाएगा।

आम जनता को भी जागरूक होना पड़ेगा और मिलावट के मामलों को लेकर अपनी शिकायतों में ज्यादा तेजी लानी होगी।

इसमें भी दो सुधार आवश्यक हैं-

1- सामान के ऊपर जो पैकिंग की जाती है उसका विवरण हिंदी या क्षेत्रीय भाषाओं में क्षेत्र के अनुसार होना चाहिए और जो अक्षर छपे हैं, बड़े हों ताकि पढ़े जा सके। जब व्यक्ति कुछ सामान खरीदने जाता है तो वह सामान्य तौर पर पैकेट के ऊपर छपी सूचना व सावधानियां को आसानी से पढ़ सके।

2-दूसरा, शिकायतों को करने का तंत्र भी आसान बनाया जाए। यद्यपि उपभोक्ता फोरम है, उपभोक्ता अदालतें हैं, परंतु इनमें जाकर न्याय पाना बहुत खर्चीला, समय की बर्बादी व कष्टकारी है। एक उपभोक्ता जो 20 रुपए का सामान खरीदकर या 50-100 रुपए का सामान खरीदकर मिलावट की शिकायत करने जाएगा उसे अपने जीवन के कई दिन केवल शिकायत करने में उपभोक्ता फोरम या उपभोक्ता अदालतों में चक्कर काटने में लगाने होंगे,फिर वकीलों को फीस देनी होगी। व्यक्ति सोचता है की 50-100 की मिलावट को बचाने के नाम पर इतना समय और 5-10 हजार रुपए का खर्च करने से बेहतर है कि चुपचाप बैठ जाए। अतरू सरकार को चाहिए की मिलावटों के मामलों को लेकर ऑनलाइन शिकायत, फॉर्म और न्यायपालिका में आनलाइन कार्यवाही की व्यवस्था हो। ऑनलाइन जांच और ऑनलाइन सुनवाई हो और ऑनलाइन गवाही भी हो, ताकि व्यक्ति शिकायत करने से भयभीत न हो। वरना आज शिकायत करना घाटे का सौदा है, अपमानित होने का सौदा है, और बाद में हंसी का पात्र बनने का काम है, क्योंकि मिलावटी कहेंगे कि कर ली करवाई। क्या मिला?

अब इन सब सवालों को सरकार को हल करना होगा अगर वह मिलावटों को रोकना चाहती है। जनमत को भी इसके लिए आगे आना होगा, अपने वोट को आधार बनाना होगा। अपनी जेब का पैसा, अपने स्वास्थ्य और अपना जीवन, अपने परिवार का जीवन बचाने के लिए स्वतः भी सक्रिय होना होगा।

डेक्कन - डायरी

डॉ. सुधीर सक्सेना
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

आम चुनाव में हुई 'बाबू' की वापसी

बाबू' लौट आये हैं। बाबू यानि नारा चंद्रबाबू नायडू गारु। वह न सिर्फ आंध्र प्रदेश में सत्ता में लौटे हैं, बल्कि उन्होंने निवर्तमान मुख्यमंत्री जगनमोहन रेड्डी के नेतृत्व की याईएसआर कांग्रेस पार्टी को सूबे में चौतरफा धूल चटा दी है। सन् 2019 में वह मुष्टिका-प्रहारों से रिंग की रस्सियों से जा टिके थे, लेकिन वह स्वयं को युक्तिपूर्वक बखूबी बचा ले गये। मुहावरे में कहे तो ही बाउँस्ड बैक। सन् 2024 के सद्य-संपन्न चुनाव में उन्होंने अपने प्रतिद्वंद्वी जगनमोहन को चित तो किया ही लोकसभा चुनाव में 'क्वांटम लीप' की बदौलत वह राष्ट्रीय राजनीति में 'किंग मेकर' बनकर उभरे हैं। नरेन्द्र मोदी के चुनावी अश्व मेध की घोड़ों को गंगो-जमुन के दोआबे में राहुल-अखिलेश की जोड़ी ने ऐसा पकड़ा कि 272 का अंक बीजेपी की हथेलियों से छिटक गया। अब स्थिति यह है कि नरेन्द्र मोदी को तीसरी पारी के लिए 'बाबू' के समर्थन की दरकार है। अवाम ने उनकी 'अबकी बार, चार सौ पार' की गफलत दूर कर दी है। होगा वही जो परोक्ष रूप से आरएसएस और प्रत्यक्षतः नायडू-नीतीश की जुगल जोड़ी चाहेगी।

यह पहला मौका नहीं है कि नायडू गारु को राष्ट्रीय राजनीति में भूमिका निभाने का मौका मिल रहा है। दरअसल, नायडू का राजनीतिक करियर अदम्य संकल्प, मुसलसल जद्दोजहद, आहटों को बूझने और मौकों को भुनाने की मिलीजुली गाथा है। उनके खाते में करीब पांच दशकों का राजनीतिक अनुभव है। यह अनुभव ही इनकी पूंजी है और इसी पूंजी ने उन्हें समकालीन राजनीति के कुशल और सयाने योद्धा में बदल दिया है। अपने इसी सयानेपन से वह ऐसे राजनीतिक कीमियागर के तौर पर उभरे हैं, जिसकी बंधी हुई मुट्ठियों के भीतर की चीज का अंदाजा लगाना औरों के लिए मुश्किल हो गया है। नायडू की तेलुगु देशम पार्टी भाजपानीत एनडीए का हिस्सा है। नायडू ने भारतीय जनता पार्टी और पवन - कल्याण की जनसेना पार्टी (जेएसपी) से गठबंधन याईएसआर कांग्रेस पार्टी को शिकस्त देने के मकसद से चुनाव की पूर्व वेला में किया था। इस गठबंधन के लिए वार्ताओं के कई दौर चले। धागे उलझे और उनमें गांठें भी पड़ीं, लेकिन अंततः बात बन गयी। मोदी की राष्ट्रीय छवि, पवन कल्याण के ग्लैमर और तेदेपा की रीतियों- नीतियों की मिली-जुली रणनीति ने जगनमोहन और उनकी पार्टी को चारो खाने चित्त कर दिया। गौरतलब है कि नायडू ने यह सब अपनी शर्तों पर किया। उन्होंने सीटों पर कोई 'कंप्रोमाइज' नहीं किया। वह हर सूं बड़े भाई की भूमिका में रहे। आंध्र में लोकसभा की कुल जमा 25 सीटों में से उन्होंने बीजेपी को फकत छह सीटें दीं और 17 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे। 17 में से 16 सीट उनकी पार्टी के खाते में आयी और बीजेपी के आधे उम्मीदवार जीते और आधे उम्मीदवार हारे। पिछले चुनाव में 22 सीटों पर जीत का परचम लहराने वाली याईएसआर कांग्रेस पार्टी अंक तालिका में चार पर सिमट गयी। उसे 18 सीटों का घाटा हुआ। इस चुनाव में दो और बातें दिलचस्प रहीं। कासु बह्मानंद रेड्डी, नीलम संजीव रेड्डी और पामुलपर्ती वेंकट नरसिंहाराव के गृह प्रदेश में कांग्रेस का खाता भी नहीं खुला। वह सिफर पर अटकी रही। सूबे में कांग्रेस की मुखिया और दिग्गज नेता (एस) राजशेखर रेड्डी की बिटिया शर्मिला कडप्पा से चुनाव हार गयीं। वह अपने भाई जगन से पिता की विरासत छीनने में नाकामयाब रहीं। शर्मिला की मां विजयम्मा की अपील भी बेअसर रही। कडप्पा में विजयी याईएसआर कांग्रेस के विजयी याईएस अविनाश रेड्डी के निकटतम प्रतिद्धन्दी रहे तेदेपा के सी भूपेश सुब्बेराम रेड्डी। शर्मिला तीसरी पायदान पर रहीं। इस चुनाव की दूसरी खूबी यह रही कि लोकप्रिय सिने-कलाकार पवन कल्याण की पार्टी जेएसपी की दोहरी सफलता मिली। जेएसपी को यह अभूतपूर्व सफलता नायडू गारू की बदौलत मिली। पिछले विधानसभा चुनाव में जेएसपी का सिर्फ एक विधायक चुना गया था। स्वयं पवन कल्याण असेंबली का चुनाव हार गये थे। लेकिन इस बार बाबू-चलि त्रोइका ने कमाल कर दिया। जेएसपी ने लोकसभा की सिर्फ दो सीटों पर चुनाव लड़ा। दोनों सीटों काकीनाडा और मछलीपटनम- से उसके प्रत्याशी जीते। जन-समर्थन इस कदर छप्पर फाड़कर बरसा कि उसके सभी 21 प्रत्याशी विधानसभा के लिये चुन लिये गये। जेएसपी की शत-प्रतिशत विरल सफलता अकेले पवन कल्याण के बूते की बात न थी। उसमें ईंट-गारा बाबू के राजनीतिक कौशल का लगा।

आंध्र प्रदेश में इस बार मतदान का प्रतिशत अच्छा रहा। 81.86 फीसद। जगन की पार्टी ने केवल अरकु, कडप्पा, तिरुपति और राजमपेट में कामयाबी पाई और बाबू की बगलगीर बीजेपी ने राजमुंद्री, नरसापुरम और अंकापल्ली में जीत दर्ज की। 'कम बैंक' के मिशन की बदौलत तेदेपा ने विशाखापटनम, काकुलम, विजयनगरम, एलुरु, अमलापरम, विजयवाड़ा, चित्तूर, नेल्लोर, हिंदू पुर आंगोल, नंदयाल, कुर्नूल, अनंतपुरम, बपतला, नरसारावपेट और गुंटूर के संसदीय किले फतह कर लिये। असेंबली के नतीजे भी उत्साहवर्धक रहे। 175 विधायकों के सदन में तेदेपा के विधायकों की संख्या 135 तक पहुंची तो सहयोगी दलों- बीजेपी और जेएसपी के क्रमशः आठ और इक्कीस एमएलए चुने गये। परिदृश्य स्पष्ट है। क्रिस्टल क्लियर। किसी मणिभ की नाई पारदर्शी। बाबू की जद्दोजहद रंग लाई। वस्तुतः बाबू की इस दशक के शुरूआती दशक की यात्रा संकल्प से सिद्धि की अनूठी यात्रा रही है। वर्ष 2021 सदन में परिजनों के खिलाफ अनुचित और अशोभन टिप्पणी ने उन्हें इस कदर आहत किया था कि उन्होंने इस संकल्प के साथ सदन से बहिर्गमन किया था कि वह सीएम बनकर ही सदन में लौटेंगे। उनका संकल्प पूरा हुआ। जनता ने उनकी शपथ की लाज रखी, लेकिन उनका समय खराब गुजरा। सरकारी एजेंसियां उनके पीछे लगी। स्किल डेवलपमेंट घोटाले में सीआईडी ने पिछले साल नौ सितंबर को तड़के गिरफ्तार कर लिया। हत्भाग्य नायडू ने करीब दो महिने राजमहेंद्रवरम सेंट्रल जेल में बिताये। अंततः कोर्ट में दखल से उन्हें कारा से मुक्ति मिली।

नायडू ने अपना राजनीतिक करियर सन् 70 के दशक में यूथ कांग्रेस से शुरू किया था। वह वेंकटेश्वर यूनिवर्सिटी में छात्र संघ के अध्यक्ष रहे। अर्थशास्त्र में पीएचडी बाबू सन् 80 के दशक में नंदमूरि तारक रामाराव की पार्टी तेलुगू देशम से जुड़ गये, जिनकी पुत्री भुवनेश्वरी से उन्होंने विवाह किया था। सन् 1978 में पहली बार विधानसभा के लिए निर्वाचित नायडू सन् 1985 में श्वसुर एनटीआर के तख्तापलट के बाद पहली दफा सीएम बने। सन् 1999 में वह दूसरी बार और सन् 2014 में तीसरी बार मुख्यमंत्री बने। कुल जमा तेरह साल सीएम रह चुके नायडू अब चौथी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे। यकीनन यह एक विरल कीर्तिमान है और नायडू गारु की कमीज पर चमकीला तमगा।

सियासत में उनकी ताजातरीन सफलता निश्चित ही उनका ऐसा, प्रभामंडल सिरजती है, जिसकी चमक दिल्ली में महसूस की जा रही है। नायडू जुझारू नेता हैं; एक हद तक जिद्दी भी। वह न मुद्दे छोड़ते हैं और न अपना हठ। गाहे-बगाहे हालात को देखकर वह चीजों को मुल्तवी भले ही कर दें। आंध्र को स्पेशल राज्य का दर्जा देने की मांग अभी भी दिल्ली दरबार में लम्बित है। अब नये हालात में वह इस अर्जी पर फौरन फैसला चाहेंगे। जहां तक बीजेपी से रिश्तों की बात है, उससे उनके रिश्ते बनते-बिगडते रहे हैं। वह मुस्लिमों को चार प्रतिशत आरक्षण के हिमायती हैं। सन 2002 में उन्होंने गुजरात में दंगों के खिलाफ आवाज उठाई थी। केंद्र की राजनीति में वह अपना रुख समय-समय पर बदलते रहे हैं। वह वक्त के तकाजे को बूझकर फैसले करते हैं और पैंतरे भी बदलते हैं। आसमान में बादलों को देख- कर वह तय करते हैं कि छतरी लेकर निकलना है या बरसाती ओढ़कर या फिर यात्रा स्थगित करनी है। वह विजनरी नेता हैं। उनके पास विकास का एजेंडा है और ब्लूप्रिंट भी। हैदराबाद में साइबराबाद बसाकर उसे आईटी की राजधानी बनाने की श्रेय उन्हें जाता है। आंध्र दस साल के प्रावधान के उपरांत अब राजधानी विहीन है। अमरावती उनका ख्वाब है। अब वह सियासी बियाबां अथवा नेपथ्य से निकलकर मंच के बीचों-बीच रोशनी के वृत्त में हैं। उन्हें अनेक भूमिमाएं एक साथ निभानी हैं। देखना दिलचस्प होगा कि वह आंध्र के विकास की इबारतें लिखने के साथ-साथ राष्ट्रीय राजनीति के रंगमंच पर पटकथा को कितना प्रभावित करते हैं?

निंदनीय

प्रो.संजय द्विवेदी
लेखक वरिष्ठ पत्रकार और स्तंभकार हैं

'सर्वमत' व 'सुशासन' से बनेगा विकसित भारत

लोकसभा चुनाव में नरेन्द्र मोदी भले ही सीटों के मामले में अपने घोषित लक्ष्य से पीछे रह गए हों, किन्तु चुनौती स्वीकार करने की उनकी जिजीविषा स्पष्ट है। पिछले तीन दिनों से उनके भाषण, बाडी लैंग्वेज बता रही है कि वे राजग की सरकार को उसी अंदाज से चलाना चाहते हैं, जैसी सरकार वे अब तक चलाते आए हैं। सहयोगी दलों से मिली पूर्ण आश्वस्ति के पश्चात मोदी ने अपने नेता पद पर चयन के बाद 'बहुमत' से नहीं बल्कि 'सर्वमत' से सरकार चलाने की बात कही है। वैसे भी चंद्रबाबू नायडू तथा नीतिश कुमार की ज्यादा रूचि अपने राज्यों की राजनीति में हैं। इसलिए सीधे तौर पर दो बड़े सहयोगी दलों तेलुगु देशम और जनता दल (यूनाइटेड) से कोई तात्कालिक चुनौती नहीं है। इसके साथ ही 'सुशासन' मोदी, नायडू और नीतिश तीनों की प्राथमिकता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, पिछले 22 वर्षों से मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री जैसे पदों पर रहते हुए सरकारों का नेतृत्व कर रहे हैं। उनमें सबको साथ लेकर चलने की अभूतपूर्व क्षमता है। सुशासन और भ्रष्टाचार के विरुद्ध जीरो टालरेंस उनकी कार्यशैली है। यह बात उन्होंने इस बार भी स्पष्ट कर दी है। लंबे नेतृत्व अनुभव ने उनमें साथियों के प्रति सद्भाव और अभिभावकत्व भी पैदा किया है। उन्होंने यह भी कहा कि उनके लिए एनडीए का हर एक सांसद समान है। मोदी जब 2014 में प्रधानमंत्री बने तब यह बात काफी कही गई थी कि उन्हें दिल्ली की समझ नहीं है। विदेश नीति जैसे विषयों पर क्या मोदी नेतृत्व दे पाएंगे। जबकि पिछले 10 वर्षों में मोदी ने इन दोनों प्रारंभिक धारणाओं को खारिज किया। ऐसे में गठबंधन सरकार का नेतृत्व वे सफलतापूर्वक करेंगे, ऐसी उम्मीद की जानी चाहिए।

सत्ता के संकटों और सीमाओं के बाद भी नरेंद्र मोदी ने अपने विजन और नेतृत्व क्षमता से लंबी लकीर खींची है। गहरी राष्ट्रीय चेतना से लबरेज उनका व्यक्तित्व एनडीए की चुनावी सफलताओं की गारंटी बन गया है। अब जबकि एनडीए के लगभग 303 सांसद हो चुके हैं,तब यह मानना ही पड़ेगा यह सरकार आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और सामाजिक कल्याण की योजनाएं लागू करते हुए तेज़ी से आगे बढ़ेगी। अरूणाचल प्रदेश, उड़ीसा की राज्य सरकारें मोदी मैजिक का ही परिणाम है। केरल में खाता खोलने के साथ तेलंगाना, आंध्र और कर्नाटक के परिणाम दक्षिण भारत में भाजपा की बढ़ती स्वीकार्यता बताते हैं। इन परिणामों में नरेंद्र मोदी की छवि और उनका परिश्रम संयुक्त है।

उत्तर प्रदेश, राजस्थान,बंगाल और महाराष्ट्र से गंभीर नुकसान के बाद भी सबसे बड़े दल के रूप में भाजपा को जिताकर ले आना और एनडीए को बहुमत दिलाने में उनकी खास भूमिका है। एनडीए सांसद और सहयोगी दल भी मानते हैं उन्हें मोदी की छवि का फायदा अपने-अपने क्षेत्रों में मिला है। 10 साल के सत्ता विरोधी रूझानों के बाद भी अन्य क्षेत्रों में विस्तार करते हुए भाजपा और एनडीए अपनी सत्ता बचाने में कामयाब रहे, यह साधारण बात नहीं है।

राजग ने चुनावी जंग में मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश की सभी सीटें जीत लीं। बावजूद इसके अपराजेय समझे जाने वाले 'मोदी -योगी ब्रांड' को उत्तर प्रदेश में बहुत गहरा झटका लगा है। प्रधानमंत्री की वाराणसी में जीत के अंतर को भी विरोधी रेखांकित कर रहे हैं। अयोध्या की हार मीडिया की सबसे बड़ी खबर बन गयी है। जाहिर तौर पर इसे लोकतंत्र की खूबसूरती ही मानना चाहिए। इसलिए इसे जनादेश कहते हैं। आरक्षण और संविधान बदलाव के भ्रामक प्रचार ने जैसा उत्तर प्रदेश में असर दिखाया है , संभव है बिहार में चिराग पासवान और जीतनराम मांझी गठबंधन में न होते तो वहां भी ऐसा ही नुकसान संभावित था।

कांग्रेस और उसके गठबंधन को निश्चित ही बड़ी सफलता मिली है। इसके चलते संसद और उसके बाहर मोदी सरकार को चुनौतियां मिलती रहेंगी। विपक्ष का बढ़ा आत्मविश्वास क्या आनेवाले समय में सरकार के लिए संकट खड़ा कर पाएगा, इसे देखना रोचक होगा।

भारतीय लोकतंत्र वैसे भी निरंतर परिपक्व हुआ है। सर्वसमावेशी होना उसका स्वभाव है। 'सबका साथ, सबका विकास' ही मोदी मंत्र रहा है। बाद में मोदी ने इसमें दो चीजें और जोड़ीं 'सबका विश्वास और सबका प्रयास'। गठबंधन सरकार चलाने के लिए इससे अच्छा मंत्र क्या हो सकता है। मोदी और उनकी पार्टी ने विकसित भारत बनाने का कठिन उत्तरदायित्व लिया है, वे इस संकल्प को पूरा करने के लिए प्रयास करेंगे तो यही बात भारत मां के माथे पर सौभाग्य का टीका साबित होगी।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

सुरेश रायकवार
लेखक व्यंग्यकार हैं।

नेताओं की नजर में प्रजातंत्र की खूबसूरती

जहां प्रजा के द्वारा, प्रजा के लिए और प्रजा की ही शासन व्यवस्था हो उसे प्रजातंत्र कहा जाता है। चूंकि इस व्यवस्था में प्रजा ही शासक भी है और प्रजा ही शासित भी, इसलिए उसे शासन के लिए अपने बीच से ही शासन के लिए प्रतिनिधियों का चुनाव भी करना पड़ता है। प्रजातन्त्र में चुनाव एक पर्व होता है।

आपने हमारे नेताओं से अथवा टीवी समाचार वाचकों से कई बार सुना होगा 'यही तो प्रजातन्त्र की खूबसूरती है'। इस वर्ग द्वारा जिन घटनाओं को प्रजातांत्रिय खूबसूरती बताया जाता है उनमे से कुछइस प्रकार है-

जैसे प्रजातन्त्र के शासन प्रतिनिधियों (नेताओं) के लिए शिक्षित होना अनिवार्य नहीं होता अलबत्ता उनके सचिव और प्रशासनिक अधिकारियों का उच्च-शिक्षित या पढ़ा लिखा होना अपरिहार्य है। वैसे तो प्रजातन्त्र में प्रजा ही अपना शासक चुनती है किन्तु फिर भी जुगाड़ से, राजकीय व्यवस्था की तरह किसी एक ही परिवार की सत्ता सालों-साल जारी रह सकती है।

हमारे देश के प्रजातन्त्र की एक खूबसूरती यह भी है कि यहाँ संसद में कानून बनाया जाता है किन्तु वह कानून लागू होगा अथवा नहीं होगा इसका निर्धारण सामान्यतः विपक्षी नेताओं की अगुआई में जनता द्वारा धरना, प्रदर्शन, आंदोलन के माध्यम से सड़कों पर होता है, संसद सत्र-काल में नए कानून पर बहस करने के बजाय विरोध के नाम पर ये सांसद, संसद से बाहर आ जाते है।

जनता का तथाकथित प्रतिनिधि नेता कितना ही रिश्वतखोर, भ्रष्टाचारी या आपराधिक आचरण वाला ही क्यों ना हो, चाहे सजा के तहत जेल में ही बंद क्यों ना हो, वह चुनाव लड़ सकता है, जीत सकता है और जीतने के बाद वह जेल से मुक्त भी हो सकता है। यह भी हमारे प्रजातन्त्र की एक ब्यूटी है।

प्रजातन्त्र की इस खूबसूरती पर तो हर कोई मोहित है कि जिन्हे चुनाव में सत्ता के लिए भले ही बहुमत/मेंडेट नहीं मिला हो किन्तु वे भी जोड़-तोड़ करके सरकार बना सकते है। गठबंधन की सरकार में यदि स्पष्ट बहुमत नहीं हो तब छोटी-छोटी पार्टीयां किंग मेकर की भूमिका में आ जाती है और स्पष्ट जनादेश के अभाव में इन कम सीट वाली पार्टियों का महत्व बहुत बढ़ जाता है तथा ये बड़ी बड़ी पार्टियों से अपने मतलब की सौदेबाजी करने के लिए बड़ी ताकतवर हो जाती हैं।

हमारे देश के प्रजातन्त्र की इन्ही खूबसूरतियों में से एक का दर्शन आज दयाराम जी ने भी किया वे बड़े आश्चर्य चकित हुए जब कल शाम को उनके पड़ोसी नेताजी हमतुम पार्टी के टिकट पर चुनाव जीते, आज सुबह वे पाला बदल कर इंडिया पार्टी में गए और अब शाम को वे भारत पार्टी में शामिल होकर कल मंत्री पद की शपथ ले रहे है। दयारामजी से रहा नहीं गया तो वे पड़ोसी के पास पहुँच गए और बोले - क्या नेताजी आपने तो दल बदलने की भी हद कर दी ! दल बदल किया तो किया किन्तु जिस पार्टी के विरुद्ध आपने चुनाव लड़ा और जीते, अब उसी पार्टी को ज्वाइन भी कर लिया !

नेताजी बोले अब देखिये ना दयारामजी ! वो हमतुम पार्टी को तो बहुत ही कम सीट मिली है, इसका मतलब वहाँ हमारा कोई भविष्य नहीं था। इसलिए हम सुबह इंडिया पार्टी में शामिल हो गए किन्तु जब देखा कि उनका गठबंधन भी फेल हो गया है और भारत पार्टी की सरकार को बहुमत के लिए हमारे समर्थन की आवश्यकता थी तो हमने जनता की सेवा करने के उदेश्य से इसे ही उचित समझा।

दयारामजी बोले- किन्तु यह तो जनता के साथ सरासर धोखा है !

नेताजी ने जवाब दिया - दयारामजी यह धोखा नहीं है बल्कि इसे प्रजातन्त्र की खूबसूरती कहते है। जैसे प्रायवेट नौकरी में आजकल युवागण कंपनियाँ स्विच करते हैं वैसे ही नेतागण भी पार्टीयां स्विच करते रहते है। हमारा देश एक प्राचीन लोकतान्त्रिक देश है यहाँ का लोकतन्त्र बड़ा ही परिपक्व और मजबूत लोकतन्त्र है। इसे आप कैसा भी उपयोग करो, ये ना कभी टूटता है ना ही इसका कुछ बिगड़ता है। परिपक्व इतना हो गया है कि पहले तो मतदाता नेताओं के आश्वासन पर ही विश्वास करके वोट दे देता था किन्तु आजकल तो लिखित हस्ताक्षरित गारंटी के बिना वोट भी नहीं मिलता है।

इसका मतलब आगे आप रिश्वत भी लेंगे - दयारामजी ने प्रश्न किया।

रिश्वत लेना तो नेता का जन्मसिद्ध अधिकार है। अब हमें वेतन तो मिलता नहीं कि खर्चे चला लें, इसलिए रिश्वत से ही काम चलाना पड़ता है। महंगाई इतनी बड़ गई है कि आमसभा में भीड़ जुटाने के रेट भी आसमान छू रहे है - नेताजी ने खीसे निपोरते हुए कहा और दयारामजी के सामने मिठाई बढ़ा दी।

दयारामजी ने शर्माशर्मी पड़ोसी की मिठाई खाई और घर आकर खूबसूरत प्रजातन्त्र के सपने देखते हुए सो गए।

राजनीति

रमेश कुमार 'रिपु'

लेखक स्तंभकार हैं।

अबकी बार खत्म हुआ मोदी का एकाधिकार

अबकी सरकार में सियासी दलों के एजेंडे अपने-अपने हैं। सब अलग भी हैं। जुड़े भी हैं। दबंग चन्द्रबाबू नायडू मोदी के साथ हैं भी,नहीं भी हैं। नितिश ने मोदी का पैर छूकर सम्मान दिया मगर, कब पलट जाएंगे, इसका एहसास मोदी की मंडली को है। सभी छुट्टे हैं। पाला बदलने में एक मिनट की भी देरी नहीं करेंगे।लेकिन सुविधानुसार। सहूलियत के हिसाब से सांप सीढ़ी वाली राजनीति में अपने पासे फेंकेंगे। नीतिश और चन्द्रबाबू नायडू कब तक साथ रहेंगे, यह लोकतंत्र की सियासत का वक़्त भी नहीं जानता। कल तक मोदी बीजेपी के प्रधानमंत्री थे। अब एनडीए के प्रधान मंत्री रहेंगे।दरअसल सत्ता की थैली में चिल्हर ज्यादा हो गए हैं। आगे भी रहेंगे। इंडिया गठबंधन की थैली हो या फिर एनडीए की थैली। दोनों एक समान है।राष्ट्रीय रुतबे का अवसान हो रहा है तेजी से। दोनों हताश हैं। क्या कांग्रेस और क्या भाजपा। लेकिन सबकी अपनी-अपनी रणनीतियां हैं। इस बार विपक्ष पिछली दफ़ा से कहीं अधिक मजबूत है। वहीं मोदी का अबकी बार एकाधिकार भी खत्म हो गया। मजबूर हैं और रहेंगे। क्यों कि पेंच बहुत है। पैतरे बाजी भी अनगिनत। कहने को नौ जून को प्रधान मंत्री पद के शपथ तक और मंत्रिमंडल के गठन तक सभी जुड़े हैं।मगर अलग भी हैं।

शर्तो की राजनीति – कुछेक ऐसे सवाल है,जिनसे आज नहीं, तो कल रूबरू होना पड़ेगा। मोदी को। पूरे देश को। पूरे विपक्ष को। शर्तो की राजनीति या फिर कहें शर्तो की बुनियाद पर टिकी एनडीए की सरकार। एनडीए के सांसदों की बैठक में मोदी ने कहा, एनडीए की सरकार बनने जा रही है। इसके पहले 2014 और 2019 में बीजेपी की सरकार कहा था। अटल जी की सरकर की तरह मोदी की सरकार के दिन भी आ सकते हैं। कई दलों की बग्गी वाली सरकार, एक ही दिशा में कब तक चलेगी, मोदी भी नहीं जानते। क्यों कि मोदी कभी ऐसी राजनीति किये नहीं। गुजरात में मुख्यमंत्री थे,तब भी वो एकाधिकार की राजनीति किये हैं। पिछले दस साल में उन्होंने ऐसा कोई दल नहीं,जिसे ठगा नहीं। और कोई ऐसा दल नहीं,जिसे खत्म करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। गोवा,महाराष्ट्र,उत्तराखंड और मध्यप्रदेश को कोई भूला नहीं है। गिरते शेयर बाजार और गिरते रुपए की तरह इस चुनाव में मोदी की साख गिरी है। पिछली बार छह लाख वोट से जीतने वाले मोदी इस बार डेढ़ लाख वोट पर सिमट गए। शिवराज सिंह चौहान को मध्यप्रदेश का मुख्यमंत्री बनाने की बजाए किनारे कर दिया था, वो आठ लाख बीस हजार वोट से जीते। जाहिर सी बात है, भाजपा के अंदर इस चुनाव ने कई खेमे बनने की रेखा खींच दी है। आज नहीं तो कल दिखेगी।

मनमाफिक मंत्री पद चाहिए – नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री के पद की शपथ लेने से पहले ही सियासी उथल पुथल की झलक दिखने लगी है। नीतिश और चन्द्रबाबू नायडू दोनों को अपने-अपने प्रदेश के लिए विशेष दर्जा चाहिए। उनकी अपनी सियासी शर्त भी है। चन्द्रबाबू नायडू को लोकसभा का अध्यक्ष पद चाहिए। वो जानते हैं, मोदी और अमितशाह का भरोसा नहीं। उनके सांसदों को कभी भी तोड़ सकते हैं। बीजेपी का स्पीकर होगा तो मोदी की ही सुनेंगे। जगन रेड्डी के चार सांसद बीजेपी की ओर जा रहे हैं, अभी से हल्ला है। नायडू को परिवहन मंत्रालय चाहिए। गृहमंत्रालय चाहिए। ताकि पुलिस और सीबीआई उनके साथ रहे। संभावना है कि नागरिक उड्डयन,इलेक्ट्रानिक,आईटी,शहरी विकास और स्टील मंत्रालय मिल सकता है। नितिश को रेल मंत्रालय और वित्त विभाग चाहिए। ताकि ईडी उनके पास रहें। पंचायती राज ग्रामीण विकास,कृषि जैसे मंत्रालय मिल सकता है। एनडीए के घटक दलों में नायडू और नीतिश इस बार मोदी का एकाधिकार खत्म करने वाले विभाग चाहते हैं। इनकी पार्टी के सांसदों को कौन सा मंत्री पद मिलता है,दो तीन दिन बाद पता चलेगा। वैसे मोदी नहीं चाहेंगे कि रक्षा,वित्त,गृह और विदेश मंत्रालय एनडीए के दलों के पास हो। बीजेपी के प्रवक्ताओं की ओर से कहा जा रहा है,कि गठबंधन का प्रेशर बीजेपी नहीं लेगी। किसी सहयोगी की अतार्किक अनावश्यक मांग के आगे नहीं झुकेगी। गठबंधन के नियमों और गठबंधन धर्म के तहत काम होगा।

कई मोर्चे पर चिंतन – देखा जाए तो सरकार नीतिश और नायडू के पर्स में हैं। यानी इस बार भाजपा लस्त पस्त है। लकवाग्रस्त है। नेता हैं,पर निष्प्रभ। कम सीटें आने से पार्टी के नेता हताश हैं। एक साथ कई मोर्चे पर चिंतन चल रहा है। मोदी से भी अधिक वोटों से जीत कर आने वाले नेताओं की भरभार है। कहने को तो सामूहिक नेतृत्व। पर लचर,लाचार। संघ की निगाहें टिकी है मंत्रिमंडल के गठन पर। इस बार मोदी संघ की कितनी सुनते हैं, सवाल यह भी है। नड्डा बोल ही चुके हैं,बीजेपी बड़ी पार्टी हो गयी है,उसे संघ की जरूरत नहीं है। यदि मोहन भागवत ने संघ वाले सांसदों से कह दिया,कि वो मोदी को अपना नेता न चुनें तो बीजेपी के अंदर की सियासत बदल जाएगी। इस बार पूरी पार्टी मोदी की जेब में नहीं है। मोदी के मंत्रिमंडल में नितिन गडकरी को स्थान नहीं मिलने पर चाल चरित्र और चेहरा की बात करने वाली पार्टी की तस्वीर भी बदल सकती है। भाजपा मोदी की जागीर है या फिर संघ की। यह सवाल देर सबेर धूल की तरह उढ़ सकता है।

बीजेपी के 14 सहयोगियों के पास 53 सीटें हैं। पी.एम.आवास में हुई बैठक में इन्होंने लिखकर दिया है कि हमारा समर्थन मोदी के साथ है। सबके मन में मंत्री बनने की चाह है। छोटे- छोटे राज्यों के दलों को भी जोड़ने में बीजेपी लगी है। गठबंधन धर्म सरकार चलाने में रोड़ा बन सकते हैं। अभी से सियासी कयास लगाए जाने लगे हैं। क्यों कि कुछ ऐसे मुद्दे हैं, जिन पर मोदी अपने कदम पीछे नहीं किये तो सरकार गिर जाएगी। उन्हें भी समझौता करना पड़ सकता है। मसलन - एक देश एक चुनाव। इसके खिलाफ है टीडीपी, जबकि जदूय इसके समर्थन में है। विपक्ष भी नहीं चाहता एक देश एक चुनाव। परिसीमन के भी विरोध में है टीडीपी। बीजेपी ने 2029 तक महिला आरक्षण का वादा किया है। यह परिसीमन पर ही लागू होगा। इसी तरह युनिफार्म सिविल कोड को बीजेपी पूरे देश में लागू करना चाहती है। उत्तराखंड में लागू हो चुका है। मोदी इसे राष्ट्रीय प्राथमिकता से अलग कर सकते हैं। राम मंदिर बनने का लाभ बीजेपी को देश में क्या यूपी में भी नहीं मिला। अयोध्या, चित्रकूट, सीतापुर, बस्ती, प्रयागराज,सुल्तानपुर,रामटेक,कोप्पल,रामेश्वरम,नासिक, में बीजेपी हार गयी है। इसलिए काशी मथुरा का दावा अब बीजेपी नहीं करेगी। टीडीपी ने सन् 2018 में आंध्र को विशेष दर्जा नहीं दिये जाने पर बीजेपी से नाता तोड़ लिया था। इसी तरह मुस्लिमों को चार फीसदी आरक्षण देने के मुद्दे पर दोनों पार्टियों में टकराव हो सकता है। जदयू सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों में विनिवेश के खिलाफ है। बीजेपी को अपने कदम पीछे करना पड़ सकता है।अग्निवीर मामले में बीजेपी को अपना फैसला बदलना पड़ सकता है। जदयू नेता के.सी.त्यागी ने कह दिया है,बनने पर सरकार इस पर विचार करे।

तीसरा कार्यकाल चुनौती भरा – मोदी का तीसरा कार्यकाल चुनौती भरा है। क्यो कि एनडीए घटक दलों को मोदी खुश किये बगैर कोई भी फैसला नहीं ले पाएंगे। मोदी सरकार पर आने वाले तीन महीने चुनौती भरे होंगे। इसलिए कि इसी साल महाराष्ट्र,हरियाणा और झारखंड में चुनाव है। हरियाणा में 2019 में बीजेपी की दस सीटें थी। इस बार घटकर पांच सीट हो गयी है। कांग्रेस को पांच सीट मिली है। जाहिर है हरियाणा जीतना मुश्किल हो सकता है। झारखंड में झामुमो और कांग्रेस की सरकार है। वहां भी दलित आरक्षण मुद्दा विधान सभा तक कायम रहा तो बीजेपी के लिए नुकसान हो सकता है। महाराष्ट्र में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी है। उसे दस सीट मिली है। जाहिर है कि मोदी के लिए सरकार चलाना अग्नि परीक्षा से कम नहीं है। अभी तो बवाल इसी बात के लिए है कि कम सांसद वाले नेताओं को मंच पर बिठाया गया और ज्यादा सांसद वालों को दर्शक दिर्घा में। यू.पी. के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी को लेकर अमितशाह भारी नाराज हैं। जबकि मोदी ने उनकी पीठ थपथपा दी है। यानी मोदी समझ रहे हैं, कि नेहरू के तीन बार प्रधान मंत्री बनने के रिकार्ड की बराबरी करना है,तो सबको खुश करके चलना पड़ेगा।

डेटलाइन चंडीगढ़

बादल सरोज

लेखक लोकजतन के संपादक हैं।

किस हताशा में उठा था वह हाथ, होना चाहिए

गुरुवार की दोपहर चंडीगढ़ हवाई अड्डे पर जो घटा उसके बाद की वीडियोज कुलविंदर कौर जी की भी हैं और कंगना रनौत जी की भी हैं- मगर उस एक्शन की कोई वीडियो नहीं दिखी जिसकी रिएक्शन में ये दोनों बोली हैं। इसलिए थोड़ी दुविधा है। यह तय कर पाना मुश्किल हो रहा है कि जो कंगना जी के गाल पर लगा वह चांटा था, तमाचा था, झापड़ था, थप्पड़ था, रहपट था या लप्पड़ था, चपेट थी या चमाट थी। ये सिर्फ शब्दों का मामला नहीं है - ये सभी अलग अलग तरह की क्रियाएं हैं, इनकी प्रक्रियाएं भी अलग होती हैं जैसे ; चांटा मारा जाता है, तमाचा लगाया जाता है, झापड़ रसीद किया जाता है, थप्पड़ गुंजाया जाता है, लप्पड़ चिपकाया जाता है, रहपट चटकाया जाता है और चपेट चपेटी जाती है, चमाट दी जाती है। हरेक की ध्वन्यात्मकता - साउंड इफ़ेक्ट - और उससे पैदा होने वाली झंकृति- वाइब्रेशन - की तरंगों की तीव्रता और प्रभावशीलता की अवधि भिन्न होती ; ज्यादा विस्तार में नहीं जा रहे क्योंकि डॉ डैंग अनुपम खेर इसे कर्मा फिल्म में वाक्यों में प्रयोग करके बता चुके हैं। असल अंतर रूप में नहीं सार में होता है, जैसे इनमे से हरेक के पीछे के आवेग और संवेग, इरादे और उद्देश्य भी अलग होते हैं। ये - इनमे पटका, थपेड़, थपेड़ा, थपड़ी, चांप, चटकारा, थपकी और जोड़ लें - अलग अलग क्रियाएं ध्यान दिलाने, रोष जताने, सबक सिखाने, भिन्न भिन्न मात्राओं का गुस्सा निकालने. सजा देने जैसे अलग अलग भाव से भीनी होती हैं। आगे कभी एक्शन के समय की सीसीटीवी रिकॉर्डिंग सामने आयेगी तब शायद तय करना आसान हो जाएगा कि शुक्रवार को जो हुआ वह घटना किस शब्द संबोधन की अधिकारी है। तब तक के लिए इसे यहीं छोड़ते हैं।

फिलहाल इन पंक्तियों का मकसद इस एक तमाचे या वह जो भी था पर मचे तमाशे और उसमे भी कथित सिविल सोसायटी में मची- भले अभी तक धीमी धीमी - हाय तौबा पर है। 'अरे ऐसा नहीं होना चाहिए था' 'हम कंगना से सहमत नहीं हैं किन्तु जो हुआ वह भी सही नहीं है' 'एक महिला के साथ एक महिला द्वारा अपनी पोजीशन का फ़ायदा उठाकर हमला' से शुरू होकर इस तरह की प्रतिक्रियाएं गिरते, ररकते, लुढ़कते, फिसलते कुलविंदर कौर जी और उनके बहाने किसान आन्दोलन को कोसने और पंजाब में कथित रूप से 'बढ़ते आतंकवाद और उग्रवाद को कैसे हैंडल करेंगे' कहते हुए पूरे पंजाब को धिक्कारने तक पहुँच जाती हैं। (ऐसा स्वयं कंगना जी और उनके जैसे कुछ औरों ने कहा है।)

इन स-भ्रांत जनों और जनियों में से कुछ ने तो भारतीय दंड संहिता ही बदल दी और इस घटना को हिंसा करार दे दिया और जिन्हें कभी याद नहीं आये उनने भी गांधी जी की दुहाई देना शुरू कर दिया। ये अलग बात है कि, दूसरा गाल आगे करने की गांधी की सलाह तो कंगना जी ने भी नहीं मानी थी। ये ब्रिज अपर मिडिल क्लासिये इतना लिजलिजा, गिलगिला चुनिन्दापन- सेलेक्टिवनेस- कहाँ से लाते हैं? इनकी संवेदनाओं की पोटली में ऐसी कौन सी गुठुर गाँठ लगी है जो एक ख़ास तमाचे पर तो झटाक से खुल जाती है - मगर जब कर्नाटक में राकेश टिकैत के चेहरे पर काली स्याही फेंककर भद्दी गाली गलौज की जाती है, जब बीच चुनाव अभियान में ठेठ दिल्ली में एक भाजपाई गुंडा गठबंधन के प्रत्याशी कन्हैया कुमार और उनके प्रचार में चलने वाली महिला कार्यकर्ता पर हमला कर देता है, जब चिदम्बरम पर जूता फेंकने वाले से लेकर इस तरह के अपराधों में लिप्त सारे - सारे - व्यक्तियों से भाजपा भरत मिलाप करती है उन्हें अपना नेता बनाती है, जब यौन अपराधों के आरोपी ब्रजभूषण शरण सिंह के खिलाफ कार्यवाही की मांग करने के जुर्म में भारत की खेल दुनिया की चमकदार आकाशगंगाओं के कपड़े और बाल खींचकर मारपीट की जाती है, जब गौरी लंकेश की हत्या के बाद जश्न मनाया जाता है और 'एक कुतिया क्या मरी पिल्ले बिलबिलाने लगाने लगे' जैसे बोलवचन बोले जाते हैं, जब कठुआ की 8 वर्ष की मासूम आसिफा बानो एक पूजाघर के गर्भगृह में अमानुषिक हवस और यातनाओं की शिकार बनाकर मार डाली जाती है, जब हाथरस की बेटी मुखाग्नि और सम्मानजनक अंतिम विदाई तक से वंचित कर दी जाती है, जब फिल्म इंडस्ट्री में भी चुन चुनकर लिंचिंग जैसी की जाती है, पठान और जवान के लिए शाहरुख तक नहीं बख्शे जाते (फिलहाल इतना ही, यह सूची ऐसे मसलों पर इनकी सेलेक्टिव चुप्पी से भी ज्यादा लम्बी है।) ; तब इनकी संवेदनाओं की गठरी की गाँठ, गोर्डियन गाँठ की तरह खुलने से मुकर जाती है। इनके ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि सोशल मीडिया एकाउंट्स झाँक लीजिये सुन्न बटा सन्नाटा पसरा मिलेगा। ये कौन लोग हैं? ये कहाँ से आते हैं? कईयों को तो अचानक वर्दी का माहात्म्य याद आने लगा- कहने लगे कि वर्दी पहनकर तो ऐसा नहीं करना चाहिए था। यह अज्ञानी कुतर्क इस काबिल भी नहीं कि इसका खंडन भी किया जाए। यहाँ भी यह नस्ल पाखंडी ही है। उन्हें इस वर्दी का प्रताप अगर किसान मजदूरों के साथ हर रोज के बर्ताव, मणिपुर से बीजापुर होते हुए आदिवासी बसाहटों के संताप में नहीं दिखता तो रेलवे प्लेटफॉर्म, चौराहों पर गरीबों को रुई की तरह धुनते हुए तो कभी न कभी दिखा ही होगा !! उस वक्त वर्दी का अनुशासन याद नहीं आया। खैर !!

हम इस घटना को सही मानते हैं या गलत ?

इस सवाल से पहले का सवाल यह है कि आखिर हम होते कौन हैं निर्णय सुनाने वाले ? यदि राजनीतिक और सामाजिक जीवन में इस तरीके का इस्तेमाल किया जाता है तो हमे राय बनानी भी चाहिए, बेधडक देनी भी चाहिए, बनाते भी हैं, देते भी हैं। निंदा भी करते हैं, भर्त्सना भी करते हैं, उनके विरुद्ध खड़े भी होते हैं। मगर न तो कुलविंदर जी राजनीति में हैं ना हीं उन्होंने किसी राजनीतिक मतभेद या इरादे से ऐसा किया है। इधर बुद्ध उधर कन्फ्यूशियस कह गए हैं कि किसी भी घटना को उसके सन्दर्भ से काटकर नहीं देखा जाना चाहिए। इसका सन्दर्भ वे दो वाक्य हैं जो क्रिया के बाद कुलविंदर जी ने बोले हैं। वे कहती हैं कि - इसने बयान दिया था न कि महिलाएं सौ सौ रुपये के लिए बैठती हैं वहां पर। ये बैठेगी वहां पर? उस वक्त जब इसने बयान दिया था तब किसान आंदोलन में मेरी माँ बैठी थी। इस तरह साफ़ हो जाता है कि वे अपनी माँ के बारे में इतने घिनौने स्तर की बात किये जाने और उन्हें अपमानित किये जाने से आहत थी। कंगना जी का यह बयान सिर्फ एक बार का नहीं था। उन्होंने झुकी कमर वाली अत्यंत वृद्ध महिला मोहिंदर कौर के किसान आन्दोलन के एक फोटो को शाहीन बाग़ की दादी बिलकिस बानो बताते हुए लिखा था कि हा हा हा, ये वही दादी है, जिसे टाइम मैगज़ीन ने मोस्ट पावरफुल इंडियन के तौर पर अपनी लिस्ट में शामिल किया था और ये 100 रुपये में उपलब्ध हैं। एक जन्मना स्त्री कंगना एक बुजुर्ग स्त्री के सौ रूपये में उपलब्ध होने की बात कहकर सारी सीमाएं लांघ रही थीं, खुद के महिला होने के नाते पाए जाने वाले बर्ताब के हक को गँवा रही थीं!! उनके सहविचारी अनुपम खेर की भाषा में कहें तो यह एक महिला द्वारा एक महिला पर अपनी पोजीशन का फायदा उठाकर किया गया हमला है।' असल हिंसा यह है - जुगुप्सा जगाने वाली घृणित हिंसा। हिंसा सिर्फ दैहिक नहीं होती वह वाचिक भी होती है; शरीर से नहीं होती शब्दों से भी होती है।

इन पंक्तियों के लेखक की परवरिश चम्बल के इलाके की है डूब अपने राजनीतिक सरोकारों के चलते किश्तों में उसे करीब साढ़े तीन वर्ष उस जेल में रहना पड़ा है जहां जिन्हें डाकू कहा जाता है, उनकी भरमार थी। फूलन देवी सहित प्रायः सभी से लम्बी चर्चाएँ हुयी ; वे अपने को डाकू नहीं बागी कहते थे और 90 फीसदी मामलों में ठीक ही कहते थे, फूलन जी सहित वे अपनी तरह के बागी थे। उनके अनुभव के आधार पर कह सकते हैं कि जब समाज और उसके प्रतिष्ठान, न्यायप्रणाली और सामाजिक मूल्यों को बनाये रखने के जिम्मेदार लोग अपनी भूमिका निबाहना बंद कर देते हैं, आततायियों, अपराधियों और उनकी बेहूदगियों को अश्लीलता की हद तक संरक्षण देने लगते हैं तब व्यक्ति/व्यक्तियों में हताशा पैदा होती है। यह हताशा रोष, विक्षोभ और असहायता की खीज के ऐसे स्फोटों में दिखाई देती है। इसलिए कोई फतवा कोई सदुपदेश, कोई राय देने के पहले कुलविंदर जी की मनोदशा में खुद को देखिये ; एक युवती, क़ानून के राज में विश्वास करने वाली युवती, क़ानून व्यवस्था बनाए रखने का प्रशिक्षण पाई भारत की बेटी उम्मीद करती है कि उसकी माँ सहित देश की स्त्रियों के बारे में अत्यंत आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले व्यक्ति को समाज उपेक्षित करेगा। वह व्यक्ति जिस विचार समूह, जिस पार्टी में है वे उसकी निंदा करेंगे, उससे पल्ला झाडेंगे, क़ानून उसे दण्डित करेगा। एक दिन भरी दोपहरी में उसे दिखता है कि ऐसा कुछ भी नहीं हुआ, बल्कि इसका एकदम उलटा हुआ और वही बदजुबान, शाब्दिक हिंसा का आदतन अपराधी, असभ्य और अभद्र व्यक्ति पुरस्कृत और सम्मानित होकर हेंकड़ी दिखाते हुए उसके सामने आ जाता है तो जो निराशा और खीज होती है वह इस तरह की घटनाओं की वजह बनती है।

चंडीगढ़ हवाई अड्डे पर उठा हाथ हताशा में उठा हुआ हाथ था - एक बेटी का अपनी माँ के मान में उठा हाथ था। जब माँ सामने हो तो नौकरी वौकरी, सजा वजा की परवाह कौन करता है। कुलविंदर कौर जी की जगह शुभप्रीत कौर भी होती तो यही करती। शुक्रवार की दोपहर उठे उस हाथ का तमाचा किसी एक गाल पर नहीं पड़ा, वह तमाचा उन सब के गाल, भाल और कपाल पर है, जो सामाजिक जीवन में भूमिका निबाहने का साहस जुटाने वाली स्त्रियों को इतना नीचे जाकर लांछित और अपमानित करते हैं, ऐसा किये जाने पर मूकदर्शक बन जाते हैं या गुदगुदाहट महसूस करते हैं। उन पर भी है जो ऐसा किये जाने को महिमा मंडित करते हैं, गैंगरेप के मुजरिमों के स्वागत में जलूस निकालते हैं, बिलकिस बानो काण्ड के अपराधियों को राष्ट्रभक्त और उच्च कुलीन हिन्दू बताकर सिर्फ हिन्दुओं को ही नहीं पूरे हिन्दुस्तान की मनुष्यता को कलंकित करते हैं। इन वजहों को रोक दीजिये यही हाथ एक से दो होकर आपस में जुड़कर प्रणाम और नमस्कार में बदल जायेंगे। अगर ऐसा कहने की हिम्मत नहीं है तो मेहरबानी कीजिये; जब्त करने की बजाय व्यक्त करने वाली कुलविंदर कौर जी को सदाचार का पाठ मत पढ़ाइये। क्योंकि हमे क्या फर्क पड़ता है' के भाव से बहुत फर्क पड़ता है। चुनाव नतीजों के बाद अयोध्यावासियों के बारे में जो कहा जा रहा है या खुद कंगना जी ने पंजाब के बारे में जो निहायत गैर -जिम्मेदराना बात कही है वे ताजे उदाहरण है ; कुलविंदर जैसे हाथ भविष्य में इस तरह से नहीं उठें इसके लिए जरूरी है कि ऐसी उकसावे पूर्ण बातों और उनके उदगमो के खिलाफ हमारे हाथ खड़े हों !!

पुनश्च ;

कंगना रनौत के सामने 'जी' इसलिए भर नहीं लिखा गया कि वे अब माननीय सांसद महोदया है। मान पद-वद से नहीं मिलता, उसे अर्जित किया जाता है; कंगना जी ने इसका विलोम कमाया है। इसलिए भी नहीं कि कुलविंदर कौर के आगे 'जी' लगाना था सो संतुलन बनाना था। बल्कि इसलिए लिखा है कि कुछ फिल्मों में उनका अभिनय पसंद आया था - उन्हें देखकर हमेशा मेदिनीपुर की कमला और अमला नाम की दो लड़कियों की कहानी याद आती है। कोई सौ साल पहले भेडियों का एक समूह इनमे से एक उठाकर ले गया था और इन्हें पाला था ; कुछ वर्ष बाद जब इन्हें मुक्त कराया गया तब यह पता चला कि जो बहन उनके झुण्ड में रही वह मनुष्यों की सारी आदतें भूलकर उन्ही की तरह बर्ताब करना सीख गयी थी। गेट वेल सून कंगना जी !

सामयिकी

गिरीश पंकज

लेखक स्तंभकार हैं।

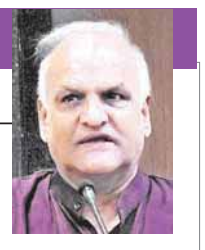

कल मजबूत मगर आज मजबूर सरकार !

जी हाँ, यही है लोकतंत्र! मतदाता कब किसे शिखर से उठाकर धरातल पर लाकर पटक दे, कहा नहीं जा सकता। देखते ही देखते मजबूत सरकार मजबूर सरकार में तब्दील हो सकती है, इसलिए नेताओं को, दलों को काम ऐसे करने चाहिए कि वे शिखर तक भले न पहुंचें, धरातल पर तो न गिरें। इस आम चुनाव में 12 केंद्रीय मंत्री बुरी तरह पराजित हुए। सिर्फ इसलिए कि उन्होंने अपने क्षेत्र के लोगों की उपेक्षा की। जो अच्छा काम करते रहे, वे लाखों मतों से विजय भी हुए हैं। लोकतंत्र में जनमानस उसी प्रतिनिधि को चुनता है, जो सहज, सरल, उदार और सहिष्णु हो। जो जनभावनाओं की कद्र करता है। जिसमें ऐसे गुण नहीं होते, वे समय आने पर दृश्य से बाहर हो जाते हैं। यानी भूतपूर्व। अयोध्या में भारतीय जनता पार्टी की पराजय की देशभर में चर्चा है। एक चर्चा प्रधानमंत्री मोदी की जीत को लेकर भी है। पिछली बार मोदी वाराणसी से चार लाख वोटों से विजयी हुए थे। इस बार वह मात्र डेढ़ लाख वोटो से ही जीत सके जबकि उन्हीं की पार्टी के अनेक प्रत्याशी 5 से 8 लाख तक के वोटो से विजयी हुए। इसका मतलब साफ है कि कहीं न कहीं वाराणसी के लाखों मतदाता मोदी जी से नाखुश थे। इस पर मोदी जी को विचार करना चाहिए कि चूक कहां हुई। अयोध्या में भी लोग असंतुष्ट थे। ये वे लोग थे जिनके घर तोड़े गए। दुकानें तोड़ी गई इसलिए कि अयोध्या का विकास करना है। लेकिन कोई भी विकास विनाश के ऊपर खड़ा नहीं हो सकता। अयोध्या के अनेक लोगों को, जिनके घर टूटे उन्हें, मुआवजा नहीं मिला। बेशक वहां राम मंदिर बना, 500 साल की तपस्या पूरी हुई,लेकिन रामलला को तो घर मिल गया मगर राम भक्त दुखी हो जाएँ, तो उनके मन में आक्रोश पनपेगा ही। इसी आक्रोश की परिणति थी कि अयोध्या में भाजपा को हार का सामना करना पड़ा। उत्तर प्रदेश की अनेक सीटें भाजपा हार गई क्योंकि

प्रत्याशियों का चयन गलत हो गया। जो लोग दोबारा जीते, निःसन्देह उनसे वहां का मतदाता खुश था।

मैं यह देखकर चकित रहता हूँ कि जैसे ही कोई विधायक या सांसद बनता है, और भूलवश मंत्री बन गया तो उसके पैर धरती पर पड़ते ही नहीं। वह गगनबिहारी हो जाता है। उसे वही जानता कीड़े-मकोड़े की तरह लगने लगती है, जिसने उसे सत्ता के रथ पर बैठाया। वह लोगों से मिलना-जुलना पसंद नहीं करता। फोन उठाने के लिए पीए रख लेगा। अगर भूले-भटके फोन उठा भी लिया तो बहुत बदतमीजी से बात करेगा। जनहित के काम करने के लिए उसे जो बजट मिलता है, वह भी खर्च करने में उसे तकलीफ होती है। उसे लगता है कि उसके घर से कुछ जा रहा है। अगर वह सरकारी निधि से कुछ देना भी चाहता है तो उसकी अपेक्षा रहती है कि उसमें से कुछ प्रतिशत रिश्वत मिल जाए। सब रिश्वतखोर नहीं होते लेकिन अनेक यही करते हैं। इस बार के लोकसभा चुनाव में सर्वाधिक झटका भारतीय जनता पार्टी को लगा। हालांकि एनडीए के रूप में अंततः भाजपा ही सत्ता पर काबिज हुई और सबसे बड़ी पार्टी के रूप में भी उभरी है, लेकिन उसके लिए दुख की बात यह है कि वह बहुमत से 32 सीट दूर है। उसे जनता दल यूनाइटेड और तेलुगुदेशम पार्टी का सहयोग मिला है। इसके अलावा भी अन्य छोटे-छोटे दल हैं। उनके कारण एनडीए की संख्या 292 हो गई है। यानी बहुमत से 20 सीट अधिक। लेकिन अब यह तय है कि यह सरकार मजबूत नहीं मजबूर सरकार के रूप में काम करेगी। प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी अब उस हिम्मत के साथ काम नहीं कर सकेंगे, जिस हिम्मत के साथ में पिछले दस वर्षों से करते रहे। बहुत से निर्णय लेने में अब दिक्कत होगी। देशहित में कोई विधेयक लाया जाएगा तो हो सकता है वह सहयोगी दल को पसंद ना आए और वे विरोध करने लगें। जैसे कुछ सहयोगी दलों को अग्निवीर योजना पसंद नहीं। वे इसका विरोध कर सकते हैं। कुछ एनआरसी का विरोध कर सकते हैं। यानी वैचारिक मतभेद की स्थिति बनी रहेगी। ऐसे में लंबे समय तक इस सरकार का चल पाना बहुत कठिन लग रहा है। कब जेडीयू के नीतीश बाबू या चंद्रबाबू नायडू पाला बदल लें,कहा नहीं जा सकता। फिर भी हम सब उम्मीद कर सकते हैं कि देशहित में वर्तमान एनडीए सरकार पाँच साल पूरा करेगी। भले ही लड़खड़ाती सरकार चले लेकिन मध्यावधि चुनाव की नौबत न आए। इसलिए सहयोगी दलों सबसे बड़ी पार्टी भाजपा के देशहित में लिए गए निर्णयों का गंभीरतापूर्वक अनुशीलन करके सहयोग भी करना होगा। सहयोगी दलों की नाराजगी एनडीए सरकार पर भारी पड़ सकती है। उधर कांग्रेसनीत इंडिया गठबंधन ने विपक्ष में बैठने का मन बनाया है।लेकिन उनकी निगाह हमेशा उस बिल्ली की तरह रहेगी जो ऊपर लटके छीके को गौर से देखती रहती है कि कब टूटे और वह दुग्ध/पान करे। यानी जोड़-तोड़ करके वह भी सत्ता का स्वाद लेने की कोशिश कर सकती है। राजनीति में कुछ भी संभव है। फिलहाल देश का आम नागरिक तो यही चाहता है कि वर्तमान की गठबंधन सरकार पाँच साल पूर्ण करे और देश को आगे बढ़ाने के मामले में एकजुटता ही दिखाए।

बैतूल रेल्वे स्टेशन से नागपुर लाइन पर मिला अज्ञात बुजुर्ग का क्षत-विक्षत शव

● अंधेरी रात में 600 मीटर पैदल शव को लेकर पहुंची रेलवे स्टेशन पुलिस

बैतूल। गंज थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले रेलवे स्टेशन से 600 मीटर की दूरी पर देर रात नागपुर ट्रैक पर माचना पुल के पास एक अज्ञात बुजुर्ग का क्षत-विक्षत शव मिलने की सूचना रेलवे पुलिस से गंज थाना पुलिस को प्राप्त हुई सूचना प्राप्त होते ही गंज थाना पुलिस शव को खोजते हुए रेलवे ट्रैक पर पहुंची तब कहीं जाकर बैतूल रेलवे स्टेशन से लगभग 600 मीटर की दूरी पर एक बुजुर्ग का शव पड़ा दिखा पुलिस ने शव को स्ट्रेचर पर डालकर लगभग अंधेरी रात में 600 मीटर पैदल दूरी तय कर शव को रेलवे स्टेशन तक लेकर आई जहां से एंबुलेंस की सहायता से शव को बैतूल जिला चिकित्सालय के मरचुरी तक पहुंचाया गया पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार बुजुर्ग कि शिनाख्त अभी नहीं हुई है उसकी उम्र लगभग 70 वर्ष बताई जा रही है युवक ने सिंदुरी कलर का टी शर्ट एवं ब्लू कलर का पेंट पहना है और बुजुर्ग लकड़ी देख कर चलता है क्योंकि शो के पास से एक लकड़ी भी प्राप्त हुई है वही शव की तलाशी लेने पर उसके पास कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ जिसके कारण अभी शिनाख्त नहीं हो पाई है फिलहाल शव को जिला चिकित्सालय के मर्चुरी में रख दिया फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

स्वतंत्रता सेनानी गंजनसिंह कोरकू की मूर्ति पहुंची बैतूल

बैतूल। जिले की शान, वीर और स्वतंत्रता सेनानी गंजन सिंह कोरकू की मूर्ति बैतूल पहुंची। यह मुर्ति डॉ.कीर्ति सिंह द्वारा भोपाल में बनाई गई है। बैतूल निवासी और भोपाल में शासकीय महाविद्यालय में कला के प्राध्यापक डॉ.कीर्ति सिंह द्वारा बैतूल से लगाव के चलते जिले और प्रदेश के जननायकों की इस तरह की मूर्तियां बनाते रहें हैं। उल्लेखनीय है कि मूर्तिकार डॉ.कीर्ति सिंह को देश-विदेश में अनेकों प्रख्यात अवार्ड मिल चुके हैं। डॉ.सिंह की भावना हमेशा बैतूल को कला जगत के पटल पर रखने की रही है। मूर्ति को देखने आसपास के लोग बड़ी संख्या में आ रहें हैं और कला की सराहना कर रहें हैं। मूर्ति की स्थापना की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं।

मरीजों की जान के साथ खिलवाड़

● 11 अस्पतालों में नहीं है फायर सेफ्टी के इंतजाम, आधा सैकड़ा भवन मालिकों को थमाए नोटिस

बैतूल। जिले में कई मल्टी स्टोरी भवन बनाए है, लेकिन उसमें फायर सेफ्टी नहीं है, जिसके कारण कई बार हादसे हो चुके है। नगरपालिका ने भवन मालिकों को फायर सेफ्टी के लिए कहा लेकिन कई लोगों ने फायर सेफ्टी को लेकर दिलचस्पी नहीं दिखाई। अब नगरपालिका ने फायर सेफ्टी नहीं लगाने वाले भवन मालिकों के खिलाफ एक्शन में आ गई है। फायर सेफ्टी नहीं होने पर भवन मालिकों को धड़ाधड़ नोटिस थमाएं जा रहे है। इन भवनों में निजी हॉस्पीटल भी शामिल है। नगरपालिका के सहायक यंत्री नीरज धुर्वे ने बताया कि जिन भवनों में फायर सेफ्टी के इंतजाम नहीं है। शहर के ऐसे 49 भवन मालिकों को फायर सेफ्टी के लिए नोटिस जारी किए है। अभी नोटिस जारी किए, इसके बावजूद कोई जवाब नहीं आता और फायर सेफ्टी के इंतजाम नहीं होते है तो संबंधित के खिलाफ जुर्माने की कार्रवाई की जाएगी।

29 भवनों में फायर सेफ्टी के इंतजाम

नगरपालिका के अधिकारियों के मुताबिक जिन भवनों में फायर सेफ्टी नहीं है। उन्हें नगरपालिका समय-समय पर नोटिस जारी करती है। नगरपालिका द्वारा नोटिस जारी करने के बाद 29 भवनों में फायर सेफ्टी के इंतजाम हुए है और उन्हें सर्टिफिकेट भी दिया गया। अभी और 49 ऐसे भवन है, जहां फायर सेफ्टी की व्यवस्था नहीं है। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि फायर सेफ्टी को लेकर बड़े भवन और अस्पताल संचालक गंभीर नहीं है। ऐसे में कोई हादसा होता है तो इसकी जिम्मेदारी किसकी होगी। यह बड़ा सवाल खड़ा हो रहा है। देखने में आता है कि कोई हादसा होने के बाद ही अधिकारी भी जागते है और भवन मालिक को भी फायर सेफ्टी की उसी समय याद आती है। बड़े-बड़े शहरों में फायर सेफ्टी नहीं होने के कारण हादसे भी हो गए, इससे भी सबक नहीं लिया जा रहा है।

तीन अस्पतालों को कई बार दे चुके नोटिस

नगरपालिका के सहायक यंत्री नीरज धुर्वे ने बताया कि बैतूल के तीन निजी अस्पताल है, जहां फायर सेफ्टी के इंतजाम नहीं है। इन अस्पतालों को कई बार फायर सेफ्टी के इंतजाम नहीं होने के कारण कई बार नोटिस जारी कर चुके है, इसके बावजूद भी फायर सेफ्टी के इंतजाम नहीं किए है। फायर सेफ्टी नहीं होने पर नपा के अधिकारियों ने सीएमएचओ को भी पत्र लिखा है, ताकि विभागीय कार्रवाई हो सके, लेकिन इन अस्पतालों पर अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। इन अस्पतालों के पास नहीं है फायर सेफ्टी की एनओसी

नगरपालिका के सहायक यंत्री नीरज धुर्वे ने बताया कि शहर के कई अस्पतालों ने फायर एनओसी नहीं ली है, जिसमें सुभद्रा हॉस्पिटल, गढ़ेकर हॉस्पिटल, महाजन हॉस्पिटल, चिरायू हॉस्पिटल, नोबल हॉस्पिटल, आरोग्य निकेतन नर्सिंग होम, लश्करे हॉस्पिटल, पूजा हॉस्पिटल, सिटी हॉस्पिटल, चौतन्य हॉस्पिटल, श्रीवास्तव हॉस्पिटल शामिल है। इन अस्पतालों ने फायर सेफ्टी को लेकर एनओसी प्राप्त नहीं की है। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि इन अस्पतालों की मनमानी कितनी अधिक है।

इनका कहना: कई भवन संचालक और हॉस्पिटल संचालकों ने फायर सेफ्टी को लेकर एनओसी प्राप्त नहीं की है। इस तरह से कुल 49 भवन मालिकों को नोटिस थमाएं है।

नीरज धुर्वे, सहायक यंत्री, नगरपालिका, बैतूल

बैतूल नपा का जल गंगा संवर्धन अभियान

नगर पालिका ने कलश यात्रा निकालकर दिया जल संरक्षण का संदेश

बैतूल। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत नगर पालिका द्वारा रविवार सुबह 7 बजे हनुमान मंदिर से भव्य कलश यात्रा निकाली गई। कलश यात्रा प्रमुख मार्गों से होते हुए संतोषी माता मंदिर पहुंची। नपाध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर ने बताया कि नगर पालिका द्वारा शहर में कलश यात्रा निकाली गई। भविष्य के लिए सभी को जल संवर्धन करने की आवश्यकता है। कलश यात्रा के माध्यम से जनमानस को पर्यावरण एवं जल संरक्षण का संदेश दिया गया।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी ओमपाल सिंह भदौरिया ने बताया कि नगर पालिका के अंतर्गत आने वाले सभी पुराने और जीर्ण-शीर्ण जल स्रोतों की सफाई करवाकर पुनः निर्मित करवाया जा रहा है, जिससे उनका जल उपयोग में लाया जा सके। उन्होंने शहर के लोगों से पानी का संवर्धन कर जल बचाने की अपील की है। कलश यात्रा में नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, गायत्री परिवार के सदस्य, पार्षद श्रीमती वर्षा बारस्कर, पार्षद श्रीमती नंदिनी तिवारी, पार्षद श्रीमती सोमती धुर्वे, मुख्य नगरपालिका अधिकारी ओमपाल सिंह भदौरिया कार्यालय अधीक्षक विजय हुद्दार, सुभाष प्रजापति एवं नगर पालिका के समस्त कर्मचारी उपस्थित रहे।

तालाब की सफाई कर जल संरक्षण की दिलाई शपथ-

सीएमओ श्री भदौरिया ने बताया कि जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत नगर पालिका द्वारा काशी तालाब की सफाई की गई। इस दौरान यहां नपा के अधिकारी, कर्मचारी ने तालाब में से बड़ी मात्रा में पॉलिथीन एकत्रित कर लोगों को तालाब में कचरा नहीं फेंकने की अपील की गई।

चित्रकला एवं निबंध प्रतियोगिता में भाग लिया स्कूली बच्चों ने

बैतूल। नगर पालिका बैतूल के एन.यू.एल.एम. शाखा प्रभारी सिटी मिशन मैनेजर हंसराज मसतकर ने बताया कि मध्यप्रदेश शासन द्वारा शुरू किये गए जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत मुख्य नगर पालिका अधिकारी ओमपाल सिंह भदोरिया के निर्देश पर 9 जून को बैतूल नगर पालिका क्षेत्र अंतर्गत कोठीबाजार स्थित सुभाष हायर सेकेंडरी स्कूल में चित्रकला एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें स्कूली बच्चे भाग लिए ।

9 जून रविवार को सुभाष स्कूल में आयोजित चित्रकला एवं निबंध प्रतियोगिता में स्कूली बच्चों ने जल संरक्षण और संवर्धन को लेकर निबंध के माध्यम से अपने-अपने विचारो को शब्दों में पिरोकर व्यक्त किए। वहीं चित्रकला के जरिए जल संवर्धन और संरक्षण कैसे करें और उसके महत्व को दर्शाते हुए बेहतरीन चित्रण किए गए। कोठीबाजार स्थित शासकीय सुभाष उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में नपा के एनयूएलएम शाखा द्वारा आयोजित इस चित्रकला एवं निबंध प्रतियोगिता के दौरान बैतूल नपा के एनयूएलएम शाखा के सीओ प्रफुल्ल सिंह एवं सागर बारस्कर तथा स्कूल स्टाफ की ओर से विद्यालय की प्राचार्य श्रीमती बीना दीक्षित के साथ शिक्षकगण विनय सिंह राठौर, सुभाष सिंह देवडे, चंचल पांसे आदि मौजूद थे । गौरतलब है कि मध्य प्रदेश शासन द्वारा 6 जून से आगामी 16 जून गंगा दशहरा दिवस तक के लिए प्रदेश भर में जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है जिसके तहत कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षत जैन के निर्देश पर शहरी एरिया के साथ साथ ग्रामीण इलाकों में जोर-शोर से इस अभियान के तहत जल संवर्धन और संरक्षण को लेकर आम जनों को जोड़कर नदी - नाले , तालाब ,कुआ ,बावली की सफाई भी की जा रही है इसके साथ ही पौधारोपण भी किया जा रहा है। शासन द्वारा पौधारोपण का लक्ष्य भी रखा गया है। जानकारी के मुताबिक मध्यप्रदेश की इस महत्वाकांक्षी जल गंगा संवर्धन अभियान को अपार जन समर्थन मिल रहा है जिसके चलते जहां जल स्रोतों में इजाफा होने लगा है, वहीं इसके अच्छे परिणाम भी सामने आ रहे हैं। मिली जानकारी के अनुसार इस अभियान की प्रदेश स्तर पर मॉनिटरिंग भी की जा रही है। इस अभियान के तहत शनिवार को बैतूल शहर के काशी तालाब में सफाई की गई, जिसमें नपाध्यक्ष पार्वती बारस्कर, मुख्य नगर पालिका अधिकारी ओमपाल सिंह भदोरिया और नपा के पार्षदगण सहित बड़ी संख्या में आमजनो ने सहभागिता की हैं।

थाना गंज पुलिस ने 2000 रूपए के फरार ईनामी बदमाश को किया गिरफ्तार

बैतूल। दिनांक 25/08/23 को फरियादी इमरान खान निवासी इद्रिंरा कलोनी गंज ने थाना आकर रिपोर्ट किया था कि आरोपी सोहेब उर्फ खाण्डु पिता लालखान निवासी इंद्राकलोनी गंज हाथ में तलवार लेकर उसे डराकर दारू पीने के लिये 1000 रूपए मांगे, जो पैसे देने से मना किया तो मारपीट की गइ। फरियादी कि रिर्पोट पर थाना गंज में अपराध क्रमांक 321/23 धारा 327, 341, 294, 323,506 भादवि का पंजीबध्द कर विवेचना में लिया गया। आरोपी घटना दिनांक से फरार था जिसकी गिरफ्तारी के लिये पुलिस अधीक्षक बैतूल द्वारा 2000 रू. कि ईनामी राशि की उदघोषणा कि गई थी।

दिनांक 09/06/24 को गंज पुलिस द्वारा आरोपी सोहेब उर्फ खाण्डु पिता लालखान उम्र 28 साल निवासी इंद्राकलोनी गंज को गिरफ्तार किया तथा आरोपी के कब्जे से घटना में प्रयुक्त एक लोहे की धारदार तलवार जप्त की गई प्रकरण में धारा 25 आर्म्स एक्ट का ईजाफा किया गया है । आरोपी को माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया गया है । उपरोक्त कार्यवाही मे निरी.रविकान्त डेहरिया, सउनि किशोरी लाल सल्लाम, प्रआर संदीप,प्रआर सीताराम, आर मनोज, मआर रूपाली एवं आर नरेन्द्र की विशेष भूमिका रही है।

किचन गार्डन से जल संरक्षण की संगोष्ठी संपन्न

बैतूल। इस बार ग्रीष्म ऋतु में पानी के महत्व को सभी ने समझा, क्योंकि कई जिले ग्रामों में पानी की बहुत किल्लत देखने को मिली। इसी उद्देश्य को लेकर नवांकुर संस्था भूपेन्द्र ग्राम उत्थान बाल महिला बाल विकास समिति बैतूल द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत ग्राम बांसपानी में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें शासकीय योजनाओं के प्रचार-प्रसार किया गया। संस्था की कार्यकर्ता रचना सरियाम ने उपस्थित सभी ग्रामीणों को जल स्त्रोत और किचन गार्डन की थीम से अवगत कराया। सृष्टि उइके और प्रस्फुटन समिति गीता धुर्वे ने कहा कि किचन से निकलने वाले पानी को व्यर्थ ना बहाये इससे अपने बगीचे को सिंचित करें। उन्होंने कहा कि पानी की एक-एक बूंद कीमती है। वर्षा ऋतु के जल को सहेज कर रखें। इस अवसर पर बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

बैतूल में प्री- मानसून की तेज बारिश, मौसम में घुली ठंडक

● बैतूल सहित मप्र के कई जिले में गरज- चमक के साथ बारिश का अलर्ट

बैतूल। रविवार शाम को बैतूल मुख्यालय पर तेज बारिश से मौसम में ठंडक घुल गई है। लोगों को तेज गर्मी से राहत मिली है। दिन भर धूप खिली रही, शाम को अचानक मौसम का मिजाज बदल गया और शाम को 5:30 बजे से तेज बारिश होना शुरू हो गई। बारिश के साथ तेज हवाएं भी चलते रही। समाचार लिखे जाने तक बारिश जारी थी। यह प्री मानसून की बारिश है। अभी मानसून 15 से 20 जून तक दस्तक देगा। किसान बोवनी के लिए झमाझम बारिश का इंतजार कर रहे है : मौसम विभाग भोपाल ने रविवार को जारी की गई एडवाइजरी में अगले 24 घंटे दौरान मप्र के डिंडोरी, छिंदवाड़ा, बैतूल, सिवनी, मंडला, बालाघाट, पांढुर्णा , बुरहानपुर, खंडवा, खरगौन बढ़वानी, भोपाल, विदिशा, रायसेन, सिहोर, राजगढ़, नर्मदापुरम, हरदा, अलिराजपुर, झाबुआ, धार, इंदौर, उज्जैन, देवास, शाजापुर, अगरमालवा, गुना, अशोकनगर, शिवपुरी, अनुपपुर, शहडोल, उमरिया, कटनी, जबलपुर नरसिंहपुर, पन्ना, दमोह, सागर छतरपुर, मैहर जिलों में गरज चमक के साथ बारिश होने और ओले गिरने की संभावनाएं है।

अंधे कत्ल का खुलासा कर आरोपी गिरफ्तारी

बैतूल। मांडवी के पास ग्राम ढोंडिखेडा रोड पर कस्तूरचंद बोरवन मासाब के खेत के टांका में एक अज्ञात व्यक्ति का शव 29.05.2024 को ग्राम कोटवार द्वारा सूचना दी गई कि पडा है। जिसके सिर पर पत्थर रखा हुआ है । जिसकी रिपोर्ट पर मर्ग कायम कर जॉच उपरांत थाना आठनेर में अपराध क्र. 255.24 धारा 302,201 भादवि ईजाफा 3(2)(व्ही) एससी-एसटी एक्ट का पंजीबध्द किया गया। विवेचना के दौरान अज्ञात आरोपी की तलाश पतारसी हेतु थाना प्रभारी द्वारा टीम गठित की गई टीम द्वारा कड़ी मेहनत एवं लगने से साक्ष्य के आधार पर अंधे कत्ल के आरोपियों को 48 घंटे के भीतर गिरफ्तारी कर न्यायालय में पेश किया गया। इस प्रकार थाना आठनेर के अंधे कत्ल का खुलासा 48 घंटे के भीतर कर आरोपियों की गिरफ्तारी में आरक्षक 588 भीम चंचल थाना आठनेर की अहम भूमिका रही।

वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा मुख्यालय, अनुभाग, थाना स्तर पर नवीन आपराधिक अधिनियम-2023 के संबंध में दिया प्रशिक्षण

गंभीर अपराध एवं महिला संबंधी अपराधों पर की गई विस्तृत चर्चा

बैतूल। पुलिस मुख्यालय के निर्देशानुसार वर्तमान में लागू भारतीय दंड संहिता 1860, दंड प्रक्रिया संहिता के स्थान पर भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, एवं भारतीय साक्ष्य अधिनियम, जो की 01 जुलाई 2024 से लागू होने वाली है। के संबंध में पुलिस अधीक्षक द्वारा जिले के सभी पुलिस अधिकारियों व कर्मचारियों को घटित अपराध की धाराओं के संबंध में एवं थानों पर कार्यरत सीसीटीएनएस ऑपरेटरो को कंप्यूटर पर प्रयोग संबंधी प्रशिक्षित करने हेतु निर्देशित किया गया। इसी क्रम में निरंतर प्रशिक्षण का आयोजन वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय स्तर पर, अनुभाग स्तर पर एवं थाना स्तर पर किया जा रहा है। शहरीय ग्रामीण अनुभाग मुख्यालय थाना स्तर का प्रशिक्षण कार्यक्रम वन विद्यालय बैतूल में समस्त पुलिस राजपत्रित अधिकारी एवं थाना प्रभारी, चौकी प्रभारी एवं अनुसंधानकर्ता को नवीन आपराधिक अधिनियम भारतीय न्याय सहिंता की भारतीय दंड संहिता से परिवर्तित धाराओ के विषय मे तुलनात्मक चर्चा कर अध्ययन की पुनरावृत्ति की गई। प्रशिक्षण में महिला संबंधी अपराधों एवं गंभीर अपराध हत्या, हत्या का प्रयास, लूट इत्यादि अपराधों की संबंधित धाराओं में विस्तृत चर्चा की गई।

जल संरक्षण एवं संवर्धन अभियान में मनरेगा में स्वीकृत 954 कार्यों को पूरा करने का लक्ष्य: अक्षत जैन

बैतूल। मुख्य कार्यपालन अधिकारी अक्षत जैन ने बताया कि मनरेगा के अंतर्गत स्वीकृत 5419 प्रगतिरत योजनाओं में से 954 कार्यों को शासन के महत्वाकांक्षी अभियान जल संरक्षण एवं जल संवर्धन के तहत 5 जून से 16 जून तक विश्व पर्यावरण पखवाड़े के अंतर्गत पूरा किया जाएगा। इस अभियान के अंतर्गत ऐसे तालाबों का जीर्णोद्धार किया जाएगा, जिसमें 5 वर्षों से अधिक का समय पूरा हो चुका है। ऐसे 353 तालाबों का जीर्णोद्धार एवं नवीनीकरण के लिए चिन्हित किया गया है।

चेक डैम एवं स्टॉप डैम

जिला पंचायत सीईओ श्री जैन ने बताया कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य जल स्रोतों का पुनरुद्धार कर जल स्रोतों को रिचार्ज करना है, जिससे बरसात में समय पूर्ण अधिक से अधिक पानी का संचय किया जा सके। इस अभियान में 5 वर्ष पूर्व के निर्माता चेक डैम और स्टॉप डैम का जीर्णोद्धार एवं नवीनीकरण किया जाएगा। इसमें 94 चैक डैम और स्टॉप डैम को चिन्हित किया गया है, जिन्हें 16 जून के पहले पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

इसी अनुक्रम में मनरेगा के अंतर्गत 85 कुएं एवं बावडियों का जीर्णोद्धार किया जाएगा। जिले के बावडियों और जल स्रोतों की साफ सफाई स्थानीय जन सहयोग से की जाएगी। शासन का प्रयास यह होगा कि यह जल अभियान, जन अभियान के रूप में चलाया जाएगा। इसमें प्रत्येक नागरिक की सहभागिता हो। इस सामाजिक और धार्मिक महत्व की जल संरचनाओं के समीप कलश यात्राओं का आयोजन भी किया जाएगा। छात्र-छात्राओं की भी होगी सहभागिता सीईओ श्री जैन ने बताया कि कलेक्टर श्री नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी के मार्गदर्शन में इस अभियान से छात्र-छात्राओं को भी जोड़ा जाएगा। पर्यावरण पर केंद्रित चित्रकला एवं पोस्टर्स प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। यह प्रतियोगिता शाला एवं महाविद्यालय स्तर पर आयोजित की जाएगी। पर्यावरण की थीम पर केंद्रित यह प्रतियोगिता मानव जीवन में पर्यावरण के महत्व पर केंद्रित रहेगी।

पौधारोपण: सीईओ श्री जैन ने बताया कि पौधारोपण के बिना पर्यावरण की बात करना और प्रासंगिक होगा। उन्होंने कहा कि वन है तो जल है, जल स्रोत है, जल है तो वन है। वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप ही शासन द्वारा पर्यावरण के महत्व को विश्व पर्यावरण पखवाड़े के अंतर्गत पर्यावरण से जुड़े विभिन्न पहलुओं को एक सूत्रों में जोड़ते हुए यह अभियान चलाने का निर्णय लिया गया है। बैतूल जिले में मनरेगा के अंतर्गत लंबित कार्यों के द्वारा जल स्रोतों के गहरीकरण, जल स्त्रोतों की साफ-सफाई और पौधारोपण जैसे महत्वपूर्ण कार्य को 16 जून तक समाप्त कर लिया जाएगा।

विलक्षण जनादेश : कहीं खुशी कहीं गम !

राजीव खंडेलवाल

(लेखक, कर सलाहकार एवं पूर्व बैतूल सुधार न्यास अध्यक्ष हैं)

स्वतंत्र भारत के इतिहास में वर्ष 1951-52 में जब सबसे लम्बे चुनावी प्रक्रिया 4 महीने चली थी, के बाद अभी तक के दूसरे सबसे लंबे समय तक चले लोकसभा चुनाव के अंतिम परिणाम आ गए हैं। परिणाम में स्पष्ट रूप से अकेले भाजपा को तो नहीं, परन्तु भाजपा के नेतृत्व में बनी एनडीए को स्पष्ट पूर्ण बहुमत प्राप्त हो गया है। वहीं कांग्रेस के नेतृत्व में बनी इंडिया प्रमुख व सशक्त विपक्षी गठबंधन के रूप में उभरा है। यदि हम पिछले 25 वर्षों के चुनावी परिणाम का अवलोकन करें तो, यह चुनावी परिणाम इस मायने में सबसे अलग होकर विलक्षण है कि जहां दोनों पक्ष सत्ता और विपक्ष, एनडीए और इंडिया एक ही परिणाम में एक साथ अपनी-अपनी जीत के लिए जनता को बधाई दे रहे हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू के बाद नरेन्द्र मोदी ऐसे दूसरे व्यक्ति हैं, जो लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने जा रहे है। यद्यपि चुने हुए वे लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने वाले पहले व्यक्ति होगें। यदि वे पिछले वर्ष 2019 के चुनाव में प्राप्त 303 सीटों से ज्यादा सीटें प्राप्त कर लेते तो वे जवाहरलाल नेहरू से भी ज्यादा सफल प्रधानमंत्री कहलाते, क्योंकि नेहरू की जीत प्रत्येक अगले आम चुनाव में क्रमवार कम होती गई थी। इस चुनाव की सबसे महत्वपूर्ण बात यह भी रही कि समस्त 12 सर्वे एजेंसियों द्वारा दिए अधिकांश एग्जिट परिणाम बिल्कुल ही गलत सिद्ध हुए।

जीत तो जीत या हार तो हार?

पिछले चुनाव (303 सीटों)की तुलना में बीजेपी की 63 सीटें अर्थात लगभग 20 प्रतिशत कम होने के बावजूद यदि वह खुशियां मना रही है, तो इसलिए कि उनके नेता नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए की तीसरी बार सरकार बनने जा रही है। लेकिन साथ ही बीजेपी के लिए यह चिंता व मनन का भी विषय है कि 370 का नारा तो दूर पिछले चुनाव में प्राप्त 352 सीटें भी वह बचा नहीं पाई, जिसका आत्म-विश्लेषण, आत्मालोचन पार्टी निश्चित रूप से करेगी। इस प्रकार भाजपा के लिए यह चुनाव परिणाम जीत और हार दोनों लिए हुए है और इसीलिए 'कभी खुशी-कभी गम' (अमिताभ बच्चन की फिल्म) और कहीं खुशी-कहीं गम की स्थिति है। इसी प्रकार इंडिया गठबंधन ने परिणाम के दौरान ही तुरंत पत्रकार वार्ता कर कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने जनता को बधाई दी। यद्यपि दावे के अनुसार सरकार बनाने लायक बहुमत न मिलने पर उन्होंने यह नहीं कहा कि यह हमारी हार है और हम जनता के निर्णय को शिरोधार्य करते है, जैसा कि हर हार के बाद कहा जाता रहा है। कारण स्पष्ट है कि कांग्रेस की 2019 के चुनाव की 52 सीटें बढ़कर लगभग 100 के पास 99 तक पहुंच गई हैं और ''इंडिया'' लोकसभा में पिछले पिछले 25 सालों में आज सबसे मजबूत विपक्षी गठबंधन बना। परंतु इंडिया को उनके दावे 295 सीटों के विपरीत मात्र 233 सीटे ही मिल पाई और वे बहुमत से काफी दूर रह गई।

परिपक्व संतुलित निर्णय

भारतीय लोकतंत्र की दृष्टि से देखें तो यह चुनाव परिणाम जनता के एक परिपक्व निर्णय को दर्शाता है। वह ऐसे कि एक तरफ पूर्ण बहुमत (292) की स्थाई सरकार दी गई तो, दूसरी तरफ मजबूत विपक्ष (234) को चुना गया। 400 के नारे से बने तानाशाही के नरेशन व परसेप्सन की प्रवृत्ति की तथाकथित आशंका को भी जनता ने दूर किया तो दूसरी ओर संख्या में कमी के कारण लंच-पुंज विपक्ष के रहते सरकार पर कोई मजबूत नियंत्रण न रख पाने की असमर्थता को पर्याप्त संख्या देकर सत्ता पर एक प्रभावी अंकुश रखने के लिए समर्थ विपक्ष भी बनाया। जनता को प्रायः अधिकाशतः अनपढ़, अंगूठा छाप तक कहा जाता रहा है, उसी जनता ने इस चुनावी परिणाम से यह सिद्ध कर दिया कि परिस्थितियों के अनुसार देश हित में संतुलित निर्णय लेने की उसमें पर्याप्त क्षमता है, जो वह लेती है। इसलिए वर्तमान परिणाम को स्वीकार कर किसी भी पक्ष को हार या जीत से परे रहना होगा। देश हित में सत्ता की गाड़ी के दोनों पहिया बनकर रचनात्मक विपक्ष बनकर देश को आगे चलाने का महान दायित्व जनता ने राजनैतिक दलों को दिया है। अब यह देखना होगा कि इन बुनियादी दायित्वों को दोनों पक्ष संकीर्ण राजनीतिक हितों से परे रहकर देशहित में किस प्रकार कार्य करते हैं?

शेयर बाजार पर दोहरा विपरीत प्रभाव

एग्जिट पोल ने 1 तारीख को चुनावी परिणाम के जो अनुमान दिये थे, वे किसी भी तरह से जमीनी स्तर पर व्यवहारिक नहीं लग रहे थे। इस कारण शेयर बाजार में 2621 अंको का उछाल आया। परन्तु चुनाव परिणाम के दिन जैसे-जैसे परिणाम आते गये शेयर सूचकांक में तेजी से गिरावट होकर 6200 से ज्यादा अंको से सेंसेक्स लुढ़क गया। एक अनुमान के अनुसार एक झटके में लगभग 36 लाख करोड़ रूपये का नुकसान निवेशकों को हुआ। भाजपा को बहुमत से 32 सीटे कम आने का मतलब प्रत्येक सीट ने 1 लाख करोड़ का नुकसान कराया। पिछले सवा दो साल में शेयर बाजार में आई यह सबसे बड़ी गिरावट है। क्या इसकी जिम्मेदारी कोई लेगा? इस चुनाव ने राजनीति में साइड लाइन किये जाने वाले नीतीश कुमार तथा साइडलाइन हो चुके चंद्रबाबू नायडू दोनों ही ''तुरूप का इक्का'' सिद्ध होने जा रहे हैं। 'आत्मनिर्भर भारत' का नारा देने वाली भाजपा स्वयं 'आत्मनिर्भर' नहीं रह गई और सत्ता के लिए उसे अब दूसरे सहयोगियों के ऊपर 'निर्भर' रहना पड़ रहा है। यह इस परिणाम की एक दुखद स्थिति रही है।

तालाब संरक्षित करने एक साथ उठे हाथ, कुछ ही घंटे में निखरा देवी सागर तालाब घाट का सौंदर्य

नगर पालिका धार के आव्हान पर ,श्रमदान के बाद ली जल संरक्षण की शपथ

धार। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत रविवार को शहर के प्राचीन देवी सागर तालाब के घाटों को संवारने के लिए नगर पालिका धार द्वारा जन सहभागिता से श्रमदान किया गया। दो घंटे सभी ने बढ़-चढक़र श्रमदान किया। पूरे घाट पर पसरा कचरा, पूजन सामग्री, पॉलीथीन और फोटो इत्यादी सामग्री को घाट से साफ किया गया। इस पावन जल संरक्षण और संवर्धन कार्य में नगर पालिका धार के अधिकारी-कर्मचारियों के साथ नागरिकों ने भी श्रमदान कर पसीना बहाया, ताकि हमारे जलस्त्रोत बारिश से पहले साफ और स्वच्छ हो सके। शहर की आस्था का केंद्र प्राचीन गढक़ालिका माता मंदिर स्थित देवी सागर तालाब हर साल बारिश में लबालब भर जाता है। गर्मी में भी यहां पानी रहता है। इस बार भी तालाब में जलस्तर बना हुआ है। हालांकि पानी घाटों से दूर हो चुका है। ऐसे में घाटों पर पसरा कचरा, सामग्री, पूजन सामग्री, फोटो, मूर्तियां, गाद, फूल-पत्तियों को हटाने के लिए सभी ने एक साथ आगे आकर हाथ बढ़ाए और श्रमदान कर खूब पसीना बहाया। इसका नतीजा था कि घाट कुछ ही देर में साफ-सुथरे नजर आने लगे। इसके बाद स्वच्छता और जल संरक्षण की शपथ भी ली गई।

तालाबों का अपना महत्व ...

तालाबों का अपना महत्व होता है। बारिश के पानी को सहेजने की इनमें क्षमता होती है। इससे आसपास के एरिया में भी वॉटर लेवल बना रहता है। तालाबों को होना काफी जरूरी है। आने वाले समय में पीने के पानी का संकट न हो इसलिए तालाबों को संरक्षित और सुरक्षित रखना काफी जरूरी है।

विकास डावर, सीएमओ, नपा धार

भोजकालीन देवी सागर तालाब महत्वपूर्ण तालाबों में से एक ... .

राजा भोज नगरी धार साढ़े बारह तालाबों की नगरी कही जाती है। इनमें भोजकालीन देवी सागर तालाब भी एक है। यह इन साढ़े बारह तालाबों में से एक है। आस्था को लेकर यह भी महत्वपूर्ण है। इसलिए हम सबकी जिम्मेदारी है कि इसे साफ और स्वच्छ रखें। जल गंगा संवर्धन अभियान हमें प्रेरणा देता है कि जल संरक्षण की दिशा में हमें आगे आकर काम करना चाहिए।

राजेश शर्मा, ब्रांड एंबेसडर, स्वच्छ सर्वेक्षण अभियान, नपा, धार

जल संरक्षण जरूरी

-भविष्य की चुनौतियों को देखते हुए जल संरक्षण काफी जरूरी है। इस दिशा में अभी से काम करने की आवश्यकता है। जरूरी है कि समाज में भी जागरूकता आए, जिससे जल संरक्षण को लेकर हर वर्ग जिम्मेदार हो और इस दिशा में खुद आगे आकर काम करें।

संजय मराठा, इंजीनियर, धार

करुणा और संवेदना है तो नदी का अस्तित्व कभी खत्म नहीं हो सकता

जल गंगा अभियान में नदियों के उद्गम पर पहुंच रहे ग्रामीण विकास मंत्री: प्रहलाद पटेल

रायसेन। नदियां हमारी सभ्यता का प्रतीक हैं, इनका संरक्षण हम सभी का कर्तव्य है और अगर करुणा और संवेदना आपके अंदर है तो यकीन मानिए नदी का अस्तित्व कभी खत्म नहीं हो सकता। यह बात प्रदेश के पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल ने इस प्रतिनिधि से चर्चा में कही। वे इन दिनों मध्यप्रदेश में चल रहे जल गंगा अभियान में नदियों के उद्गम स्थलों पर पहुंच रहे हैं। कठिन रास्ते ऊंचे पहाड़ पार करके नदियों के उद्गम स्थल तक जा रहे मंत्री श्री पटेल लोगों में जागरूकता लाने के लिए उनसे संवाद भी कर रहे हैं। वे बताते हैं कि जब भी आप अच्छी नियत लेकर कार्य करते हैं तो प्रकृति भी आपका सहयोग करती है।उन्होंने बताया जलगंगाअभियान में एक दिन पहले मैं नदियों के 4 उद्गम स्थलों के लक्ष्य को लेकर चला था लेकिन संयोगवश सियरमऊ में बेबस नदी का उद्गम मिला जिससे यह संख्या 5 हो गई। शनिवार को उन्होंने अभियान में रायसेन जिले के ग्राम अमरावद खुर्द से निकलने वाली रीछन नदी (पलकमती) के उद्गम स्थल पर पहुंचकर जनसंवाद किया। उन्होंने बताया कि वे एक साल बाद फिर इन सभी स्थानों पर पहुंचेंगे।

उद्गम से नदियां पुनर्जीवित होंगी

ग्राम अमरावद में ग्रामीणों से जनसंवाद करते हुए मंत्री प्रहलाद पटेल ने कहा कि जिस जल से हमारी

पीढ़ियां सम्पन्न हुई हैं, उद्गम के उस स्त्रोत को सुरक्षित रखना हमारा नैतिक कर्तव्य है। प्रदेश में जल स्त्रोतों के संरक्षण, नदियों को उद्गम से पुर्नजीवित करने तथा उनके अविरल प्रवाह के लिए जल गंगा संवर्धन अभियान शुरू किया गया है। उन्होंने कहा कि जल स्त्रोतों के पुर्नजीवन एवं जल संरक्षण के लिए सभी को एकजुट होकर प्रयास करना होगा। जीवन के लिए पानी जरूरी है और पानी के लिए वृक्ष जरूरी है।

इसलिए सभी वृक्ष जरूर लगाएं। सभी को जल स्त्रोतों को संरक्षित एवं संवर्धन करने का कार्य करना चाहिए जिससे कि हमारा जीवन भी सुरक्षित रहेगा और पशु-पक्षी भी सुरक्षित रहेंगे। हम दिन-रात जिस प्रकार से प्रकृति का दोहन कर रहे हैं, यह हम सबके लिए खतरनाक है। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि वृक्ष और मनुष्य एक दूसरे के पूरक हैं। वृक्षों के बिना मनुष्य का जीवन संभव नहीं है। वृक्ष हमें ऑक्सीजन देते हैं। उन्होंने कहा कि जल स्त्रोतों के पास कौन से पौधे लगाए जाएं, जो जल के स्त्रोत को प्रवाहमान बनाए रख सकें, इसके लिए हमें उन पौधों की भी जानकारी होनी चाहिए। ऐसी सूची बनाकर नागरिकों तक पहुंचाएं, जिससे उन्हें पता चल सके। यह भू-जल स्तर वृद्धि में सहायक सिद्ध होगा। मंत्री श्री पटेल ने जानकारी देते हुए कहा कि जल स्त्रोतों के पास बहेड़ा, हर, आम, महूआ, नीम, खिन्नी, सेमर, बांस, बेल, केत आदि प्रकार के पेड़ लगाने चाहिए। उन्होंने सभी को जल स्त्रोतों के पुर्नजीवन तथा जल संरक्षण करने का संकल्प भी दिलाया।

देश के प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी के तीसरी बार शपथ लेने पर शहर के राजवाड़ा में जश्न मनाया

धार। आज 9 जून को देश के प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी के तीसरी बार शपथ लेने पर धार शहर के राजवाड़ा में भाजपाइयों ने जश्न मनाया। भाजपा कार्यकर्ताओं में मोदी के तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने पर खासा उत्साह था. सभी कार्यकर्ता केंद्र में एनडीए की सरकार बनने पर एक दूसरे को बधाई देकर जश्न मना रहे थे. भाजपा कार्यकर्ता पार्टी का झंडा लेकर नारेबाजी कर जश्न मना रहे थे।

नरेंद्र मोदी को जापान से श्री थेरो ने दी शुभकामनाएं

भोपाल। श्रीलंका महाबोधि सोसायटी के प्रमुख और लंकाजी टेंपल जापान के मुख्य संघ नायक पूज्य वेनेगला उपत्तिस नायक थेरो ने जापान से एक बधाई संदेश लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ले रहे नरेंद्र मोदी के लिए भेजा है। उन्होंने अपने संदेश में कहा है कि आप तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री बन रहे हैं ये सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई है। उन्होंने अपनी खुशी का कारण बताते हुए कहा कि मेरी और आपकी पहचान तब हुई जब आप गुजरात के मुख्यमंत्री होते थे। उन्होंने आगे कहा कि तब से लेकर अब तक आप जब भी श्रीलंका आए हैं हमारे मंदिर आकर आशीर्वाद जरूर लिया है। उन्होंने आगे कहा कि यह बधाई संदेश मैं आपको जापान के लंकाजी टेंपल से आशीर्वाद के रूप में भेज रहा हूं और आपके लिए हम प्रार्थना करते हैं कि भारत और विश्व के साथ साथ विशेषकर श्रीलंका की जनता के लिए आप हमेशा चिंता करें। उन्होंने कहा कि आप विश्व में भारत का झंडा सदैव ऊंचा रखें उसके लिए हम भगवान बुद्ध से प्रार्थना करते हैं।

इनरव्हील क्लब ने पौध-रोपण कर पर्यावरण के प्रति गंभीरता दिखाई

नर्मदापुरम। दृष्टिबाधित सहयोग संस्था संस्था में, जिला अध्यक्ष बीना शाहजी की उपस्थिति में पौधरोपण किया गया यह जानकारी इनरव्हील क्लब अध्यक्ष वंदना समैया ने देते हुए बताया कि पौधरोपण करना पर्यावरण के प्रति जागरूकता दर्शाता है। साथ ही अपने द्वारा रोपे गए पौधे को पुष्पित और पल्लवित होता हुआ देखकर, मन में संतोष और सकारात्मक आती है। श्रीमती समैया ने बताया कि जन्म से लेकर मृत्यु तक वृक्ष हमारे लिए जीवन दायक है अतः सभी को पौध-रोपण कर अपना फर्ज निभाना चाहिए। इस अवसर पर इनरव्हील क्लब की सभी सदस्यों मैं शपथ ली कि पर्यावरण के प्रति

अपनी जागरूकता का बहन करेंगे और सभी को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करेंगे। मंडल अध्यक्ष बीना शाह, अध्यक्ष वंदना समैया, सचिव नीता जैन , आई एस ओ अंजू गुप्ता, उपाध्यक्ष ऋचु जैन,, एडिटर अंशु अग्रवाल, कोषाध्यक्ष संगीता गुप्ता, सुनीता अग्रवाल, नीरजा फौजदार, डॉक्टर ममता सिंह चौहान, सीमा गुप्ता, निधि जैन, तृप्ति श्रीवास्तव, मऊ चौधरी, स्वाति जैन, कामिनी गिल्ला, प्रीति मालवीय, मृदुला जैन, अर्चना सिंघई, डॉक्टर अनुपमा सेठा, विजेता दुबे ने पर्यावरण संरक्षण की शपथ ली इस मौके पर सहयोग संस्था संचालिका जूही चटर्जी ने इनरव्हील सदस्यों का का आभार माना।

मुख्य नगरपालिका अधिकारी अतिक्रमण हटाने वाले के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराएं : मधुकर चतुर्वेदी

नर्मदापुरम- संजीव डे राय

सत्रह मई को अतिक्रमण हटाने के नाम पर तोड़े गए पथ विक्रेताओं के हाथ ठेले तोड़ने की शिकायत पर मुख्य नगरपालिका अधिकारी हेमेश्वरी पटले द्वारा कार्यालय कलेक्टर शहरी विकास को दिए जवाब में स्पष्टीकरण पत्र को लेकर नगर के बुद्धिजीवी ही नहीं नागरिक तक हतप्रद ही नहीं उनकी नैतिक जिम्मेदारी पर सवाल उठा रहे। सेवा निवृत्त वन अधिकारी मधुकर चतुर्वेदी कहते हैं मुख्य नगरपालिका अधिकारी बताएं यदि संबंधित मामले में जैसा कि उन्होंने कार्यालय पत्र क्रमांक 849 /नपा/रा शा/2024 दिनांक 29/5/24 में लिखा कि 17/5/24 को निकाय द्वारा अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई नहीं की गई। समझाइश देकर अतिक्रमण हटाया जाता है। नगरपालिका द्वारा बुल्डोजर/ जेसीबी से किसी भी गुमठी/ ठेले को तोड़ने के निर्देश नहीं दिए जाते। यह पत्र के जरिए स्पष्ट होता है कि मुख्य नगरपालिका अधिकारी मामले में सही कह रही हैं। तो वो पथ विक्रेता संघ अध्यक्ष द्वारा की गई शिकायत की जांच कर अतिक्रमण हटाने को लेकर संबंधित दैनिक वेतन भोगी अतिक्रमण दल प्रभारी सुनील राजपूत, उसके साथ ही अतिक्रमण हटाने उपयोग की गई जेसीबी मशीन, उसके चालक और मालिक और छह कर्मचारियों के विरुद्ध कोतवाली में एफआईआर दर्ज कराएं। एफआईआर दर्ज कराने पर ही यहां मुख्य नगरपालिका अधिकारी पत्र में लिख रही बात सच साबित हो पायेंगी..! मुख्य नगरपालिका अधिकारी के इस पत्र को लेकर अब बाजार में चर्चा का दौर गर्म हो रहा। क्योंकि अतिक्रमण तो यहां हटाया गया है, फिर पथ विक्रेता के तोड़े गए ठेले नगरपालिका से ही उन्होंने कर्ज लेकर बनवाएं है जिन्हें सुनील राजपूत सहित अन्य पांच छह कर्मचारियों ने जेसीबी मशीन से तोड़े हैं।

प्राचीन बावड़ी वाले मंदिर से निकाली जल गंगा संवर्धन अभियान कलश यात्रा, काली मंदिर में विर्सजित हुई

सुबह सवेरे सोहागपुर। जल गंगा संवर्धन अभियान को लेकर सोहागपुर नगर पंचायत परिषद विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करके जल ही जीवन है के प्रति नागरिकों की सहभागिता के प्रति जागरूक कर रही है। इसी तारतम्य में आज प्राचीन बावड़ी वाले मंदिर परिसर से कलश यात्रा का आयोजन किया गया । कलश यात्रा बावड़ी वाले मंदिर से प्रारंभ होकर , मुख्य बाजार,कमानिया गेट,सरस्वती पुस्तक भंडार के सामने से होकर काली मंदिर काली मंदिर परिसर में समापन किया गया । इस कलश यात्रा में नगर परिषद अध्यक्ष लता यशवंत पटैल , अध्यक्ष प्रतिनिधि यशवंत पटेल, पार्षद रवि शंकर उइके , पार्षद आशीष वश्वकर्मा,संजीव शुक्ला, संध्या सूर्यवंशी, आर जी चौबे उपयंत्री, राजस्व निरीक्षक संजय परसाई, एच एल परते, श्रीमती बरखा ठाकुर, श्रीमती प्रीति परधी खेल विभाग की

चंदा दुबे के अलावा , शिक्षक एवं नगर पंचायत परिषद के कर्मचारी शामिल हुए । इसी क्रम शाम 4 बजे नगर पंचायत परिषद के सभागार में जल संरक्षण विषय पर निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में सी एम राइस विद्यालय, मित्र कन्या शाला, सेमरिटन विद्यालय , शासकीय कन्या शाला, सरस्वती शाला, सन फ्लावर शाला, शासकीय आई टी आई के कुल 31 प्रतिभागियों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया। इस प्रतियोगिता में अदिशा ठाकुर, चारुलता यादव,महक सराठे,अंश रघुवंशी,यशस्वी तोमर,कनिका गाइन,मोहित कोरी,सुमित कुशवाहा, डॉली पठारिया,राघवेंद्र गिरी यश गिरी, मोहिनी कहार, पूर्वी मालवीय,दिव्या मालवीय,तनीषा मालवीय, नावेद खान, हर्ष परमार सृष्टि आरसे, राधिका परते, रोशनी शर्मा,आस्था नागवंशी ने चित्रकला प्रतियोगिता में एवं सत्यजीत मालवीय,अंशिका रघुवंशी,पावनी कहार, सोनू कोरी,उमाशंकर कोरी,अंकित बामने,आदर्श तिवारी, मुस्कान पटेल,राधिका ठाकुर, कामिनी अहिरवार ने भाग लिया।

सत्ता का सर्कस

दिनेश गुप्ता

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

बदली हुई तस्वीर में भाजपा भी बदली-बदली सी

2019 में भारतीय जनता पार्टी नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के जो सदस्य संसदीय दल की बैठक में मौजूद थे, उनमें उद्धव ठाकरे और प्रकाश सिंह बादल इस बार एनडीए का हिस्सा नहीं हैं। प्रकाश सिंह बादल का पिछले साल निधन हो गया है। पंजाब में अकाली दल का नेतृत्व उनके पुत्र सुखबीर सिंह बादल कर रहे हैं। ठाकरे और बादल से भाजपा की जिन कारणों से दूरी बनी वह किसी से छुपे हुए नहीं हैं। अकाली दल 2020 में सरकार की किसान विरोधी नीतियों के कारण अपने आपको एनडीए से अलग कर लिया था। पंजाब में भाजपा,अकाली दल से समझौता कर चुनाव लड़ती रही थी। 1996 में सिख-हिंदू एकता के नाम पर अकाली दल ने बिना शर्त समर्थन दिया था। 2022 के विधानसभा चुनाव में शिरोमणि अकाली दल और भाजपा अलग-अलग चुनाव लड़े थे। शिरोमणि अकाली दल को केवल तीन विधानसभा सीटों पर जीत हासिल हुई थी। उसे कुल 18.38 प्रतिशत वोट मिले थे। जबकि भाजपा के वोट प्रतिशत में मामूली बदलाव आया था। भाजपा को 6.6 प्रतिशत वोट मिले। शिरोमणि अकाली दल ने बसपा से मिलकर चुनाव लड़ा था और भाजपा ने पंजाब लोक कांग्रेस और शिरोमणि अकाली दल (संयुक्त) के साथ मिलकर चुनाव लड़ा था। केवल दो सीटें ही मिली थीं। शिरोमणि अकाली दल और भाजपा के बीच जो गठबंधन टूटा वह 2024 में फिर नहीं बन पाया। राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दों पर असहमति के अलावा, अकाली नेतृत्व भाजपा की 'क्षेत्रीय ताकतों को नष्ट करने वाली' छवि को लेकर भी आशंकित रही है। कई अकाली नेताओं का मानना रहा है कि भाजपा पार्टी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के लिए 400 सीटों के अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए उनकी पार्टी और उसके वोट आधार का सहारा लेना चाहती है। अकाली को डर यह भी था कि अगर लोकसभा की कवायद सफल रही तो भाजपा 2027 के चुनाव के लिए अधिक सीटों की मांग करेगी। इस कारण समझौता नहीं किया। महाराष्ट्र में शिवसेना और बिहार नीतीश कुमार की राजनीति का उदाहरण अकाली दल के सामने था।

पंजाब में भाजपा तीसरी बड़ी पार्टी बनी

पंजाब में इस बार भाजपा को एक भी सीट पर सफलता नहीं मिली है। लेकिन 18.56 प्रतिशत वोट शेयर हासिल कर क्षेत्रीय पार्टी शिरोमणि अकाली दल से भी बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। ये पहला चुनाव है जब दोनों पार्टियां अलग-अलग लोकसभा चुनाव लड़ी हैं। वहीं, कांग्रेस पार्टी ने अपने इंडिया गठबंधन की साथी आम आदमी पार्टी से 0.28 प्रतिशत अधिक वोट शेयर हासिल किया। कांग्रेस 7 तो आम आदमी पार्टी 3 सीटें जीत पाई। अकाली दल ने इस चुनाव में 13.42 प्रतिशत वोट हासिल किए हैं। कुल 18 लाख 8 हजार 837 वोट ही मिले हैं। पार्टी सिर्फ बठिंडा सीट पर ही जीत हासिल कर सकी है। कुल वोटों में से 20 प्रतिशत वोट अकाली दल को इसी सीट से मिले हैं। दूसरी तरफ भाजपा, जो प्रदेश में एक भी सीट नहीं जीत पाई, को 18.56 प्रतिशत वोट मिले हैं। उसे कुल 25 लाख 877 वोट मिले। पार्टी के चार उम्मीदवारों की जमानत जब्त हुई। पंजाब में भाजपा का वोट शेयर लगातार बढ़ रहा है। 2019 के लोकसभा चुनाव में 9.63 प्रतिशत और 2022 के विधानसभा चुनाव में 6.60 प्रतिशत वोट शेयर था। इस बार ये बढ़कर 18.56 प्रतिशत पहुंच गया है। ऐसे में पार्टी 2027 के विधानसभा के लिए एक मजबूत ताकत बनकर उभरने जा रही है।

कैसी बदली एनडीए और भाजपा की तस्वीर

तीसरी बार नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने के लिए पुरानी संसद भवन के संविधान सभा गृह में जो मंच बनाया गया था,उस पर बांयी और पहली कुर्सी पर चंद्रबाबू नायडू और दूसरी कुर्सी पर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बैठे थे। उसके बाद महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री और शिवसेना नेता एकनाथ शिंदे बैठे थे। इसके बाद चिराग पासवान, जीतन राम मांझी और अनुप्रिय पटेल की कुर्सी थीं। दांयी और पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा बैठे थे।

इसके बाद राजनाथ सिंह,अमित शाह,अजित पवार, कुमार स्वामी और पवन कल्याण की कुर्सी थी। 2019 में जब नरेन्द्र मोदी दूसरी बार प्रधानमंत्री बनने जा रहे थे तब उनके बायीं और पार्टी के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी बैठे। उसके बाद शिवसेना के तत्कालीन प्रमुख उद्धव ठाकरे थे। उनके बगल में नितिन गडकरी भी मंच पर मौजूद थे। दांयी और पार्टी के तत्कालीन अध्यक्ष अमित शाह के बगल में प्रकाश सिंह बादल और उसके बाद राजनाथ सिंह बैठे थे। नीतीश कुमार और रामविलास पासवान की कुर्सी इसके बाद लगी थी। उस वक्त मंच पर सुषमा स्वराज भी मौजूद थीं। इस बार मंच पर भाजपा का कोई पांचवें या अन्य किसी नंबर का नेता मौजूद नहीं था। भाजपा की सत्ता और संगठन में अमित शाह की स्थिति नंबर दो की है। पार्टी अध्यक्ष के नाते जेपी नड्डा को तीसरे नंबर पर रखा जा सकता है। राजनाथ सिंह की स्थिति ऐसे में चौथे नंबर के नेता होती है। जबकि पिछली बार कुल बारह कुर्सी लगी थीं। इस बार तेरह कुर्सी लगी हैं। इसकी वजह सिर्फ यही है कि इस बार गठबंधन दल के सदस्यों को सम्मान और सामंजस्य के बिना सरकार नहीं चलाई जा सकती। गठबंधन दलों की हिस्सेदारी भी बढ़ी है।

महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव की चिंता

उद्धव ठाकरे 2019 ने भाजपा से अपना नाता 2019 में महाराष्ट्र में हुए विधानसभा चुनाव के बाद ही तोड़ दिया था। उद्धव ठाकरे की पार्टी (अविभाजित शिवसेना) ने भाजपा के साथ मिलकर चुनाव लड़ा था। गठबंधन को जीत मिली। लेकिन, मुख्यमंत्री पद को लेकर बात नहीं बन पाई। आखिरकार उद्धव ठाकरे ने भाजपा के साथ गठबंधन तोड़ दिया। फिर ठाकरे ने कांग्रेस और शरद पवार की पार्टी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के साथ मिलकर महाविकास अघाड़ी की सरकार बनाई। उद्धव ठाकरे मुख्यमंत्री बन गए। देश की राजधानी में शिवसेना और कांग्रेस का साथ आना बड़ी राजनीतिक घटना थी। विचारधारा के स्तर पर भी कोई समानता नहीं है। गठबंधन ठीक चल रहा था। इस दौरान अजित पवार ने पलटी मारी। लेकिन, शरद पवार अपने भतीजे को वापस महाविकास अघाड़ी में लेकर आए। दो साल बाद 2022 में उद्धव ठाकरे के करीबी एकनाथ शिंदे ने 33 विधायकों के साथ बगावत कर दी। इससे सरकार अल्पमत में आई। उद्धव ठाकरे ने फ्लोर टेस्ट से पहले ही इस्तीफा दे दिया। बाद में शिंदे ने भाजपा के साथ गठबंधन कर सरकार बना ली। चुनाव आयोग ने एकनाथ शिंदे की शिवसेना को वैधानिक मानते हुए पार्टी का चुनाव चिन्ह भी दे दिया। महाराष्ट्र में सितंबर में विधानसभा के चुनाव होना है। महाराष्ट्र की कुल 48 लोकसभा सीटों में बीजेपी के अगुवाई वाले महायुति को 17 और कांग्रेस की अगुवाई वाले महाविकास आघाड़ी को 30 सीटें मिली हैं। एक सीट पर कांग्रेस के बागी नेता विशाल पाटिल को जीत मिली है। पाटिल ने जीत के बाद कांग्रेस नीत इंडिया गठबंधन को समर्थन दिया है। भाजपा ने महाराष्ट्र में सहयोगियों के साथ 2019 की तरह प्रदर्शन की उम्मीद बांधी थी। तब पार्टी को 41 सीटें मिली थीं। ऐसे में एनडीए को अकेले महाराष्ट्र से 24 सीटें कम मिली है। महाराष्ट्र में भाजपा और उसके सहयोगी दल इंडिया गठबंधन के नैरेटिव की काट नहीं ढूंढ पाए। संविधान बदलने का मुद्दा नीचे तक गया। इसके साथ मराठा आंदोलन, किसानों के साथ प्याज उत्पादकों की नाराजगी भाजपा नीत महायुति भारी पड़ी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चुनाव प्रचार में महाराष्ट्र को काफी समय दिया था। उन्होंने 17 सभाएं की थीं। मुंबई में एक रोड शो भी किया था।

महाराष्ट्र की 48 लोकसभा सीटों में 26 सीटों पर मराठा समुदाय के उम्मीदवार जीते हैं। इस बार के चुनाव में नौ ओबीसी कैंडिडेट जीत हासिल कर पाए हैं। छह प्रत्याशी अनुसूचित जाति और चार अनुसूचित जनजाति से जीत हैं। सामान्य वर्ग में आने वाले तीन उम्मीदवार सांसद बने हैं। लोकसभा चुनावों में कांग्रेस को 13 सीटें मिली हैं। भाजपा और एकनाथ शिंदे की अगुवाई वाली शिवसेना को क्रमशः नौ और सात सीटें मिली हैं। एनसीपी (शरद गुट) ने आठ सीटें और अजित पवार को एक सीट मिली हैं। एक सीट निर्दलीय को मिली है। राज्य में भाजपा के बड़े चेहरे भी हारे हैं। इनमें पंकजा मुंडे, नवनीत राणा, उज्जवल निकम के नाम प्रमुख हैं। इसके अलावा मोदी कैबिनेट में मंत्री रावसाहेब दानवे और राज्य मंत्री भारती पवार भी हार गए।

पैरों में नीतिश और संविधान को नमन

एनडीए की संसदीय दल की बैठक के दो वीडियो सबसे ज्यादा वायरल हो रहे हैं। एक वीडियो नीतीश कुमार का है। बिहार के मुख्यमंत्री प्रस्ताव का समर्थन करने के बाद जब वापस अपनी सीट पर लौट रहे थे, तब वे प्रधानमंत्री को बधाई देने रुके और उनके पैरों को छूने झुक गए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनके हाथ को बीच में ही रोक लिया। उन्होंने जिद की तो प्रधानमंत्री ने पैर छूने से मना कर दिया। दूसरा वायरल वीडियो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का है। इस वीडियो में मोदी संविधान को अपने माथे से लगा रहे हैं। लोकसभा के इस चुनाव में संविधान संशोधन के मुद्दे ने इंडिया गठबंधन में नई जान फूंक दी है। इंडिया गठबंधन ने अपने पूरे चुनावी अभियान में भाजपा के चार सौ पार के नारे को संविधान संशोधन की मंशा से जोड़कर वोटर के सामने रखा। विपक्ष का प्रचार यह भी रहा कि भाजपा को चार सौ सीटें मिलीं तो वह संविधान में संशोधन कर अनुसूचित जाति,जनजाति और पिछड़ा वर्ग का आरक्षण छिन लेगी। चुनाव के बीच में भाजपा इस मुद्दे का अंडर करंट जान चुकी थी,इसी कारण जवाबी हमले में धर्म आधारित आरक्षण को उसने मुद्दा बनाया। हिंदी पट्टी की कई सीटों पर उसे इसका लाभ मिला। भाजपा तीसरी बार अपने बूते पर सरकार में नहीं है। संविधान संशोधन ने उसकी राह रोकी है। शायद यही कारण रहा कि प्रधानमंत्री ने मंच पर जाने से पहले संविधान को माथे से लगाया।

तमिलनाडु का जिक्र करना नहीं भूले मोदी

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन का नेता चुने जाने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ओडिशा से लेकर तमिलनाडु तक जिक्र अपने भाषण में किया। बैठक में जब ओडिशा का जिक्र आया तो जय-जय जगन्नाथ के स्वर सभागार में गूंजने लगे। कभी इस तरह की बैठकों में भाजपा नेता जय-जय श्री राम बोलते सुने जा सकते थे। श्री राम का मंदिर बनाने से जिस लाभ की उम्मीद भाजपा कर रही थी,वह उसे नहीं मिला। अयोध्या की लोकसभा सीट ही भाजपा हार गई। काशी जहां प्रधानमंत्री खुद उम्मीदवार थे,वहां जीत का अंतर घट गया। प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में तमिलनाडु का जिक्र करते हुए कहा कि वहां सीट जरूर नहीं मिली,लेकिन वोट जरूर बढ़ा। भाजपा चार सौ पार की जिस रणनीति पर काम कर रही थी,उसमें तमिलनाडु से भी सीट मिलने का आकलन था। तमिलनाडु में भी भाजपा ने काफी काम किया। सीटों के लिहाज से लोकसभा चुनाव के नतीजे सुखद नहीं रहे। भाजपा को यहां एक भी सीट नहीं मिल पाई है, लेकिन वोट शेयर के मामले में बीजेपी ने बढ़त जरूर दर्ज की है। इसका काफी श्रेय तमिलनाडु भाजपा के अध्यक्ष के. अन्नामलाई को जाता है। पुलिस सेवा में ह्यसिंघम के नाम से मशहूर रहे तेज-तर्रार पूर्व आईपीएस अधिकारी के. अन्नामलाई ने तमिलनाडु में भाजपा का जनाधार बढ़ाने कठिन काम अपने हाथों में लिया, जिसे राजनीतिक पंडित लगभग असंभव मानते थे। लेकिन अन्नामलाई के ग्रासरूट पर किये गए काम और 'मक्कल' पद यात्रा का प्रभाव लोकसभा चुनाव के परिणामों में देखने को मिला। तमिलनाडु में भाजपा का वोट शेयर 11.24 फीसदी तक पहुंच गया है, जो पिछले लोकसभा चुनाव में सिर्फ 3.6 प्रतिशत था।

मध्यप्रदेश कांग्रेस में असंतोष

हिंदी पट्टी में कांग्रेस का सबसे बुरा प्रदर्शन मध्यप्रदेश में रहा। कांग्रेस यहां लोकसभा की एक भी सीट नहीं जीत पाई। पिछले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को सिर्फ एक सीट छिंदवाड़ा की मिली थी। छिंदवाड़ा सीट को कांग्रेस की सबसे मजबूत सीट माना जाता था। पहले कमलनाथ अब उनके पुत्र नकुल नाथ इस सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। नकुल नाथ पिछली बार लगभग सैंतीस हजार वोटों से ही चुनाव जीत पाए थे। इस बार हार लंबी हुई। कमलनाथ ने मध्यप्रदेश में अपनी राजनीति गांधी परिवार के करीबी होने के आधार पर जमाई। 2018 में पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष बनने के बाद वे पहली मध्यप्रदेश की जमीनी राजनीति में सक्रिय दिखाई दिए। 2018 के विधानसभा चुनाव में पार्टी जीती तो मुख्यमंत्री बन गए। लेकिन,उनका रवैया वरिष्ठ और पुराने नेताओं के प्रति उपेक्षापूर्ण रहा। ज्योतिरादित्य सिंधिया तो कांग्रेस छोड़कर भाजपा में चले गए। कमलनाथ की सरकार भी गिरा दी। इसके बाद भी कमलनाथ का रवैया नहीं बदला। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष का पद भी उन्होंने नहीं छोड़ा विधानसभा चुनाव में पार्टी के हाथ से जब सत्ता में वापसी का मौका निकल गया तब कमलनाथ को पद से हटाया गया। उनके स्थान पर अध्यक्ष बनाए जीतू पटवारी जमीनी नेता नहीं हैं। उनका रवैया भी वरिष्ठ नेताओं से सहयोग लेने का नहीं रहा। वे राहुल गांधी के करीबी होने का वहम पाल कर हेलीकॉप्टर में घूमते रहे। सीट भी नहीं मिली। वोट भी घट गए। अब अजय सिंह और उनके समर्थक हमलावर हैं। अजय सिंह ने कहा कि जीतू पटवारी के कार्यकाल की उच्च स्तर पर समीक्षा होना चाहिए। अजय सिंह ने कमलनाथ को लेकर कहा कि उनके भाजपा में आने-जाने की खबरों से भी पार्टी को नुकसान हुआ है।

भोपाल में डीजीपी ने किया थानों का औचक निरीक्षण

● आधी-अधूरी विवेचना पर भड़के, फोरेंसिक टीम को लगाई फटकार

भोपाल (नप्र)। एमपी पुलिस के डीजीपी सुधीर सक्सेना शनिवार रात औचक निरीक्षण के लिए निकले। एमपी नगर थाने और जहांगीराबाद थाने का निरीक्षण करते हुए उन्होंने पेंडेंसी चालान व विवेचना को लेकर नाराजगी जाहिर की। उन्होंने दिशा-निर्देश दिए कि विवेचक लगातार विवेचना करें। इसी के साथ उन्होंने मर्ग जांच को लेकर हो रही लेटलतीफी पर उन्होंने फोरेंसिक टीम को भी जमकर फटकार लगाई। बताया जा रहा है कि इन दिनों एमपी नगर थाने में साफ-सफाई का काम चल रहा है और इसी के चलते काफी मात्रा में फाइलें

व अन्य सामान बाहर रखा है इसीलिए बाहर रखे सामान को नजरअंदाज करते हुए थाने के भीतर जा पहुंचे। थाने में मौजूद पुलिस अधिकारी व कर्मचारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। डीजीपी ने कम्प्यूटर पर डाली जाने वाली एफआईआर और परचों के बारे में जानकारी ली।

विवेचक कम्प्यूटर के काम स्वयं करें

ज्यादातर मामलों में कम्प्यूटर की जानकारी रखने वाले प्रधान आरक्षक स्तर के कर्मचारी ही कम्प्यूटर में परचे अपलोड करते रहे हैं। डीजीपी ने निर्देश दिए कि विवेचना करने वाले एसआई व एएसआई स्तर के विवेचक स्वयं कम्प्यूटर पर एफआईआर अथवा परचे अपलोड करें। इसके बाद उन्होंने चार-पांच गंभीर अपराधों की फाइलें बुलाकर उनके विवेचक से बातचीत की। उनसे उन मामलों की प्रोग्रेस जानी। पेंडेंसी चालन व पेंडेंसी मामलों को लेकर नाराजगी जताई।

भोपाल में समारोह में फायर करते आरक्षक का वीडियो

जालसाजी के आरोपी बिल्डर से हिरासत में की थी बदसलूकी, सस्पेंड भी हुआ

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार थाने में पदस्थ रहे आरक्षक उपेंद्र सिंह का एक वीडियो सामने आया है। इसमें एक कार्यक्रम में वह पिस्टल से फायरिंग करते दिखाई दे रहे हैं। उसके पीछे मौजूद एक अन्य व्यक्ति राइफल थामे हुए है। यह हथियार लीगल हैं अथवा अवैध हैं, इसकी जांच कराई जा रही है। पुलिस कमिश्नर ने वीडियो की

जांच के आदेश एसपी को दिए हैं। जांच के बाद आरक्षक पर कार्रवाई तय की जाएगी। आरक्षक उपेंद्र सिंह 3 महीने पहले तक थाना कोलार में पदस्थ रहा है। सैकड़ों लोगों से जालसाजी करने वाले सुनील टिबरेवाल को पुलिस ने हिरासत में लिया था। 3 फरवरी 2023 में टेबरीवाल के हिरासत में होने के दौरान उपेंद्र ने उससे बदसलूकी की थी।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

मोदी कैबिनेट में छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व कौन करेगा?

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए की सरकार में छत्तीसगढ़ से कौन मंत्री बनेगा, यह इन दिनों चर्चा का विषय बना हुआ है। वैसे तीन नाम सुर्ख़ियों में हैं, ये हैं रायपुर के सांसद बृजमोहन अग्रवाल, दुर्ग के विजय बघेल और राजनांदगांव के संतोष पांडे। मंत्री पद की दौड़ में तीनों के नाम चलने के पीछे कारण भी हैं। बृजमोहन अग्रवाल अब तक कोई चुनाव नहीं हारे हैं और आठ बार से विधायक हैं। वे छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक मतों से जीतने वाले सांसद भी हैं। इनका नाम देश में सर्वाधिक मतों से जीतने वाले टॉप 10 सांसदों में भी है। इनकी पहचान जमीनी नेता के साथ चुनावी मैनेजमेंट में भी है। संतोष पांडे ने इस बार राजनांदगांव से पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को हराया है और दूसरी बार के सांसद हैं। इसके अलावा उन्हें हिंदुत्ववादी चेहरे वाला नेता माना जाता है। विजय बघेल भी दूसरी बार के सांसद हैं और ओबीसी नेता हैं। 2023 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने भूपेश बघेल को कड़ी चुनौती दी थी। विजय बघेल 2023 के विधानसभा चुनाव में घोषणा समिति अध्यक्ष भी थे। विधानसभा चुनाव में भाजपा का घोषणा पत्र काफी असरकारक रहा था। मोदी कैबिनेट में अब तक छत्तीसगढ़ से एक राज्यमंत्री रहे हैं। वैसे अटल कैबिनेट में छत्तीसगढ़ से एक साथ तीन राज्यमंत्री भी रह चुके हैं। कहा जा रहा है कि ज्यादा संभावना छत्तीसगढ़ से राज्य मंत्री बनाए जाने की ही है। नरेंद्र मोदी ने अपने दो कार्यकाल में छत्तीसगढ़ से कैबिनेट में आदिवासी नेता को ही प्रतिनिधित्व दिया। इस कारण किसी आदिवासी सांसद को मंत्रिमंडल में प्रतिनिधित्व मिलने की भी संभावना जताई जा रही है। इस बार राज्य की चारों आदिवासी सीटों पर भाजपा ने जीत दर्ज की है।

अमर और मूणत मजबूत दावेदार ?

यह तो अब साफ़ हो गया है कि बृजमोहन अग्रवाल लोकसभा जाएंगे और विधानसभा से इस्तीफा देंगे, ऐसे में साय मंत्रिमंडल में एक और पद जल्द रिक्त हो जाएगा। मंत्रिमंडल में एक जगह पहले से खाली है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय अब दो विधायकों को मंत्री बना सकते हैं। लोकसभा चुनाव के परिणाम को देखकर लग रहा है कि अब नया प्रयोग शायद ही हो, ऐसे में किसी अनुभवी और पुराने विधायक को मंत्री बनाया जा सकता है। मंत्री के लिए अनुभवी नेताओं में अमर अग्रवाल, राजेश मूणत और अजय चंद्राकर का नाम चर्चा में है। साय मंत्रिमंडल में ओबीसी कोटे से छह मंत्री हैं। बिलासपुर संभाग से अरुण साव मंत्रिमडल में हैं। कुर्मी समाज से टंकराम वर्मा मंत्री हैं। बृजमोहन अग्रवाल के मंत्री पद छोड़ने के बाद अग्रवाल - जैन समाज का प्रतिनिधित्व नहीं रहेगा, साथ में रायपुर से भी कोई मंत्री नहीं होगा। अग्रवाल -जैन समाज को प्रतिनिधित्व देने की रणनीति के चलते मंत्री बनने की दौड़ में अमर अग्रवाल और राजेश मूणत को आगे बताया जा रहा है। दोनों रमन मंत्रिमंडल के सदस्य रह चुके हैं। लोकसभा चुनाव में सभी ट्राइबल सीटें भाजपा ने जीती है, इस कारण एक मंत्री पद किसी आदिवासी नेता को मिलने की अटकलें लगाई जा रही है। अभी मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय समेत तीन आदिवासी नेता कैबिनेट में हैं।

कांग्रेस की राजनीति में बढ़ेगा महंत का कद

माना जा रहा है कि कोरबा लोकसभा सीट में ज्योत्सना महंत की जीत से नेता प्रतिपक्ष और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता डॉ चरणदास महंत का कद पार्टी में बढ़ेगा। राज्य की 11 लोकसभा सीटों में कोरबा ही कांग्रेस जीत पाई। यहां से डॉ चरणदास महंत की पत्नी ज्योत्सना महंत दूसरी बार सांसद चुनी गईं हैं। ज्योत्सना महंत ने छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की इज्जत बचा ली। भूपेश बघेल का पूर्व मुख्यमंत्री वाला तमगा काम नहीं आया और वे लोकसभा चुनाव हार गए। पूर्व मंत्री ताम्रध्वज साहू,डॉ शिवकुमार डहरिया और कवासी लखमा भी अपना जादू दिखा नहीं पाए। बिलासपुर में देवेंद्र यादव का दम भी नहीं दिखा। कहा जा रहा है कि मध्यप्रदेश में कमलनाथ, दिग्विजय सिंह और कांतिलाल भूरिया जैसे नेता अपनी इज्जत नहीं बचा पाए, ऐसे में महंत ने अपने बलबूते छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की नाक बचा ली। महंत संयुक्त मध्यप्रदेश के जमाने से सांसद और मंत्री के साथ छत्तीसगढ़ कांग्रेस के दो बार अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

नहीं दिखा दुर्ग का दम

दुर्ग से निकलकर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल राजनांदगांव,भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सरोज पांडे कोरबा,विधायक देवेंद्र यादव बिलासपुर और पूर्व मंत्री ताम्रध्वज साहू महासमुंद लोकसभा सीट से चुनाव लड़े और चारों नेता संसद नहीं पहुँच सके। कहते हैं सरोज पांडे राज्यसभा सदस्य रहते पालक सांसद के तौर पर कोरबा में अपनी जमीन तैयार की थी, लेकिन मेहनत काम नहीं आई। सरोज पांडे को चुनाव जीताने के लिए भाजपा के दिग्गज नेता कोरबा में डेरा डाले रहे, पर उनकी मेहनत सफल नहीं रही। कहते हैं महासमुंद लोकसभा सीट में साढ़े छह लाख के करीब वोटर हैं और साहू वोटरों के दम पर ही भाजपा के चंदूलाल साहू और चुन्नीलाल साहू यहां से चुनाव जीते भी, पर ताम्रध्वज साहू गच्चा खा गए, जबकि ताम्रध्वज साहू समाज के अध्यक्ष भी रह चुके थे। कहा जा रहा है कि गृह मंत्री रहते बिरनपुर घटना से मुँह मोड़ना ताम्रध्वज साहू को भारी पड़ा और महासमुंद और गरियाबंद के प्रभारी मंत्री के रूप में रूखापन ने लोकसभा चुनाव में कांटे का काम किया। दुर्ग से बिलासपुर जाकर देवेंद्र यादव न तो एनएसयूआई और युवक कांग्रेस वाला जलवा दिखा सके और न ही यादव कार्ड अच्छे से खेल सके। भूपेश बघेल भी राजनांदगाँव में न पांच साल वाले मुखिया का रंग दिखा सके और न ओबीसी कार्ड का जलवा दिखा सके।

जायसवाल और देवांगन पर खतरे के बादल

चर्चा है कि कोरबा लोकसभा सीट से भाजपा की हार के बाद स्वास्थ्य मंत्री श्यामबिहारी जायसवाल और उद्योग मंत्री लखनलाल देवांगन पर खतरे के बादल मंडराने लगे हैं। देवांगन कोरबा से विधायक हैं और लोकसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशी को अच्छी खासी लीड मिली है, फिर भी सरोज पांडे की हार से उनकी राह कठिन मानी जा रही है, क्योंकि सरोज पांडे को कोरबा छोड़कर कहीं लीड नहीं मिली। कोरबा से लगे कटघोरा विधानसभा में भी वे पिछड़ गई। 2023 के विधानसभा चुनाव में श्यामबिहारी जायसवाल को मनेंद्रगढ़ विधानसभा में 48 हजार से अधिक वोट मिले थे। 2024 के लोकसभा में भाजपा प्रत्याशी को 42 हजार से कुछ ज्यादा वोट मिले। कहा जा रहा है छह हजार का गड्ढा श्यामबिहारी को कहीं भारी न पड़ जाय। माना जा रहा है कि अभी मंत्रियों को काम करे छह महीने भी नहीं हुए हैं, ऐसे में तत्काल कोई एक्शन की उम्मीद नहीं है,पर आने वाले समय में समीक्षा का आधार हो सकता है। इस कारण दोनों मंत्रियों को डेंजर जोन में माना जा रहा है।

लंबी पारी नहीं खेल पाए अभिजीत सिंह

2012 बैच के आईएएस अभिजीत सिंह कांकेर कलेक्टर के रूप में लंबी पारी नहीं खेल पाए। नारायणपुर में भी वे ज्यादा समय कलेक्टरी नहीं कर पाए थे। भाजपा की सरकार ने उन्हें जनवरी 2024 में प्रियंका शुक्ला की जगह कांकेर का कलेक्टर बनाया था। कहते हैं लोकसभा चुनाव में उनका मैनजमेंट ठीक नहीं रहने के कारण सरकार ने आचार संहिता खत्म होने के दूसरे दिन ही उन्हें कांकेर के कलेक्टर पद से हटाकर गृह विभाग का विशेष सचिव बना दिया। मजेदार बात है कि अभिजीत सिंह गृह विभाग के संयुक्त सचिव पद से कांकेर कलेक्टर बनाए गए थे। कांकेर कलेक्टरी से फिर पुराने विभाग में आ गए।

आईएएस अवर सचिव

आमतौर पर मंत्रालयीन सेवा या राज्य सेवा के अफसरों को मंत्रालय में अवर सचिव बनाया जाता है। अबकी बार 2021 बैच के आईएएस वासु जैन को मंत्रालय में अवर सचिव बनाया गया है, वह भी योजना और आर्थिक सांख्यिकी विभाग का। वासु जैन सारंगढ़ के एसडीएम थे। नए या प्रोबेशनर आईएएस को सामान्यतः एसडीएम, एडिशनल कलेक्टर या फिर किसी छोटे जिले में सीईओ जिला पंचायत बना दिया जाता है। अब वासु जैन को योजना और आर्थिक सांख्यिकी विभाग का अवर सचिव बनाए जाने पर कयासों का बाजार गर्म है। योजना और आर्थिक सांख्यिकी विभाग में कोई ख़ास काम होता नहीं है।